Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Rajput Jeevan Sandya.

राजपूत-जीवन-सन्ध्या

वंगभाषा के प्रसिद्ध लेखक

R. C. Dutt

मिस्टर आर० सी० दत्त-लिखित बँगला-पुस्तक का

हिन्दी-अनुवाद

अनुवादक

श्रीजनार्दन झा

Indian press.

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

१९२२

1922

द्वितीय संस्करण]

[मूल्य १)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE 1181-

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Printed and published by Apurva Krishna Bose,
at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Sri Pratap Singh
Public Library
Srinagar.

राजपूत-जीवन-सन्ध्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(329)

राजपूत-जीवन-सन्ध्या

पहला परिच्छेद

आखेट

"भुवःकम्पमिव जनयता चरणशब्देन कर्णाकृष्टज्यानाञ्च मदकलकुरर-कामिनी-कण्ठकूजितकलेन शरनिकरवर्षिणां, धनुषां निनादेन...... प्रचलितमिव तदारण्यमभवत्।"

कादम्बरी

१५७६ ई० के फागुन महीने की पहली तारीख़ को मेवाड़ प्रदेश के अन्तर्गत सूर्यमहल नामक प्रसिद्ध पहाड़ी क़िले में कोलाहल होते सुन पड़ा। यह क़िला एक ऊँचे पहाड़ के शिखर पर बना है। क़िले के चारों ओर वृक्षों से परिपूर्ण पहाड़ ही पहाड़ देख पड़ते हैं। प्रातःकाल के सूर्य की किरणों ने इन पहाड़ों को मानो सुनहरी रङ्ग में रँग दिया है। सुबह की सुहावनी ठण्डी हवा मन्द मन्द चल रही थी, जिसके स्पर्श से पर्वतस्थित वृक्षों की श्रेणी धीरे धीरे झूम रही थी और उससे मन को लुभानेवाला एक सुश्राव्य मर्मर शब्द निकल रहा था। पत्तों पर ओस के कण मोती की सी छटा दिखा रहे थे। वसन्तकालीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पक्षिगण डालों पर बैठे हुए मधुर गान गा रहे थे। ऐसे समय में बड़ी झनझनाहट के साथ क़िले का द्वार खुला। हाथ में भाला लिये हुए सौ घुड़सवार क़िले से निकले। ये अश्वारोही धीरे धीरे पहाड़ों पर चढ़ते-उतरते वहाँ जा पहुँचे जहाँ एक घना जङ्गल था। बड़े उत्साह से वे उस घोर जङ्गल के भीतर घुसे।

आज आखेट का प्रथम दिन है, अर्थात् वसन्त के प्रारम्भ में वार्षिक मृगया का पहला दिन आज ही है। आज ही के शिकार के फलाफल से साल भर के युद्ध के शुभाशुभ की गणना होगी। इसलिए सूर्यमहल क़िले के अधीश दुर्जयसिंह, सौ अश्वारोहियों के साथ, शिकार खेलने के लिए गढ़ से निकले हैं। मेवाड़ प्रदेश में यह प्रसिद्ध है कि युद्ध में या किसी सङ्कट में चन्दावत-कुल के सरदार सदा से अग्रगामी होते हैं। उस समय इस विख्यात वंश में दुर्जयसिंह से बढ़ कर वीर, धीर, साहसी, दुर्दमनीय और दृढ़-प्रतिज्ञ कोई नहीं था। उस समय उनकी उम्र तीस वर्ष से अधिक नहीं थी। वे क़द के लम्बे थे। शरीर उनका खूब बलिष्ठ और आँखें बहुत बड़ी बड़ी थीं। उनके शरीर का मांस-पिण्ड ऐसा पुष्ट और सुदृढ़ था जैसे लोहे का बना हो। दुर्जयसिंह के सहचर भी चन्दावत थे और सभी शूर-वीर थे।

दुर्जयसिंह के साथ वे सवार जङ्गल में घुसे। कितने ही बन-रखे पहले ही से इस जङ्गल में पशुओं के अनुसन्धान के लिए तैनात किये गये थे। एक एक कर सभी बन-रखे लौट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आये, पर किसी ने जङ्गली जानवर का कुछ पता न बताया। किन्तु इससे सवारों का उत्साह मन्द नहीं हुआ; वे वन में इधर उधर घुमने लगे। उस समय वह वन अपूर्व-शोभा धारण किये हुए था। सूर्य की किरणों के साथ मानो जङ्गली फूल, पौदे और तृण खेल रहे थे। कहीं ऐसा निविड़ वन है कि दिन में भी प्रकाश नहीं दिखाई देता, सर्वत्र अन्धकार ही अन्धकार छाया हुआ है। अश्वारोही वीरगण कभी पहाड़ के शिलाखण्डों के ऊपर, कभी झरनों के पास, और कभी झुरमुट के निकट पैरों की आहट बचा कर शिकार की खोज में धीरे धीरे घूमने लगे। वसन्तकाल के आरम्भ में पहाड़, पेड़ और खेत आदि की शोभा देखने ही योग्य होती है। वीरगण वसन्तकाल के नवीन उत्साह और वीरमद से मत्त होकर शिकार खेलने चले हैं। सभी उमङ्ग से भरे हैं, सभी आनन्द में निमग्न हैं। राजाओं के लिए आखेट से बढ़ कर उत्साहपूर्ण व्यवसाय और हुई क्या; और वसन्त के ऐसी सुन्दर सुहावनी आनन्दमय दूसरी ऋतु भी नहीं होती।

बड़ी देर तक वन के भीतर घूम-फिर कर वीरगण एक मैदान में पहुँचे। उस मैदान के सामने एक पहाड़ी क़िला वृक्षों से घिरा हुआ दिखाई दिया। दुर्जयसिंह ने मन्त्री को पुकार कर पूछा—क्या भूमियों* का क़िला इसी पहाड़ पर है?

मन्त्री—जी हाँ, ऐसा मज़बूत क़िला यदि इस जङ्गली भूमिया जाति के हाथ में न रह कर किसी वीर पुरुष के अधि-

*एक प्रकार के किसान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कार में होता तो महाराना को इस युद्ध के समय बड़ी सहायता मिलती ।

दुर्जयसिंह—भूमिया लोग युद्ध करना नहीं जानते किन्तु समय पड़ने पर शत्रुओं के हाथ से अपने क़िले की रक्षा करने में ख़ूब साहस दिखलाते हैं ।

मन्त्री—जी हाँ, यह ठीक है, किन्तु उन लोगों का हाथ हल चलाने में जैसा कुशल है वैसा बर्छी चलाने में नहीं ।

सभी लोग ठठा कर हँस उठे । उनमें से एक वीर ने कहा—भूमिया लोग क़िले की रक्षा की अपेक्षा भूमि की रक्षा करने में अधिक तत्पर रहा करते हैं । क़िलेदार कभी कभी अपने क़िले से बेदख़ल भी हो जाता है किन्तु भूमियों की ज़मीन पुश्त-दरपुश्त उनकी सन्तान के अधिकार में रहती है । न शत्रु उसे ले सकता है और न राजा ही उसे छीन सकते हैं ।

मन्त्री—"चूहे जब बिल में पैठते हैं तब उनका निकालना जैसा दुःसाध्य होता है वैसा ही भूमियों को क़िले के बाहर निकालना दुःसाध्य है ।" फिर भी सब सवार हँस उठे ।

ये सैनिक वीर बड़ी देर तक घूमते रहे । इन लोगों ने जङ्गल, पहाड़, गुफा आदि सभी गुप्त प्रकट स्थानों को एक एक कर छान डाला, पर कहीं भी शिकार का पता न लगा । पारसाल जिन स्थानों में जङ्गली सूअर देखे गये थे, उन सब जगहों को इन लोगों ने कई बार घूम घूम कर देखा, पर इस साल एक भी सूअर कहीं दिखाई नहीं दिया ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

योंही घूमते-फिरते दोपहर हो गया, किन्तु कहीं किसी जंगली पशु का पता न लगा । बन-रखे लोग घने अन्धकारमय जंगल के भीतर चक्कर लगा आये हैं पर किसी को एक भी वन्य पशु कहीं नहीं देख पड़ा। धूप बहुत कड़ी हो उठी । सवार लोग कपार का पसीना पोंछ कर परस्पर एक दूसरे की ओर देखने लगे । वे लोग आपस में कहने लगे—"क्या यह जंगल आज एकबारगी वराह-शून्य हो गया ? आज एक भी जंगली पशु कहीं दिखाई नहीं देता ! इस साल सूर्यमहल का कुछ अमङ्गल होनेवाला तो नहीं है ?" इस प्रकार भाँति भाँति की बातें होने लगीं। कुछ देर सोच कर दुर्जयसिंह ने कहा—"भाइयो, हम लोगों के घोड़े थक गये हैं और हम लोग भी बहुत परि-श्रान्त हो गये हैं । इस समय शिकार की खोज में वृथा समय गवाँना उचित नहीं । चलो, कुछ देर हम सुस्ता लें और घोड़ों को भी विश्राम ले लेने दें । फिर विस्तृत वन में यदि एक भी सूअर कहीं मिलेगा तो उसे दुर्जयसिंह बिना मारे न छोड़ेंगे नहीं तो आज से फिर कभी हाथ में बर्छी न लेंगे।" इस पर सहमत होकर सभी एक घने जंगल की ओर बढ़ चले ।

जिस जंगल की ओर ये लोग गये वह अत्यन्त रमणीय था । वृक्षों की श्रेणी पत्तों से इस तरह ढकी थी कि मध्याह्न-कालिक सूर्य की किरण तक उसके भीतर प्रवेश नहीं कर सकती थी । केवल कहीं कहीं पत्तों के छिद्र से वह सुवर्णरेखा की तरह धरती तक लटकी हुई सी देख पड़ती थी । जगह बहुत साफ़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी । वृक्षों की छाया में हरी घास ऐसी सुहावनी लगती थी जो देखते ही बन आवे । उस निविड़ वन में सर्वत्र सन्नाटा छाया था । दोपहर के समय वहाँ ऐसी शान्ति थी कि पेड़ों से दो एक सूखे पत्तों के गिरने के सिवा किसी तरह की अशान्ति का चिह्न कहीं कुछ दिखाई नहीं देता था । समीप ही एक झरना था जिससे पानी गिरने का सुन्दर मधुर शब्द कानों को सुख दे रहा था । कुछ देर तक वे अश्वारोहिगण स्थिर भाव से इस प्राकृतिक शोभा को देखते रहे । उन लोगों को ऐसा जान पड़ा जैसे प्रकृति यहाँ हरित वृक्षों के द्वारा घर बनाकर उसमें वनदेवी की पूजा कर रही हो ।

घोड़ों से उतर कर वीरगण उसी हरी घास पर बैठ गये । कुछ देर विश्राम करके उन लोगों ने झरने के जल से मुँह-हाथ धोया । भोजन के लिए फल-मूल का प्रबन्ध पहले ही से हो रहा था । अब वे लोग बड़ी प्रसन्नता से भोजन करने बैठे । पुरातन रीति के अनुसार क़िले के अधिपति महाराज दुर्जयसिंह ने अपने साथी वीरों को अपने थाल में से थोड़ा थोड़ा फल-मूल निकाल कर दिया । उन लोगों ने सादर उसे लिया . फिर परस्पर भाँति भाँति के वाग्विनोद होने लगे । इन लोगों का प्रेमालाप सुनकर मानों सारा वन प्रसन्न हो उठा । पूर्व-घटना के साथ साथ पूर्व-युद्ध की बात होने लगी । किस तरह ये लोग क़िले की दीवार को फाँद कर भीतर गये थे, किस तरह शत्रु-सेना का संहार किया था, और किस तरह राना से इन लोगों को धन्य-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाद मिला, ये सब बातें होने लगीं। इस दफ़े मेवाड़ प्रदेश के प्रबल शत्रु स्वयं दिल्लीश्वर आ रहे हैं। उनके साथ मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिए मारवाड़, अम्बर, बीकानेर और बूँदी के राजा भी आ रहे हैं। किन्तु जीत राना ही की होगी। यदि कहीं उनकी हार हुई तो चन्दावत (चन्देल) उसी युद्ध-भूमि में प्राण-विसर्जन करेंगे। वे रणभूमि से भागना नहीं जानते। चन्दावत वंश में आज तक किसी ने रणभूमि में पीठ नहीं दिखाई। दुर्जयसिंह की ऐसी वीरता-भरी बातें सुनकर सभी वीरों ने बड़े उत्साह और उल्लास से उनका अनुमोदन किया।

दुर्जयसिंह ने कहा—"अकबर शाह ने जब आठ वर्ष पहले चित्तौर को हस्तगत कर लिया था और राना उदयसिंह ने क़िला छोड़ दिया था, तब भी सालुम्बरापति साहीदास ने क़िला नहीं छोड़ा। चन्दावत-कुल के मुखिया साहीदास ने तब भी क़िले को अपने हाथ से जाने न दिया।" दुर्जयसिंह चारणदेव को सम्बोधन करके बोले—उस समय की सब बातें एक बार इन वीरगणों को सुना दो। चन्दावत-वंशियों ने किस तरह युद्ध किया था—यह हम भी एक बार सुनलें।

उस समय यह नियम था कि शिकार के दिन चारण भी साथ जाते थे। दुर्ग-पति की आज्ञा पाकर चारणदेव साहीदास के वीरत्व का वर्णन करने लगे। चित्तौर-विध्वंस के समय दुर्जयसिंह और उनके साथी वीर उसी क़िले में उपस्थित थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चारण के मुँह से युद्ध का वर्णन सुनते सुनते उस दिन की सारी घटना दुर्जयसिंह के हृदय में जाग्रत हो उठी।

चारणदेव यों वर्णन करने लगे—"आप लोगों ने उस दिन का युद्ध देखा ही है। महाराज दुर्जयसिंह सालुम्ब्रराधीश के दहने हाथ थे। आप लोग साहीदास की वीरता देख चुके हैं। चित्तौर का सूर्यद्वार ही चन्दावत लोगों का युद्धस्थल था। साहीदास उस दिन सूर्यद्वार को रोके रहे। चन्दावतों ने सूर्य-द्वार से पीछे पाँव न हटाया।

"समुद्र की तरङ्गें जिस तरह वायु से विताड़ित होकर बड़े वेग से किनारे को धक्का मारती हैं उसी तरह तुर्की सेना बार बार सूर्यद्वार पर आघात पहुँचाने लगी। वह सैन्यरूपी तरङ्ग प्रखर वेग से क़िले की ओर बढ़ चली, किन्तु चन्दावत-रूपी मज़बूत बाँध से टकराकर फिर पीछे लौट गई।

"जंगल में जब आग लगती है तब जिस द्रुतगति से वह चारों ओर से जंगल को घेर लेती है और जिस आवेग से उसकी ज्वाला आकाश की ओर धावमान होती है उसी तरह तुर्की सेना क़िले को चारों ओर से घेर कर बार बार क़िले के ऊपर हमला करने लगी। चन्दावत-सैनिकों की संख्या इनी-गिनी थी, पर वे युद्ध करने में बड़े बहादुर थे। उन्होंने बार बार भयङ्कर रूप से आक्रमण करनेवाले शत्रु-सैनिकों की चेष्टा को विफल कर दिया। वह बड़ी वीरता से सूर्यद्वार पर डटकर शत्रुओं से लड़ते रहे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"वर्षा-ऋतु के बादलों की तरह तुर्की सेना क़िले के चारों तरफ़ उमड़ पड़ी थी । कितनी ही तुर्की सेना मारी गई, कितनी ही घायल हुई और कितनी ही फिर दल बाँध कर एक के बाद एक, क़िले पर हमला करने लगी । चन्द्रावत लड़ते लड़ते कट मले गये, पर एक पग भी कोई पीछे न हटा । साहीदास भी तब सैकड़ों शत्रु सैनिकों के साथ अकेले जूझ रहे थे । अन्त में वे चित्तौर के लिए हृदय का सारा रक्त प्रदान कर कटे हुए पेड़ की तरह रण-भूमि में गिरे । दुर्जयसिंह साहीसेना से प्राणरक्षार्थ लड़ते लड़ते बेहोश होकर नीचे गिर पड़े । वीरगण ! इनके सिर में अब भी तलवार के घाव का चिह्न दिखाई दे रहा है । चन्दावत प्राय: सभी हताहत हुए, किन्तु दुर्जयसिंह तब भी सूर्यद्वार की रक्षा करते रहे ।"

चारणों से इस प्रकार युद्ध का वर्णन सुन कर चन्दावत वीरों का हृदय वीरता से फड़क उठा । सभी दुर्जयसिंह का जय-जयकार मनाने लगे । वीरगणों की जयध्वनि से सारा वन काँप उठा ।

सिंह की तरह गरज कर दुर्जयसिंह बोले—वीरगण ! आज कल हम लोगों के चारों ओर विपत्ति ही विपत्ति छाई हुई है । किन्तु चन्दावत विपत्ति को विपत्ति नहीं गिनते । यद्यपि हम लोगों के हाथ से चित्तौर निकल गया है तथापि हम लोगों के लिए अभी कितने ही सुरक्षित स्थान हैं । इन पहाड़ों और गुफाओं को सिसोदियों के हाथ से कौन छीन सकता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है ? महाराना उदयसिंह अब नहीं हैं किन्तु महाराना प्रतापसिंह का प्रताप भी कुछ कम नहीं है । ये भी तलवार चलाने में बड़े बहादुर हैं । महाराना प्रतापसिंह की जय हो, सिसौदिया जाति की जय हो । चन्दावत वीरों की जय हो ।

सैकड़ों वीरों ने बड़े उच्च स्वर से एक साथ जय शब्द का उच्चारण किया । यह शब्द वन को अतिक्रम करके मेवाड़ के असंख्य पहाड़ों में प्रतिध्वनित हुआ । दुर्जयसिंह ने चारण से कहा—हम लोग अभी फिर आखेट के लिए जायँगे । इससे आखेट का कुछ वर्णन सुनाओ, जिसमें हम लोगों का शिकार खेलना विफल न हो ।

चारणगण आखेट-सम्बन्धी गीत गाने लगे । उस गीत का भावार्थ यह है कि "हे वीरगण ! आठ वर्ष हुए कि दिल्ली के बादशाह ने चित्तौर ले लिया है । दिल्लीश्वर और सिसौदिया का यह कुछ पहला विवाद नहीं है । लगभग तीन सौ वर्ष पहले ऐसा विवाद एक बार पहले भी हो चुका है । दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन ने चित्तौर को हस्तगत कर लिया था । परन्तु चित्तौरगढ़ तो सिसौदियों का कण्ठ-भूषण था । भला वह कब तक तुर्कों के हाथ में रह सकता था ? उस दफ़े हम्मीरदेव ने तुर्कों के हाथ से यह कण्ठ-भूषण छीन लिया । इस दफ़े प्रतापसिंह लेंगे । आप लोग हम्मीरदेव का जीवन-वृत्तान्त सुनिए और साथ ही आखेट का गान भी सुनिए ।

"लक्ष्मणसिंह के ज्येष्ठ पुत्र उरूसिंह थे । युवराज उरूसिंह ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क़िले को बचाते हुए प्राण दे दिये। सिसौदियों में कोई ऐसा वीर नहीं जो इस बात को न जानता हो, चित्तौर पर आक्रमण होने के कई साल पहले यही उरूसिंह शिकार खेलने के लिए एक दिन क़िले के बाहर निकले। सौ अस्त्र-शस्त्र-धारी वीर उनके साथ शिकार खेलने गये। शिकार से बढ़ कर राजपुत्रों के लिए आनन्द और उत्साह का दूसरा विषय नहीं होता।

"कुँवर के साथी वीरों की जयध्वनि से आन्दावा वन प्रतिध्वनित हो उठा। वे लोग एक जङ्गली सूअर के पीछे दौड़े। वह सूअर कितने ही वन पहाड़ों को लाँघता हुआ भाग चला। वीर लोग उसका पीछा करने लगे। राजपुत्रों को शिकार के बराबर आनन्द क्या और किसी विषय में मिलता है?

"बहुत देर के बाद वह वराह एक धान के खेत में जा छिपा और वीरों की आँखों के सामने से ग़ायब हो गया। वहाँ केवल एक दरिद्र की बेटी, मचान पर खड़ी होकर, धान की रत्ता कर रही थी। वीरों को निराश होते देख कर उसने कहा—आप लोग ज़रा ठहर जायँ। मैं सूअर को धान के खेत से बाहर निकालती हूँ।

"वह मानवी थी या साक्षात् महिषमर्दिनी दुर्गा थी, कुछ समझ में नहीं आता। स्त्रियों की भुजाओं में क्या इतना बल होना कभी सम्भव है? स्त्रियों के हृदय में क्या इतना साहस और वीरता कभी हो सकती है? उस स्त्री ने एक छोटा सा पेड़ उखाड़ लिया और उसके अग्र भाग (फुनगी) को छील कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खूब साफ़ बना लिया। वह इसी अपूर्व बर्छी से सूअर को बेध कर वीरों के सामने ले आई। यह अद्भुत दृश्य देख कर वीर-गण चकित हुए।

"कुछ देर पीछे वीरगण भोजन करने बैठे। इतने में उन लोगों ने पास ही एक घोड़े को आर्तनाद करते सुना और देखा कि उसका एक पाँव टूट गया है। वह दरिद्र-रमणी मचान पर खड़ी होकर, ढेले फेंक फेंक कर, खेत से चिड़ियों को उड़ा रही थी। उसी के ढेले का टुकड़ा घोड़े के पाँव में लगा और वह उस चोट से व्याकुल होकर मृतप्राय हो गया।

"वीरगण भोजन करके घोड़े पर सवार हो सन्ध्या समय घर की ओर जा रहे थे। रास्ते में देखा कि वही दरिद्ररमणी माथे पर दूध से भरे हुए बर्तन को रक्खे और दोनों हाथों से दो दुर्दमनीय बलिष्ठ भैंसों को खींचे लिये जा रही है। उरूसिंह ने विस्मित होकर उस स्त्री के बल की परीक्षा करनी चाही। इसलिए उन्होंने एक सवार से उस स्त्री की ओर बड़े वेग से घोड़ा दौड़ाने को कहा। घोड़ा बेतहाशा दौड़ा आ रहा है और वह कुछ ही देर में उसके ऊपर आ गिरेगा,—यह रमणी ने देख लिया, किन्तु इससे वह ज़रा भी न डरी। न तो उसने सिर पर से दूध का बर्तन उतारा और न वह सामने से ही हटी। घोड़ा जब उसके बहुत ही पास पहुँच गया तब उसने एक भैंस को ज़ोर से घोड़े की देह पर ठेल दिया। भैंस के धक्के से घोड़ा और सवार दोनों धरती पर लुढ़क कर गिर पड़े।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"उस स्त्री का ऐसा अद्भुत साहस और बल देख कर उरूसिंह दंग हो गये। उस स्त्री का परिचय पूँछने से ज्ञात हुआ कि वह कुमारी, चौहान जाति के, चन्दानवंश के एक दरिद्र की कन्या है। उरूसिंह ने उसी वीरबाला से ब्याह किया। उसी के गर्भ से वीर-चूड़ामणि हम्मीरदेव का जन्म हुआ। अलाउद्दीन ने जब चित्तौर पर आक्रमण किया था तब पहले युवराज उरूसिंह ने लड़ कर प्राण दिये। फिर उनके पिता राना लक्ष्मणसिंह ने युद्ध करके वीरगति पाई। उस समय हम्मीरदेव की उम्र केवल बारह वर्ष की थी। वे उस समय अपनी माँ के साथ ननिहाल में थे। युवा होने पर उन्होंने चित्तौर का उद्धार किया। चित्तौर का उद्धार होना उरूसिंह के वासन्तिक आखेट का ही फल समझना चाहिए। उरूसिंह ने आखेट करके हम्मीरदेव सा वीर पुत्र पाया। आज श्रीमान् दुर्जयसिंह आखेट के लिए निकले हैं। वीरगण! आप लोग दृढ़ता से हाथ में बर्छी पकड़िए। आज आप लोगों का शिकार खेलना सफल हो। आप लोग चित्तौर के पुनरुद्धार में सफलता प्राप्त करें।"

चारण के उत्साह-भरे वाक्य सुन कर सभी वीर कूद कर घोड़े पर सवार हुए। तीर की तरह बड़े वेग से उन्होंने घोड़ों को छोड़ दिया। इस बार वीरगण निराश नहीं हुए। दो ही एक घड़ी की खोज में एक झुरमुट के भीतर उन्हें बहुत बड़ा सूअर देख पड़ा। देखने में वह बड़ा ही भयङ्कर था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसका बृहत् आकार और असाधारण बल देख कर अश्वारोही वीरों के आनन्द की सीमा न रही। उन सवारों को अपनी ओर आते देख वराह भी झाड़ी से निकल कर दूसरी ओर भागा। वीरगण बड़े उल्लास से उसके पीछे दौड़े। उस समय उन वीरों के अङ्ग अङ्ग से उत्साह टपका पड़ता था। जिस तरफ़ वराह भागा उसी तरफ़ वे लोग भी दौड़े। घोड़े धरती को टापों से फाड़ते हुए तीर की तरह छूटे। रास्ते में बड़े बड़े टीलों और छोटे छोटे पहाड़ी सोतों को फाँद कर उन्होंने जिधर-तिधर से शिकार का पीछा किया। सवारों की दृष्टि एक-मात्र वराह के ऊपर स्थिर थी। उनका सारा ध्यान उसी की ओर लगा हुआ था। वे लोग बाँये हाथ में घोड़े की लगाम और दहने हाथ में बड़ी सावधानी के साथ बर्छी लिये हुए थे।

वराह ने कुछ देर दौड़ कर पीछे की ओर घूम कर देखा कि अश्वारोही लोग बहुत समीप आ पहुँचे हैं। इससे वह कुछ देर ठहर कर उन लोगों पर आक्रमण करने की घात सोचने लगा। किन्तु सौ सवारों के हाथ में एक सौ बर्छियों के चमकते हुए तीक्ष्ण फलों को देख कर वह डर गया और भाग कर एक घने जंगल के भीतर झुरमुट में जा छिपा। साथ ही उन सवारों ने भी उस झुरमुट को चारों ओर से जा घेरा। वे लोग शोर गुल करके सूअर को झुरमुट के भीतर से बाहर निकाल लाने का प्रयास करने लगे। किन्तु सूअर अपने प्राणों के भय से उसमें छिपा ही रहा। तब उन वीरों में किसी किसी ने उस पर पत्थर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चलाना शुरू किया। किसी ने उस विस्तीर्ण झुरमुट के भीतर जहाँ किसी तरफ़ पत्तों की खड़खड़ाहट सुनी कि झट भाला फेंका। कितनी ही देर यों ही समय नष्ट हुआ। कितने ही उद्यम व्यर्थ हुए। सभी सवार युक्ति लड़ाते लड़ाते थक गये, पर वराह झुरमुट से बाहर न निकला।

दुर्जयसिंह ने साथियों से कहा—भाइयो, इस तरह व्यर्थ परिश्रम करने की कोई आवश्यकता नहीं। देखो, अब सूर्य डूबने पर है। अब समय नहीं है। घोड़ों को यहीं छोड़ दो और चलो, हम लोग सतर्क होकर पैदल ही यहाँ से धीरे धीरे आगे बढ़ चलें। वराह इसी झुरमुट के भीतर है। हम लोग यदि चारों ओर से इसके भीतर घुसेंगे तो वह किसी एक तरफ़ से ज़रूर भागने की चेष्टा करेगा या हम लोगों के हाथ से बीच ही में मारा जायगा।

इसके अतिरिक्त दूसरा उपाय ही न देख पड़ा। सभी घोड़ों से उतर कर धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे। सभी सतर्क होकर हाथ में बर्छी लिये हुए आगे बढ़ चले। तीव्र दृष्टि से चारों ओर देखने लगे। इस दफ़े वराह अवश्य ही झुरमुट से निकलेगा। कौन जाने किधर से भागे और किस पर आक्रमण करे, यह सोच कर सभी लोग बड़ी सावधानी से जा रहे थे।

इन लोगों के आने की आहट वराह को सुन पड़ी। वह कूदता हुआ एक तरफ़ से निकल भागा। बिजली की तरह वेग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से दौड़ कर उसने एक समीपस्थ वीर का पाँव चीर डाला और एक ही लहज़े में वह बहुत दूर भाग गया ।

घायल की सेवा के लिए वहाँ दो एक वीर ठहर गये और सभी, घोड़े पर सवार हो, फिर सूअर का पीछा करने लगे। दुर्जयसिंह ने बड़े वेग से घोड़े को दौड़ाया । उनके दहने हाथ में बर्छी मानों लोहू की प्यासी होकर काँप रही थी ।

बराह कई बार जंगल में छिपा और कई बार बाहर निकला । आखिर वह एक घने जंगल में जा छिपा । इधर साँझ होगई । अन्धकार धीरे धीरे जंगल पर विशेष रूप से अपना साम्राज्य स्थापित करने लगा । सवार लोग तितर-बितर होकर कोई जंगल में, कोई मैदान में, इधर-उधर वराह को ढूँढ़ने लगे ।

दुर्जयसिंह अकेले एक जंगल के भीतर घुस पड़े । घोड़ा उनका बिलकुल थक गया था, और पसीने से तर हो रहा था । उसके मुँह से फेन बहा जा रहा था किन्तु तो भी वह बराबर आगे की ओर बढ़ा ही जा रहा था । सौ सवारों में यही एक दुर्जयसिंह स्थिर-दृष्टि से वराह को देखते हुए उसके पीछे पीछे जा रहे थे । उस अँधेरे जंगल में शिकार का पता लगाना सवारों के लिए दुःसाध्य हो उठा किन्तु इनके लिए कुछ दुःसाध्य न था । इन्होंने जिस जंगल के भीतर वराह को घुसते देखा था यथार्थ में वह उसी के भीतर छिपा हुआ था ।

इस बार वराह को बड़ा क्रोध हो आया । आज एक पहर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से उसने इस जंगल से उस जंगल में, उस गुफा से इस गुफा में, छिप कर अपनी जान बचाई, तथापि एक अश्वारोही—हाथ में बर्छी लिये—उसका पीछा नहीं छोड़ता। सन्ध्या-समय वह झाड़ी में छिपा है, सामने दुर्जयसिंह उसको मारने के लिए खड़े हैं, यह देखकर वह विद्युद्गति से उन पर टूट पड़ा। दुर्जयसिंह ने बाँये हाथ से कपार का पसीना पोंछकर, झट निशाना ठीक करके, दहने हाथ से बर्छी चलाई। थकावट के कारण किंवा अन्धकारवशतः वह बर्छी व्यर्थ हुई। वह एक शिलाखण्ड पर जा गिरी। बर्छी की चोट से वह शिलाखण्ड टूक टूक हो गया। बर्छी की चोट से बचकर वराह ने एक ही पल में घोड़े का पेट फाड़ डाला।

दुर्जयसिंह झट घोड़े से कूद कर दस हाथ दूर जा गिरे। घोड़ा वहीं लोट गया। वराह, मरे हुए घोड़े को छोड़ कर दुर्जयसिंह पर आक्रमण करने चला। मृत्यु किसी के रोके नहीं रुकती। वह राजपूत वीर स्थिरदृष्टि से मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगे। पर मृत्यु उनके निकट न आने पाई।

किसी के हाथ का फेंका हुआ एक भाला वराह के मुँह पर आ गिरा। इससे उसके दाँत चूर चूर हो गये। उसके मुँह से रक्त की धारा बह चली। उस भाले की चोट से वह सूअर घायल हो गया। अब वह दुर्जयसिंह को छोड़ कर एकबारगी बड़े वेग से भाग कर जङ्गल के भीतर जा छिपा। रात के अँधेरे में फिर वह कहीं देख न पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुर्जयसिंह ने उस अन्धकार में एक छरहरे जवान को पहाड़ से नीचे उतरते देखा।

———

दूसरा परिच्छेद

तेजसिंह

"तद्वारभ्याहं किरातकृतसंसर्गो बन्धुकुलमुत्सृज्य + + + तस्मिन् कानने दूरीकृतकलङ्को वसामि ॥"

दशकुमारचरितम्

शिकार के दिन वराह भाग गया। दुर्जयसिंह के हाथ का फेंका हुआ भाला व्यर्थ हुआ। एक अज्ञात व्यक्ति की सहायता से दुर्जयसिंह के प्राण बचे। इस प्रकार की अनेक चिन्तायें दुर्जयसिंह के हृदय को मसोसने लगीं। वे क्रोध और ग्लानि के मारे अपने प्राण-रक्षक को धन्यवाद देना भूल गये। उन्होंने किञ्चित् कठोर स्वर में उस प्राणरक्षक से कहा—मैं आपको नहीं पहचानता। मालूम होता है, आप ही ने मेरे प्राण बचाये हैं।

अपरिचित युवा वीर ने धीरे धीरे कहा—मनुष्य-मात्र का धर्म है कि मनुष्यों के प्राण बचावे। विशेषकर दुर्जयसिंह के प्राणों की रक्षा करना तो राजपूतों का मुख्य कर्तव्य है। वे वीर हैं, चाहें तो मेवाड़ का, इस गिरी दशा से, उद्धार करके अपनी जाति का विशेष उपकार कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस सामान्य वेषधारी अपरिचित युवक के मुँह से यह बात सुन कर दुर्जयसिंह कुछ देर विस्मित हो रहे । फिर उन्होंने कहा—मैं आपका नाम जानना चाहता हूँ ।

युवक—आप मेरा नाम जानेहींगे । अभी आप थके हैं । मेरी कुटी में चल कर कुछ देर विश्राम करें ।

वह महाबलिष्ठ जवान धीरे धीरे अग्रसर हुआ । दुर्जयसिंह उसके पीछे पीछे चले । उस अँधेरी रात में, जंगल के बीच से वे दोनों वीर चुपचाप जाने लगे ।

दुर्जयसिंह दुर्बल या अधीर न थे किन्तु वे अपरिचित व्यक्ति का दीर्घ आकार, चौड़ी छाती, विशाल बाहु और गम्भीर चाल देख कर विस्मित हुए । ऐसा लम्बा और बलिष्ठ पुरुष उन्होंने शायद ही देखा हो । अथवा यह कह सकते हैं कि आठ वर्ष पहले उन्होंने ऐसे वीर पुरुष को एक बार देखा था ।

थोड़ी देर में वह युवा वीर एकाएक खड़ा होकर बोला—इस समय मेरा एक अनुरोध है । आप उसका कारण न पूछें । आप अपनी आँखों को कपड़े से ढाँप लें । मैं आपको यहाँ से हाथ पकड़ कर ले चलूँगा । आपको यदि यह बात स्वीकार न हो तो यहीं से मैं अपना रास्ता लेता हूँ ।

उस युवा की यह बात सुन कर दुर्जयसिंह और भी विस्मित हुए । किन्तु युवक के हृदय का भाव परख कर उन्होंने अस्वीकार करना वृथा समझा । उन्होंने सोचा, यह युवा कभी मेरा अनिष्ट नहीं करेगा । जिसने अभी मेरे प्राण बचाये हैं उसके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हाथ से भविष्य में भी मेरी कोई बुराई नहीं हो सकती । दूसरे, इस अँधेरी रात में इस घने जंगल से इस युवक की सहायता के बिना बाहर निकलने का कोई उपाय भी नहीं है । कुछ देर यों मन ही मन गुन धुन कर उन्होंने अपनी पगड़ी का एक छोर युवक के हाथ में दे दिया । युवक ने उस पगड़ी के छोर से दुर्जयसिंह की आँखों को अच्छी तरह बन्द कर दिया ।

अब वह दुर्जयसिंह का हाथ पकड़ कर प्रायः घुमा फिरा कर एक कोस दूर ले गया । इस मार्ग के बीच उन दोनों में एक भी बात न हुई । दुर्जयसिंह किस तरफ़, कहाँ जा रहे हैं, उन्हें कुछ मालूम न हुआ । उन्होंने केवल वृत्त के पत्तों की मर्मराहट सुनी और यह समझा कि एक पहाड़ के ऊपर चढ़ रहे हैं । वह युवा वीर एकाएक खड़ा हो गया । दुर्जयसिंह भी खड़े हुए । युवा ने उनकी आँखों की पट्टी खोल दी । दुर्जयसिंह चकित होकर चारों ओर बड़े ग़ौर से देखने लगे ।

पहर रात बीते दुर्जयसिंह ने अपने को पर्वत की एक अँधेरी गुफा के भीतर, अपरिचित लोगों से, घिरा पाया । गुफा में एक दिया टिमटिमा रहा था । उस दिये की धुँधली रोशनी में दुर्जयसिंह ने अपने चारों तरफ़ केवल असभ्य भीलों को देखा । वे लोग आपस में क्या कह रहे थे, यह दुर्जयसिंह कुछ न समझ सके । वे लोग कभी गुफा के भीतर आते और कभी बाहर जाते हैं, इसका भी कारण उनकी समझ में न आया । दुर्जयसिंह ने राजपूताने की भाषा में कुछ पूछा, जो उस पार्श्व-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वर्ती युवक के अतिरिक्त और किसी ने न समझा। इसी युवक ने उनके प्राण बचाये हैं, यही आराम के लिए उन्हें इस गुफा में ले आया है। अब तक इस युवक ने बराबर इन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा है तथापि दुर्जयसिंह उस युवक की ओर देखने में क्यों सकपका रहे थे यह उनकी समझ में नहीं आया। क्या कारण है कि वे उस युवक की ओर देखने में सङ्कुचित होते थे! दुर्जयसिंह न मालूम मन ही मन क्या सोच रहे हैं। इस अन्धकारमय गुफा, इन भयङ्कर भेसधारी भील योद्धाओं और इस अल्पभाषी युवक वीर को जितना ही वे ध्यान से देखने लगे उतना ही उनके मन का सन्देह उत्तरोत्तर बढ़ने लगा।

एक नौकर पास के झरने से पानी ले आया। दुर्जयसिंह ने उस पानी से हाथ-पाँव धोये। उसी नौकर ने फिर फल मूल और खाने की सामग्री लाकर दुर्जयसिंह के आगे रख दी। दुर्जयसिंह के मन से सन्देह दूर हुआ। उन्होंने साकांक्ष दृष्टि से चारों ओर देखा। युवक वहाँ न था। इससे वे कुछ क्रुद्ध होकर बोले—मैं जिस राजपूत युवक का अतिथि हुआ हूँ उसे अतिथि के आगे अपने हाथ से खाने-पीने की सामग्री लाकर रखना चाहिए—साथ बैठ कर भोजन करना चाहिए। राजपूतों का धर्म है कि स्वयं अतिथि की शुश्रूषा करे। मालूम होता है, भीलों के साथ रह कर युवक राजपूत-धर्म भूल गया है।

दुर्जयसिंह के इस कठोर भाषण से ज़रा भी विचलित न हो कर नौकर ने उत्तर दिया—मेरे स्वामी राजपूत-धर्म को भूले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं हैं, किन्तु किसी कारणवश चन्दावतकुल के साथ अब तक उन्होंने भोजन नहीं किया है। भोजन करने का निषेध है। यही कारण है कि वे इस समय यहाँ से हट गये हैं।

दुर्जयसिंह के मन में फिर सन्देह उत्पन्न हुआ। उन्होंने आहार की सामग्री को हाथ से स्पर्श तक नहीं किया। वे भोजन छोड़ कर उठ खड़े हुए। कुछ देर में वह अपरिचित युवा उनके पास आकर धीरे धीरे बोला—मैं आतिथ्य-धर्म का यथोचित पालन करने में असमर्थ हूँ। इसका कारण नौकर आपसे निवेदन कर चुका है। यदि आपको भोजन करने की इच्छा न हो तो आप आराम कीजिए। आपके सोने के लिए शय्या प्रस्तुत है।

दुर्जयसिंह ने देखा कि एक एक कर कितने ही भील एक बार गुफा के भीतर प्रवेश करते हैं और फिर जाते हैं। सभी के हाथ में धनुष-बाण है, सभी मौन साधे हैं, सभी उस अपरिचित राजपूतयुवक की ओर ताक रहे हैं। मानो उसकी आज्ञा पाते ही या उसका इशारा पाते ही वे लोग दुर्जयसिंह को मार डालने के लिए प्रस्तुत हैं। पर युवक ने ऐसा संकेत नहीं किया।

दुर्जयसिंह बड़े साहसी थे। युद्ध में या किसी सङ्कट में उनसे बढ़ कर साहसी कोई न था। किन्तु इस अपूर्व-स्थान में असंख्य भीलजातीय योद्धाओं के बीच अपने को असहाय देख कर उनका हृदय एक बार दहल गया। वे इस गुफा में अकेले थे। उनके पास कोई अस्त्र शस्त्र भी न था। सैकड़ों योद्धा चारों ओर से उनको घेरे खड़े थे। उन्होंने फिर उस अपरिचित राज-

6434. 187

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूत की ओर देखा। उसके मुखमण्डल का गम्भीर भाव देख कर वे उसके मानसिक उद्देश्य को कुछ भी न जान सके।

युवक ने फिर कहा—शय्या बिछी है।

यह युवक, दुर्जयसिंह का, शत्रु है या मित्र? यदि शत्रु है तो आज उसने सङ्कट के समय उनके प्राणों की रक्षा क्यों की? उस निविड़ वन से अपने आवासस्थान में क्यों बुला लाया? खाने के लिए फल मूल क्यों दिया? इन सैकड़ों धनुषधारी भीलों से अब भी उनकी रक्षा क्यों कर रहा है? उस युवक पर दुर्जयसिंह क्यों मिथ्या सन्देह कर रहे हैं? युवक अवश्य ही कोई विपद्-ग्रस्त उन्नतवंशीय राजपूत होगा। उसने अपने स्थान से रहित होकर भीलों का आश्रय लिया है। उसने आज, क्षत्रियधर्म के अनुसार, दुर्जयसिंह के प्राण बचा कर भारी उपकार का काम किया है। तब न जानें दुर्जयसिंह क्यों सन्देह कर रहे हैं।

सन्देह का कारण दुर्जयसिंह स्वयं भी कुछ स्थिर नहीं कर सके, किन्तु जब उस विशालमूर्त्ति, स्थिरचित्त, अल्पभाषी, युवक वीर की ओर देखते हैं तब आप ही आप न मालूम क्यों उनके मन में सन्देह हो आता है। रणभूमि में सैकड़ों शत्रुओं के बीच जिनका हृदय विचलित होनेवाला नहीं, वह वीरता से भरा हुआ प्रौढ़ हृदय आज इस युवक को देख कर क्यों डावाँडोल हो रहा है? सालुम्बराधीश और साक्षात् महाराना के मुँह की ओर स्थिरदृष्टि से देखने में जिस वीर ने कभी असमर्थता प्रकट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं की आज वह एक जङ्गली युवक की ओर देखने में क्यों इतना अक्षम हो रहा है ?

दुर्जयसिंह ने अपनी असमर्थता पर घृणा करके और अपने हृदय का सन्देह दूर करके उस युवक के साथ एक बार सहज भाव से वार्तालाप करना चाहा । उन्होंने कहा—युवक, मैं आज इस विचित्र गुफा और आपके इन असभ्य साथियों को देख कर विस्मित हो रहा हूँ । आपने जो आज मेरा उतना बड़ा उपकार किया है उसके लिए आपको एक बार धन्यवाद भी मैंने अभी तक नहीं दिया ।

युवक—धन्यवाद देने की कोई आवश्यकता नहीं । मैंने अपने देश के प्रति कर्तव्यमात्र का पालन किया है ।

दुर्जयसिंह—तथापि मैं इस ऋण का परिशोध कैसे कर सकता हूँ ?

युवक—आज मैंने आपको जिस असहाय अवस्था में देखा था, उसी तरह यदि आप किसी पतिहीना स्त्री या किसी पितृहीन बालक को असहाय अवस्था में देखें और यदि कोई उन पर अत्याचार करे तो आप उसके हाथ से उनकी रक्षा करें, इसी से मैं कृतार्थ होऊँगा । मैं अपने लिए आपसे कोई प्रत्युपकार नहीं चाहता ।

यह सुन कर दुर्जयसिंह चकित हो रहे । क्या युवक मेरा पूर्ववृत्तान्त जानता है ? क्या आज यह सैकड़ों भील-योद्धाओं के द्वारा पूर्व अत्याचार का बदला चुकावेगा ? उन्होंने सभय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दृष्टि से उन भील-योद्धाओं की ओर देखा। सभी धनुष-बाण लिये खड़े हैं। उसी दृष्टि से फिरे एक बार युवक की ओर भी देखा। वह पूर्ववत् गम्भीर भाव धारण किये हुए है। दुर्जयसिंह के विषम साहसी हृदय में आज पहले पहल भय का सञ्चार हुआ—"यह युवक कौन है ?"

युवक ने फिर कहा—सोने के लिए शय्या प्रस्तुत है।

दुर्जयसिंह ने हृदय के उद्वेग को दबा कर उत्तर दिया—मैं अभी सूर्यमहल लौट जाऊँगा। पराये स्थान में रहने का अभ्यास दुर्जयसिंह को नहीं है।

युवक—जो आपकी इच्छा हो वही करें, पर मेरी धारणा यह थी कि आपको दूसरे के स्थान में रहने का अभ्यास है।

दुर्जयसिंह—मैं नहीं जानता कि आप कौन हैं। आप चाहें तो इन असभ्य जातीय योद्धाओं के द्वारा मेरी दुर्गति करा सकते हैं किन्तु मैं मिथ्या अपवाद कदापि नहीं सह सकता। राठौर तिलकसिंह के साथ मेरा वंशानुगत विरोध था, उसी विरोध-वश मैंने सम्मुख-युद्ध में उन्हें हरा कर सूर्यमहल क़िला हस्तगत कर लिया है। इसे आप केवल क्षात्र-धर्म समझें।

युवक—सम्मुख-युद्ध में आप बड़े दक्ष हैं, इसमें सन्देह नहीं। इसी से तिलकसिंह को स्वर्गवास होने पर आपने उनकी असहाया विधवा के साथ सम्मुख-समर में वीरता प्रकाश करके स्त्री-हत्या की थी। आप क्षात्रधर्मज्ञ हैं, इसमें सन्देह नहीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस बात से दुर्जयसिंह के शरीर में मानो सौ बिच्छुओं ने एक साथ डंक मारा। क्रोध से उनका चेहरा लाल हो गया। उनकी आँखों से मानो आग की चिनगारियाँ झड़ने लगीं। सारा बदन काँपने लगा। वे ऐसी अवहेला की बात सहन न कर सके। वे देश-काल को भूल गये। उन्होंने झट कूद कर उस अपरिचित युवक का गला पकड़ लिया।

यह देख कर सभी भील योद्धाओं ने धनुष पर तीर चढ़ाया। उस अपरिचित युवक का इशारा पाने के लिए सभी उसके मुँह की ओर देखने लगे। युवक ने बाँये हाथ से उन लोगों को मना किया और दहने हाथ से दुर्जयसिंह को पकड़ कर, गेंद की तरह ऊपर उठा कर, दस हाथ दूर फेंक दिया।

दुर्जयसिंह सँभल कर उठ खड़े हुए। उन्होंने एक बार फिर उस युवक की ओर देखा। युवक के मुँह पर ज़रा भी क्रोध का चिह्न नहीं देख पड़ा; वह पूर्ववत् स्थिर भाव धारण किये खड़ा है। युवक की कमर में म्यान के भीतर तलवार है, पर उसने उसे हाथ से छुआ तक नहीं। युवक ने फिर कोमल स्वर में कहा—सोने के लिए शय्या प्रस्तुत है।

दुर्जयसिंह सिर नीचा किये हुए बोले—मैं अभी सूर्यमहल जाऊँगा।

युवक ने दुर्जयसिंह के पास आकर फिर उनकी आँखों पर पट्टी बाँधी और स्वयं उनका हाथ पकड़ गुफा के बाहर निकला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोनों पहाड़ से नीचे उतर चले । रास्ते में एक भी बात उन दोनों में न हुई । केवल वायु की सनसनाहट, वृक्षों की मर्मराहट और ठौर ठौर झरने से झिर झिर कर पानी गिरने का शब्द सुनाई दे रहा था । बीच बीच में गीदड़ों और अन्य जङ्गली पशुओं का भी शब्द सुन पड़ता था । गम्भीर रात्रि की उस ठंडी हवा में भी दुर्जयसिंह का उत्तम मस्तिष्क शीतल न हुआ । उस निस्तब्ध रात में भी उनके हृदय का उद्वेग शान्त न हुआ ।

एक कोस रास्ता तय करके युवक ने दुर्जयसिंह की आँखों पर से पट्टी हटा दी । दुर्जयसिंह ने देखा, जिस स्थान में युवक ने उनके प्राणों की रक्षा की थी यह वही स्थान है । युवक के द्वारा जो उनकी जान बची थी, यह स्मरण करके उनके मुँह पर कृतज्ञता का भाव छा गया, किन्तु वे बिना ही कुछ कहे-सुने उस घने जङ्गल के भीतर होकर उस घोर अँधेरी रात में अकेले क़िले की ओर चले ।

प्रात:काल की अरुणाच्छटा पूरब ओर दिखाई देने लगी । ऐसे समय दुर्जयसिंह ने सूर्यमहल में प्रवेश किया ।

उनके न आने से क़िले के सभी लोग चिन्तित थे । उनको आते देख सभी दौड़ कर उनके पास आये । दुर्जयसिंह के मुँह का विकृत भाव देख कर सभी डर कर चुपचाप वहाँ से हट गये । वे लोग दुर्जयसिंह के स्वभाव से भली भाँति परिचित थे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुर्जयसिंह ने अकेले एक अँधेरी कोठरी में जाकर मन्त्री को बुला भेजा। मन्त्री युद्ध में उन्हीं के समान साहसी और मन्त्रणा में बड़े कुशल थे। दुर्जयसिंह ने संकेत द्वारा उनको बैठने की आज्ञा दी और उनके साथ टूटे स्वर में यों बातचीत करने लगे;—

दुर्जयसिंह—उस समय की बात याद है न, जब मैंने इस क़िले पर अधिकार किया था ?

मन्त्री—भली भाँति स्मरण है। यह क़िला दख़ल किये केवल आठ वर्ष हुए हैं।

दुर्जयसिंह—जब तिलकसिंह की विधवा स्त्री मारी गई थी तब उसके पुत्र की क्या दशा हुई ? स्मरण है ?

मन्त्री—इस क़िले के ऊपर से खाई में गिर कर बालक ने अपने प्राण दे दिये।

दुर्जयसिंह--तिलकसिंह का बेटा अभी तक जीवित है।

मन्त्री--तिलकसिंह का बेटा ?

दुर्जयसिंह—हाँ।

मन्त्री—उनका बालक वही तेजसिंह ?

दुर्जयसिंह—हाँ, तेजसिंह ! किन्तु अब वह बालक नहीं है।

मन्त्री—आप भूलते हैं। इस क़िले पर से गिर कर बड़े बड़े शूर-वीर तक नहीं बच सकते, बच्चों की तो कुछ बात ही नहीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुर्जयसिंह चुप हो रहे । मन्त्री ने उनके चेहरे पर क्रोध की झलक देख कर बड़ी नम्रता से पूछा—आपने कैसे पहचाना? जिस बालक को दस वर्ष की अवस्था में एक बार देखा था उसका मुँह देख कर इतने दिन पीछे पहचानना दुःसाध्य सा जान पड़ता है ।

दुर्जयसिंह—मैंने उसे मुँह देख कर नहीं पहचाना । उसकी बातचीत से और एक युक्ति से पहचाना है ।

मन्त्री—कौन सी युक्ति ?

दुर्जयसिंह—मैंने तिलकसिंह के साथ एक बार बाहु-युद्ध किया था । उसके ऐसा बलिष्ठ मेवाड़ में प्रायः दूसरा कोई नहीं था । विशेष कर कुश्ती लड़ने का जो कौशल उसमें था वह किसी पहलवान में भी न था । तेजसिंह ठीक अपने पिता के समान प्रचण्ड बली हुआ है और युद्ध-विद्या में भी वैसा ही निपुण है ।

दोनों कुछ देर चुप रहे । मन्त्री को फिर कुछ पूछने का साहस न हुआ । किन्तु उनके मन में स्वामी के इस कथन का विश्वास न हुआ । उन्होंने समझा कि आज रात में किसी का प्रचण्ड साहस और अतुल बल देख कर दुर्जयसिंह को भ्रम हुआ है ।

दुर्जयसिंह ज़रा ठहर कर बोले—एक और बात है ।

मन्त्री—क्या ?

दुर्जयसिंह—तेजसिंह ने आज मेरे प्राण बचाये हैं !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन्त्री समझ गये । दुर्जयसिंह वहाँ से उठ कर अकेले छत पर घूमने लगे । आज उनके मुँह का भाव देखते तो सैनिक भी चकित हुए बिना नहीं रहते ।

तीसरा परिच्छेद

पुत्र-शोक

"भीतेष्वपि प्रहारिणः प्रीतिः परेष्वपि द्वेषिणो विनीतेष्वपि उद्धताः दयापरेष्वपि निर्दयाः स्त्रीष्वपि शूराः भृत्येष्वपि क्रूराः दीनेष्वपि दारुणाः।"

कादम्बरी

सवेरे ही से सूर्य-महल के सैनिक सुसज्जित होने लगे । प्रातःकालीन सूर्य की किरणों में सैन्य के अस्त्र-शस्त्र चमचमाने लगे । सभी सैनिक उत्साहपूर्वक आनन्दध्वनि करते हुए क़िले के सदर फाटक की ओर एकत्र हुए ।

सेना का कोलाहल सुन कर दुर्जयसिंह छत से उतरे और चुपचाप अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हो घोड़े पर चढ़ सेना के यूथ में आ मिले । हज़ारों सैनिकों के जयघोष से सारा पर्वत प्रतिध्वनित हो उठा ।

वसन्त के रमणीय प्रातःकाल में सैनिक बड़े उत्साह से छोटे बड़े पहाड़ों को लाँघते हुए, कभी जंगल कभी खेत कभी तराई के रास्ते से, जाने लगे । वसन्त के गुणगायक पक्षिगण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब भी पेड़ों पर बैठे हुए मीठी तान ले रहे हैं । पत्तों पर अब भी जहाँ तहाँ ओस-कण, सूर्य की किरण लगने से, मोती की तरह चमक रहे हैं । प्रात:कालिक पवन के साथ योद्धाओं की पताका खेल रही है । कविवर विहारीलाल ने वसन्त के प्रात:-समीर का कैसा अच्छा वर्णन किया है—

रणित भृङ्ग घंटावली झरत दान मधुनीर ।
मन्द मन्द आवत मनो कुन्जर कुञ्ज समीर ॥

जिस पहाड़ के ऊपर कुछ देर पहले जुझाऊ बाजे बज रहे थे, जहाँ पर घोड़ों की टापों और सैन्य का कोलाहल सुन पड़ता था और पताकायें फहरा रही थीं । वह अब सूना सा दिखाई देने लगा । सैन्य ने पहाड़ से उतर कर एक वन में प्रवेश किया ।

वन की अपूर्व शोभा देख कर सैनिकों के हृदय उमंग से भर गये । घने वन के भीतर सूर्य की किरण सहसा प्रवेश नहीं कर सकती थी । कहीं कहीं छिद्र के द्वारा दो एक रश्मिरेखाएँ दीख पड़ती थीं । वसन्त के प्रात:काल में भाँति भाँति के पत्ती कल-रव से अपने अपने मन की उमङ्ग प्रकट कर रहे थे । यह निर्जन वन मानों उनका उत्सव-गृह है और वे बड़ी प्रसन्नता से आज वसन्त के आगम का उत्सव मना रहे हैं । यह निर्जन रमणीय वनस्थली एक-दम सेना के कोलाहल से भर गई । कुछ देर के लिए पत्तियों का वह मधुर गान उस महा कोलाहल में विलीन हो गया ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वन से निकल कर सेना एक विस्तीर्ण खेत में आ पहुँची। चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ है। बीच में, समतल भूमि में, पके हुए जौ और गेहूँ मानों हवा के समुद्र में लहरा रहे हैं। कहीं कहीं खेतों में अफ़ीम के लाल फूल अपूर्व शोभा फैला रहे हैं। नीले आकाश से सूर्य की सुनहरी किरणें उन शस्यमय श्यामल खेतों पर पड़ कर मानों अपना रङ्ग उन पर जमा रही हैं।

योंही पहाड़, वन, और खेतों का मनोहर दृश्य देखते हुए कई कोस अतिवाहित कर सैनिक चन्द्रपुर गाँव में आ पहुँचे। सूर्यमहल क़िले के अधीन चन्द्रपुर आदि कितने ही गाँव थे। युद्ध के समय किसी किसी गाँव के मनुष्य—अपने जीवन, धन, और सम्पत्ति की रक्षा का अन्य उपाय न देखकर—किसी पराक्रमी दुर्ग-पति योद्धा की अधीनता स्वीकार कर लेते थे। तब से क़िले के स्वामी उन लोगों की रक्षा करते और वे लोग प्रजा की भाँति गढ़-पति के वशवर्ती बने रहते थे। वे ग्राम-निवासी लोग पूर्ववत् खेती के कामों में लगे रहते थे, किन्तु इस समय वे पूर्ववत् स्वाधीन नहीं हैं; गढ़-पति के दास हो रहे हैं। क़िलेदार की अधीनस्थ भूमि को छोड़ कर कहीं जा भी नहीं सकते, और न वे लोग क़िलेदार की आज्ञा का उल्लङ्घन ही कर सकते हैं।

चन्द्रपुर आदि कई गाँवों की प्रजा ने मेवाड़ के अनगिनत युद्धों में अस्त व्यस्त होकर अपनी रक्षा का दूसरा उपाय न देख चिरकाल से सूर्यमहल की अधीनता स्वीकार कर ली थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब तक सूर्यमहल क़िला राठौड़ों के हाथ में रहा तब तक चन्द्रपुर की प्रजा को कुछ भी कष्ट न था। किन्तु तिलकसिंह की मृत्यु होजाने पर जब दुर्जयसिंह ने सूर्यमहल क़िले पर अपना आधिपत्य जमाया तब प्रजा ने भी उनकी अधीनता स्वीकार कर ली। दुर्जयसिंह स्वभावतः अत्यन्त क्रोधी थे। चन्द्रपुर-निवासियों को मृत तिलकसिंह के प्रति अनुरक्त देख वे उन लोगों पर और भी क्रुद्ध हो उठे। वे अपने अधीन रहनेवाली प्रजा को प्रमाण से अधिक दण्ड देते थे। सर्वदा उसका अपमान करते और पहले से अधिक भूमि का कर माँगते थे। कभी कभी क्रोधान्ध होकर प्रजा का सर्वस्व भी हरण कर लेते थे। गाँव का मुखिया वृद्ध गोकुलदास अपने बेटे केशवदास से जब तब कहा करता था—यह अत्याचार अधिक दिनों तक न चलेगा। तिलकसिंह का राज्य कुछ दिन में फिर उन्हीं के पुत्र के हाथ में जायगा। ईश्वर करे, शीघ्र ही वह दिन आवे।

दुर्जयसिंह का अत्याचार लोगों को दिन पर दिन असह्य होने लगा। यहाँ तक कि अन्त में सारी प्रजा बिगड़ गई। सब लोग परस्पर कहने लगे—हम दुर्जयसिंह का दासत्व क्यों स्वीकार करेंगे? हम लोगों के प्रभु तिलकसिंह मारे गये तो क्या दुर्जयसिंह उनके उत्तराधिकारी हैं? हम लोग उनके अधीन होकर क्यों रहें? डाकू क्या कभी क़िले का मालिक हो सकता है? इस डाकू के विरुद्ध आचरण करने से क्या हम लोगों के धर्म की हानि हो सकती है? हम लोगों ने अपनी मौरूसी जायदाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुर्जयसिंह के हाथ कुछ बेच नहीं दी है। तिलकसिंह का कोई उत्तराधिकारी आवे, हम लोग ख़ुशी से उसकी अधीनता स्वीकार करेंगे। दूसरे की अधीनता तो कभी स्वीकार न करेंगे।

प्रजा का भाव क्रमशः इस प्रकार बदलने लगा। बात की बात में यह बात सर्वत्र फैल गई। दुर्जयसिंह स्वाभाविक क्रोधी थे, प्रजा का यह विद्रोह भाव देख कर उनका क्रोध और भी प्रज्वलित हो उठा। प्रजा को उचित शिक्षा देने के लिए उन्होंने गाँव के कुछ प्रधान व्यक्तियों को अपने क़िले में पकड़वा मँगाया और समस्त प्रजा को अपराधी ठहरा कर सभी से जुर्माने का रुपया वसूल किया। गोकुलदास के पुत्र केशवदास पर विद्रोहिता का दोष आरोपण कर उसे प्राणदण्ड दे दिया।

इस घटना के तीन वर्ष बाद आज दुर्जयसिंह सेना को साथ ले इस (चन्द्रपुर) गाँव के बीच से होकर सड़क सड़क जा रहे थे। उन्होंने सड़क के पार्श्ववर्ती गेहूँ के खेत में एक लम्बे मनुष्य को देखा। गोकुलदास को पहचान कर बड़ी घृणा से कहा—वृद्ध शृगाल, तू मालगुज़ारी देने को राज़ी है या अपने जातीय धर्म के अनुसार फिर प्रजा को बहका कर कोई षड्यन्त्र रच रहा है?

सेना को आते देख गोकुलदास दूर जा खड़े हुए थे। क़िला-धीश के द्वारा इस प्रकार तिरस्कृत होकर वे क्रुद्ध हुए। किन्तु दास क्रुद्ध होकर भी स्वामी का कर ही क्या सकता है। उन्होंने पुत्रहन्ता दुर्जयसिंह को धीरे धीरे प्रणाम किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुर्जयसिंह ने कठोर स्वर में फिर वही बात पूछी । दुर्जयसिंह की बात सुन कर वृद्ध का मुँह क्रोध से लाल हो गया, तथापि उसने क्रोध के आवेग को रोककर केवल इतना ही कहा—महाराज, षड्यन्त्र रचना या प्रजा को बुरी सलाह देना हमारे वंश का धर्म नहीं है ।

दुर्जयसिंह—तो कपट-पूर्ण भीरु शृगाल के वंश में सुविचार का अभ्यास कब से हुआ है ? तुम्हारे पराधीन नीच वंश में कब से किसने अच्छी चाल चलाना सीखा ?

गोकुलदास—हम लोग दुर्भाग्यवश पराधीन अवश्य हैं, किन्तु पराधीन होने पर भी हम लोगों ने भीरुता का अब तक अवलम्बन नहीं किया है । हम लोग वशी हैं, फिर भी हैं तो राजपूत ही ।

दुर्जयसिंह के साथी अश्वारोहियों ने देखा कि बुद्धि-हीन गोकुलदास आपही अपनी मृत्यु को बुला रहा है । गोकुलदास की बात से अत्यन्त क्रुद्ध होकर दुर्जयसिंह बोले—"अरे, वृद्ध नराधम, तेरे पुत्र को प्राणदण्ड होगया, तो भी तूने अब तक राजा के प्रति यथोचित आचरण करना नहीं सीखा । अच्छा, मैं अभी तुझे शिक्षा देता हूँ ।" यह कह कर दुर्जयसिंह ने उस निरपराधी वृद्ध को लातों से मार कर धरती पर गिरा दिया । सैनिक उस स्थान से चुपचाप आगे बढ़े । उसके पीछे दुर्जयसिंह भी चले ।

कुछ देर में वह बूढ़ा गोकुलदास सँभल कर उठा । राज-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूतों के लिए यद्यपि इससे बढ़ कर अपमान की बात दूसरी नहीं होती तथापि उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। इस असह्य अपमान को उस चतुर वृद्ध ने चुपचाप सह लिया। उसने धीरे धीरे एक बार आकाश की ओर देखा, और फिर उस कठिन अत्याचारी दुर्जयसिंह की ओर देखा। बहुत देर पीछे गोकुलदास ने कहा—दुर्जयसिंह, तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। मैं पुत्र-शोक को एक प्रकार से भूल गया था, आज तुमने उस बात का स्मरण करा दिया। यदि गोकुलदास कुछ दिन जीता रहा तो इसका प्रतिफल तुम्हें बिना दिये न रहेगा।

चौथा परिच्छेद

सालुम्बरा

आज सालुम्बरा का पहाड़ी क़िला क्या ही शोभायमान हो रहा है। पहाड़ की चोटियों पर चन्दावतों की पताकायें पवन के साथ खेल रही हैं। क़िले की दीवार पर चारों ओर जहाँ तहाँ रङ्ग-बिरङ्ग के झंडे फहरा रहे हैं। तोरण बन्दन-वारों की शोभा न्यारी ही छाई हुई है। चन्दावत वंशी जितने सैनिक हैं वे सभी सालुम्बरा के क़िले में इकट्ठे हुए हैं। कोई दो सौ, कोई पाँच सौ, और कोई सहस्र संख्यक सैनिकों को लेकर चन्दावतों के अधिपति रावत कृष्णसिंह के यहाँ आये हैं। सभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सैनिक क़िले के भीतर एकत्र होकर राजा कृष्णसिंह के दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन लोगों ने पहाड़ के नीचे, समतल-भूमि में अपना अपना डेरा डाला है। शिविरों के ऊपर चन्दावतों की पताका फहरा रही है और शिविर के चारों ओर जुझाऊ बाजे बज रहे हैं। विजय का डंका पीटा जा रहा है। इन बाजों के साथ साथ योद्धाओं की हास्यध्वनि और उल्लास-भरी बोलियाँ भी सुन पड़ती हैं। प्रातःकाल के सूर्य की सुनहरी किरण सफ़ेद शिविरों पर अपनी छटा छहरा रही है। सबेरे की ठण्डी हवा में असंख्य पताकायें एक साथ नृत्य कर रही हैं। युद्ध के बाजे चारों ओर—क्या घर, क्या जङ्गल, क्या खेत, क्या पहाड़ी प्रदेश और क्या पहाड़ के शिखर सर्वत्र—उत्साह-वर्द्धक शब्दों को प्रतिध्वनित कर रहे हैं। चन्दावतों का यह रण-वाद्य इसके पहले भी भारतवर्ष में कई बार बज चुका है और रणभूमि में शत्रुओं के हृदय को कम्पायमान कर चुका है।

रण-वाद्य के साथ ही साथ और तरह के बाजे भी बज रहे हैं। फागुन का महीना है। चारों ओर होली की धूम मची है। नगर-निवासिगण दल बाँध बाँध कर घर, आँगन, गली-चौहट्टों में गीत गा रहे हैं; झोली भर भर कर अबीर उड़ा रहे हैं। सभी लोग आनन्द में ऐसे निमग्न हो रहे हैं कि मेवाड़ की सन्निहित विपत्ति को एक बार ही भूल गये हैं। होली के उत्सव में आज भाँति भाँति के गीत गाये जा रहे हैं। तरह तरह के हँसी खेल हो रहे हैं। इस हँसी खेल और अबीर की मार से आज किसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का छुटकारा नहीं। क्या स्त्री क्या पुरुष, क्या बालक क्या वृद्ध, सभी आज होली के रङ्ग में रँगे हुए हैं। इस होलिकोत्सव में छोटे-बड़े का कुछ ख़याल नहीं रहता। सभी समान भाव से बर्ताव करते हैं। सालुम्बरा क़िले के सेना-पति और प्रधान मन्त्री भी आते समय रास्ते में अबीर की भरमार से घबरा गये। शहर के लोगों ने उन्हें लाल लाल कर दिया। वे लोग भी आज का बीभत्स कौतुक देख कर रुष्ट न हुए। कहीं छोटे छोटे बालक वृद्ध की सफ़ेद दाढ़ी को अबीर से लाल कर हैं। वृद्ध भी ख़ुशी से अपनी दाढ़ी रँगा रहे हैं। लड़के कहीं दूर ही से किसी वृद्ध पर पिचकारियाँ चलाते हैं और जब वह वृद्ध उन लड़कों को मारने दौड़ता है तब वे उसकी आँखों में अबीर झोंक कर तालियाँ बजाते हैं और वह बूढ़ा आदमी उन्हें गालियाँ देकर आँखें मलता हुआ ठिठक कर खड़ा हो जाता है। योंही सर्वत्र भाँति भाँति के हँसी खेल हो रहे हैं। कृष्णसिंह के महल से लेकर दरिद्र की कुटी तक सब स्थान आज अबीर और गुलाल से लाल हो गया है।

पहर दिन चढ़े रावत कृष्णसिंह सभागृह में आये। चारण और बन्दीगण चन्दावत वंश का गुण गान करने लगे। सभागृह में दुर्जयसिंह प्रभृति जितने अधीन सौम्य सामन्तगण थे सब भक्तिपूर्वक उठ खड़े हुए और "महाराज की जय" कह कर सभी ने अभिवादन किया। कृष्णसिंह ने सिर झुका कर अपने शुभचिन्तक योद्धाओं का सम्मान किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रावत कृष्णसिंह सिंहासन पर आ बैठे। उनकी बाईं और दहनी ओर सैन्य सामन्तगण खड़े हैं। सभी के हाथ में ढाल और तलवार है। कृष्णसिंह ने अनुग्रह-पूर्ण दृष्टि से एक बार उन वीरों की ओर देख कर बैठने का संकेत किया। सभी यथा-योग्य स्थान में बैठे। ढाल तलवार के परस्पर संघर्षण का शब्द उस विशाल सभागृह में प्रतिध्वनित हो उठा।

जब सभी स्थिर होकर बैठ गये तब वृद्ध कृष्णसिंह गम्भीर स्वर से बोले—वीरगण! आज आप लोग यहाँ क्यों एकत्र हुए हैं? इसका कारण आप लोगों को विदित है। चित्तौर तुर्कों के हाथ में है। मेवाड़ की सारी उपजाऊ ज़मीन और समस्त सम-तलभूमि उन्हीं के हाथ में है। अब केवल पहाड़ और जङ्गल बच रहे हैं, जिनमें मेवाड़ की स्वाधीनता लक्ष्मी छिपी हुई है। म्लेच्छगण अब वहाँ से भी उसे हरण करना चाहते हैं।

उत्तर कमलमीर से लेकर दक्षिण रुक्मनाथ पर्यन्त जितने पहाड़ी प्रदेश हैं, सभी महाराना के अधीन हैं। बची हुई जितनी प्रशस्त भूमि है सब मुग़लों के अधिकार में है। किन्तु उस भूमि से मुग़लों को कोई लाभ नहीं। मुग़लों के अधीन जितने प्रदेश हैं, वे सभी महाराना के आदेशानुसार जनशून्य हो रहे हैं। जितनी आबाद भूमि थी, जितनी बस्तियाँ थीं, सभी अरण्यप्राय हो रही हैं। वहाँ न अब कोई कृषक खेती करता है, और न ग्वाले गाय-भैंसें चराते हैं। महाराना की आज्ञा से उस प्रदेश के समस्त अधिवासी पहाड़ी प्रदेश में आ आकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बसे हैं । बनास और रवी नदी के तीर की जो प्रसिद्ध उपजाऊ भूमि थी वह इस समय जङ्गल और जङ्गली जानवरों से भर गई है । अर्वली पहाड़ के पूरब ओरवाला सारा मेवाड़ प्रदेश मनुष्यों से ख़ाली पड़ा है । सभी प्रजा घर द्वार छोड़कर जङ्गल में आ बसी है । कौन ऐसी नीच प्रजा है जो महाराना की आज्ञा का उल्लङ्घन कर सके ? महाराना स्वयं इन प्रदेशों को कभी कभी देखने जाते हैं । सालुम्बरा ने कभी उनका साथ नहीं छोड़ा । हमने बराबर उनका साथ दिया है । उनके साथ जाकर हमने अर्वली के पूर्ववर्ती प्रदेश की निर्जनता देखी है । वहाँ हमने जङ्गल की निस्तब्धता देखी है और जिन खेतों में अन्न उपजते थे उनमें ढेर के ढेर तृण उपजे हुए देखे हैं । जिस रास्ते हो कर लोग जाते-आते थे वहाँ अब बबूल ही बबूल देख पड़ते हैं; एक भी मनुष्य अब उस रास्ते से नहीं चलता । जिस घर में पहले मनुष्य रहते थे उसमें अब जङ्गली पशुओं को रहते देखा है । एक गड़रिया बनास नदी के किनारे, छिप कर, भेड़ें चरा रहा था । उसका मृतकलेवर अब भी पेड़ में टँगा हुआ है । हमारे कहने का अभिप्राय यह कि प्रजा में ऐसा कोई नहीं है जो महाराज की आज्ञा को न माने ।

मुग़ल समझते होंगे कि "मेवाड़ की आबाद भूमि इस समय बिलकुल ख़ाली पड़ी है । जहाँ तहाँ जंगल ही जंगल दिखाई देते हैं । महाराना से युद्ध करने के लिए जंगल पार करके पहाड़ी प्रदेशों में जाना होगा । वहाँ मनुष्यों के रहने योग्य स्थान नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है, सेना की खाद्य-सामग्री नहीं है।" वे लोग यह भी सोचते होंगे कि "इस समय सूरत आदि पश्चिम समुद्र के बन्दरों के साथ जो दिल्ली का वाणिज्य-व्यवहार था वह रोक दिया गया है। इस कारण जंगल के भीतर से ही आक्रमण के लिए जाना ठीक होगा।" वे भले ही ऐसा समझें-सोचें, पर हम लोग भी उनके आगमन की बात सुन कर सोये न रहेंगे।

हम लोगों ने मेवाड़ के बाहरी हिस्से की रक्षा का इस प्रकार उपाय सोचा है—पहाड़ी प्रदेश के अन्तर्गत प्रत्येक क़िले में, प्रत्येक तराई में, सैनिक रहेंगे। जितने चन्दावत वीर हैं सबके सब शीघ्र ही महाराना के पास पहुँचेंगे। अन्यान्य सैनिक भी चारों ओर से आ रहे हैं। सम्मुख-युद्ध के लिए महाराना के पास सेना की कमी न रहेगी। किसान लोग युद्ध करना नहीं जानते, वे अपने अपने आवासस्थल की रक्षा करेंगे। जंगली मनुष्यों में भी ऐसी बहुत जातियाँ हैं जो धनुष-बाण लेकर लड़ाई में हम लोगों का साथ देंगी। दक्षिण ओर से भीलों को, पूरब से मीर जातियों को और पच्छिम से मीनाओं को मुग़लों के साथ लड़ने के लिए बुला भेजेंगे। सुना है, महाराज मानसिंह दिल्ली-पति के बेटे को साथ ले बड़ी धूमधाम से आ रहे हैं। हम लोग भी उनसे भिड़ने के लिए तैयार हैं।

वीरगण! आज होली का दिन है। नगर-निवासियों के हाथ से न आप लोग बच सकते हैं न हमीं। आज रक्तवर्ण से रञ्जित होने ही में सभी की शोभा है। आप लोगों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्नत मस्तक, चौड़ी छाती और विशाल बाहुओं पर अबीर की क्या ही शोभा प्रकट हो रही है । पोशाकें लाल हो गई हैं । शहर के हठी लोगों ने आज हमारे सफ़ेद बाल और सफ़ेद दाढ़ी-मूछ को भी लाल कर दिया है । घर-बाहर, घाट-बाट सभी लाल हो गये हैं । होली का एक दूसरा दिन भी आ रहा है। वह केवल योद्धाओं के वास्तविक आनन्द और उत्सव का दिन है। उस दिन योद्धाओं के मस्तक और हृदय और ही तरह से लाल होंगे । उस दिन इस पहाड़ी प्रदेश की भूमि मनुष्यों के लोहू से लाल होगी। आज आप लोग जैसा कुछ गान-वाद्य सुन रहे हैं उस दिन का वाद्य-गान इससे विलक्षण सुनेंगे। उस दिन का गाना बजाना बड़े समारोह का होगा । उस युद्ध-महोत्सव-दिन के लिए हमारे वीरगण तैयार हों ।

सालुम्बरा-पति के इस उत्साहपूर्ण वाक्य से सभी सैनिक पुलकित हुए। सबके हृदय में वीर-रस का संचार हो आया । सभी ने एक स्वर से सालुम्बराधीश के प्रस्ताव का अनुमोदन किया । सभी ने म्यान से तलवार खींच कर, खड़े हो, महाराज की जय-घोषणा की। जय शब्द से सभा-गृह भर गया । उसकी प्रतिध्वनि दूर दूर तक पहाड़ों में फैल कर गगन-मण्डल में विलीन हुई । इधर सालुम्बरा के वृद्ध चारणगण उनके पूर्वकाल की बीती अवस्था और वीरता का वर्णन इस प्रकार करने लगे:—

वीरगण, आप लोग युवा हैं । आप लोगों की दृष्टि भविष्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही की ओर दौड़ती होगी । आप लोगों की आशा, प्रतिज्ञा, सोच-विचार सब भविष्य ही की ओर दौड़ते होंगे । किन्तु वृद्धों की दृष्टि बीती हुई बात की ओर ही पहले जाती है । वह अतीतकाल की घटना, काली घटा की तरह, मेरे हृदयाकाश में व्याप्त हो रही है । उस घटा ने मेरी मानसिक दृष्टि को ढक लिया है । मैं बाहरी दृश्य देखने में समर्थ नहीं । मैं उस घटा के भीतर एक और ही दृश्य देख रहा हूँ; एक और ही प्रकार के वीर का इङ्गित, आकार और साहस देख रहा हूँ । सुनिए ।

हम लोगों के महाराना अब चित्तौर में नहीं हैं । वे पर्वत की गुफा में रहते हैं । वे पेड़ के नीचे बैठ कर अपने बाल-बच्चों का लाड़ प्यार करते हैं । निर्जन वन ही इस समय उनका अन्तःपुर हो रहा है । मैंने बचपन में एक व्यक्ति को और इसी रूप में देखा था । वे भी पर्वत की कन्दरा में निवास करते थे । जिनका ऊँचा महल किसी समय आकाश से बातें कर रहा था, जिनका विशाल भवन पर्वत की चोटी पर शोभायमान था, वे गुफा में छिप कर समय बिता रहे थे । ये सब पहले की बातें मेरे हृदय में दूरध्वनित संगीत की भाँति जाग्रत हो रही हैं । सुनिए ।

वही बालक एक दिन, बड़े भाई के साथ, तपस्विनी देवी के पहाड़ पर गया था । निडर बालक अन्य आसन छोड़ कर सिंहचर्म पर बैठ गया । तपस्विनी काँप उठी और बोली—"जो अभी सिंहचर्म पर बैठा है वह एक दिन सिंहासन पर बैठेगा" ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह सुन कर जेठे भाई को क्रोध हो आया । उसने छोटे भाई को मार पीट कर उस आसन से उठा दिया । वह ऐसा क्यों नहीं करता ? राजपूत ही तो था । लड़का अपनी एक आँख गवाँ कर रोता हुआ वहाँ से भागा । भाग कर कहाँ गया ?

उसे एक बार भेड़ चरानेवालों के यहाँ ढूँढ़ो । गड़रियों को नहीं मालूम कि उनका यह मलिन-वेषधारी तेजःपूर्ण नौकर कौन है । यदि उन्हें मालूम होता तो क्या वे भेड़ चराने में इस बालक को अपटु जान कर उसे अपने यहाँ से निकाल देते ? वह बालक गड़रियों से तिरस्कृत होकर कहाँ गया ?

किसी जङ्गल में तो नहीं ? वह देखो, श्रीनगर के वीर करीमचन्द का एक योद्धा थक कर कैसे सुख से सो रहा है । बरगद का पेड़ ही उसके लिए चन्द्रातप है, घास ही शय्या है और तलवार ही तकिया है । तीसरे पहर के सूर्य की किरण पत्तों के छिद्र से उस बालक के मुँह पर पड़ रही थी । यह देख कर एक बड़ा भारी साँप फन फैला कर छाया कर रहा है । क्या यह साँप करीमचन्द के एक सामान्य सैनिक के लिए फन फैलाये हुए है ? नहीं, यह सामान्य सैनिक नहीं, यह कोई आंशिक पुरुष है । यह वही राजपूत बालक है जो अपना भेस छिपाये है । उस बालक के लिए सर्प मानो राजच्छत्रधारी है ।

कुछ समय के अनन्तर वही बालक सिंहासन पर विराजमान हुआ; छत्रधारी छत्र लेकर खड़े हुए । चँवरवाले दोनों ओर खड़े होकर चँवर झलने लगे । यह सुनो, इतना कोलाहल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहाँ हो रहा है ? संग्रामसिंह के अस्सी हज़ार अश्वारोही आज धरती को कँपा रहे हैं। उनकी असंख्य विजय-पताकाओं से आकाश भर गया है। सर्वत्र लाल ही लाल दिखाई दे रहा है। शतद्रु से लेकर विन्ध्याचल तक और सिन्धु से यमुना नदी तक उनका राज्य फैला हुआ है। अठारहवीं वार युद्ध में विजयी हो कर उन्होंने इतना बड़ा राज्य पाया है । यह वीर पृथ्वीराज की तरह, फिर आर्यावर्त को एकच्छत्र तो न करेगा ? किन्तु भारतवर्ष के पच्छिम ओर से भयङ्कर मेह की घटा उमड़ चली, जिसने भारतवर्ष में आकर झड़ी लगाई। नये आक्रमणकारी बाबर के मुग़ल-सैनिक टिड्डीदल की तरह, भारत में उतर आये। संग्रामसिंह ने संग्राम में बड़ी वीरता दिखलाई फिर भी उन्हें बाबर पर विजय प्राप्त न हुई। किन्तु उस वीर ने जो दृढ़ प्रतिज्ञा की उसे सुनिए—"जब तक युद्ध में बाबर को न हरावेंगे तब तक चित्तौर में प्रवेश न करेंगे। मरुभूमि हमारी शय्या होगी और आकाशरूपी शामियाने ही के नीचे हम निवास करेंगे।" संग्रामसिंह ने अपनी प्रतिज्ञा को जीते दम तक निबाहा। क्या पृथ्वीराज के सिंहासन पर फिर कोई हिन्दू राजा बैठेगा ? कौन कह सकता है कि वह म्लेच्छ-पददलित सिंहासन फिर कभी हिन्दूसन्तान के पैरों का स्पर्श करेगा ?

मैं वृद्ध हुआ। आँखों से अब दिखाई नहीं देता। संग्रामसिंह कहाँ गये? उनके अधीन १६ राजा, शताधिक रावत और रावल कहाँ गये ? पाँच सौ हाथी और अस्सी हज़ार अश्वा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोही सिपाही कहाँ गये ? अब वह प्रकाश न रहा । वह महातेज चिरकाल के लिए छिप गया ।

छिप गया है सही, पर अभी तक उसका नाश नहीं हुआ है । वीरगण, आप लोग एक बार साहस करें, जी को कड़ा करके मज़बूत हाथ से तलवार पकड़ें, बर्छी को ऊपर उठावें और ललकार कर लड़ाई के खेत में जाकर खड़े हों । जैसे वायु अपनी प्रबल शक्ति से तिनकों को उड़ा कर कहीं से कहीं ले जाता है वैसे ही आप लोग अपनी प्रचण्ड वीरता से तुर्क-सेना को समरभूमि से दूर भगा दें । चित्तौर को जय शब्दों से भर दें । इस वृद्ध की कही हुई पूर्वकालिक घटना को स्वप्न ही न समझें । आप लोग चाहेंगे तो फिर मेवाड़ का पहला दिन आवेगा । संग्रामसिंह की तरह प्रतापसिंह भी जङ्गल और गुफा को त्याग कर सिंहासन पर सुशोभित होंगे । संग्रामसिंह की तरह प्रतापसिंह का भी नाम दिल्ली के दर्वाज़े तक, समुद्र के किनारे तक और हिमालय के गगनस्पर्शी ऊँचे शिखर तक, प्रतिध्वनित होगा ।

इतना कह कर वृद्ध चारण चुप हो रहे । कुछ देर सभागृह में सन्नाटा छाया रहा । सहसा सैकड़ों वीर उच्च स्वर से बोल उठे "महाराना की जय ।" वीरों के हुंकार से सालुम्बरा का पहाड़ कम्पित हुआ । वह शब्द पहाड़ के निम्नवर्ती सैनिकों ने सुना और इसी तरह "महाराना की जय" मना कर उन्होंने भी सिंहनाद किया ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चारणदेव जब अपनी जगह आ बैठे तब सालुम्बरा के स्वामी ने उपस्थित योद्धाओं की ओर देख कर गम्भीरस्वर से कहा—वीरगण, युद्ध में अब अधिक विलम्ब नहीं है। युद्ध के समय सालुम्बरा सदाही से राना के दहने हाथ का काम देता है। हम केवल सैन्य-संग्रह करने के लिए यहाँ आये हैं। चन्दावत-वंशी प्रधान प्रधान वीरगण अपने सैन्य के साथ उपस्थित हुए हैं। हम लोग कलही महाराना की आधुनिक राजधानी कमलमीर की ओर रवाना होंगे। हम लोगों की आज की सभा विसर्जन हुई। बन्धुगण, आज होली का दिन है। चलते चलो, एक बार इस साल की होली का उत्सव देख लें। अगले साल फिर होली देखेंगे या नहीं, यह कौन कह सकता है!

महल के सामने, विस्तृत मैदान में, वीरगण घोड़े पर सवार होकर होली खेलने लगे। घोड़े के चलाने और कुंकुमा फेंक कर मारने में निपुणता दिखाने लगे। परस्पर कुंकुमे की मार से सभी का सिर से लेकर पाँव तक लाल हो गया। कई रङ्गों के घोड़े लाल ही लाल नज़र आने लगे। घोड़ों की टाप और वीरगणों की आनन्दध्वनि चारों ओर सुनाई देने लगी। घोड़े कभी तीर की तरह छूटते हैं, कभी एकाएक खड़े हो जाते हैं, और कभी कूद कर दूर भागते हैं, मानो वे भी इस होली के दिन उन्मत्त होकर क्रीड़ा कर रहे हैं। सैनिक परस्पर अबीर गुलाल फेंक कर अपना अङ्ग बचाने में बड़ी निपुणता दिखा रहे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं। यों ही पहाड़ के नीचे सैन्य और शहर में शहरी लोग होली खेलने लगे। इस वार्षिक आनन्दध्वनि से सालुम्बरा का पहाड़ प्रतिध्वनित होने लगा। कौन जाने इन सेनापति और सैन्यगणों में कितने व्यक्ति अगले साल इस प्रकार होली खेलेंगे? कई हज़ार योद्धा तो, उसके पहले ही, हल्दीघाटी की लड़ाई में वीरता दिखाकर दीर्घनिद्रा के स्वर्गीय सुख में निमग्न होंगे।

पाँचवाँ परिच्छेद

"हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।"

भगवद्गीता

चन्दावत कुल के सर्वश्रेष्ठ सालुम्बरा क़िले के अधिप रावत कृष्णसिंह समस्त दलबल साथ ले कई एक दिन में कमलमीर-क़िले में महाराना से जा मिले। अन्यान्य राजा लोग भी अपने अधीन सैन्यों को साथ ले ले कर आने लगे। विविध वंश के राजपूत वीर अपना अपना दल लेकर आये। सङ्गावत (सेंगर) कुल के अधिप दो सहस्र सेना साथ ले आये। चन्दावत कुल की ही एक शाखा सङ्गावत है। वेदनोर के प्रसिद्ध राठौड़ वंशीय भूपगण कई सहस्र सेना साथ लेकर आये। मेवाड़ में इन लोगों से बढ़कर कोई साहसी योद्धा न था। अकबर ने जब चित्तौर पर आक्रमण किया था तब इसी राठौड़ वंश के वीर-ड़ामणि जयमल्ल ने असाधारण वीरता दिखलाई थी और अन्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में बहुत सी शत्रु-सेना को समरशायी करके आप अकबरशाह के हाथ से हत हुए थे। उनके पुत्र अब भी इस बात को भूले नहीं हैं। वे अपने पिता की वीरता का अनुकरण करने ही के लिए महाराना के पास आये हैं। चन्डावत की एक अन्य शाखा जगावत-वंशीय वीर कैलवा से बहुत सेना लेकर कमलमीर आये। इस जगावत-वंश के सपूत पुत्त नामक वीर ने चित्तौर-विध्वंस के समय अतुल पराक्रम और वीरता दिखलाई थी। सालुम्बराधीश की मृत्यु होने पर सोलह वर्ष के पुत्त ने, अकेले, चित्तौर के दर्वाज़े की रक्षा की थी। सम्मुख-युद्ध में इन्होंने अकम्पित हृदय से जूझती हुई अपनी माता और सहधर्मिणी की मृत्यु देखी थी और फिर बड़ी वीरता के साथ लड़ कर उसी दर्वाज़े पर प्राण दे दिये। किन्तु अपनी जगह से वे एक पग भी पीछे नहीं हटे। उन्हीं का परिवार और बन्धु-बान्धव इस समय जगावत-कुल के प्रधान हैं, और जगावत-वंश का नाम रखने के लिए कैलवा से आकर इस समय महाराना के पास खड़े हैं। दैलवारा से झाला-वंशीय, वेदला और कोठारी से चौहान, बिजली से प्रमर (पवाँर) और अन्यान्य स्थानों से भिन्न भिन्न वंश के वीर योद्धा, मेघराशि की तरह, महाराना प्रतापसिंह के चारों ओर इकट्ठे होने लगे। देखते ही देखते २२ हज़ार सेना कमलमीर में आकर इकट्ठी हुई। उस समय इन योद्धाओं के समान वीर धीर साहसी और देशानुरागी योद्धा सारे भारतवर्ष में भी न थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज वसन्तोत्सव का अन्तिम दिन है । चारों ओर गाने की धूम मची है । चारणगण वासन्तिक गीत गा रहे हैं, जिसके बीच बीच में युद्ध का वर्णन सुन कर वीरों का हृदय उत्साह से फड़क रहा है । मेवाड़ का प्राचीन गौरव, मेवाड़ की दुर्दशा और मेवाड़ के सन्निकट विजय का गान वीरों को प्रोत्साहित कर रहा है । इस आधी रात के समय सभी सेना उत्सव के आनन्द में रँगी हुई है ।

इस उत्सव-कार्य से बहुत दूर एक अन्धकारमय पहाड़ की चट्टान पर एक योद्धा अकेला टहल रहा था । और न मालूम क्या सोचकर वह बीच बीच में खड़ा हो रहता था । इतना अवश्य कह सकते हैं कि वह वासन्तिक उत्सव का गीत सुनने के लिए खड़ा नहीं होता था । कभी कभी वह, तराई के चारों ओर जितनी दूर तक दृष्टि जा सकती थी, ध्यान से देखता था । कभी असंख्य सेना की ओर देखता था । कभी अपने विशाल हृदय पर हाथ रख कर आकाश की ओर ताकता था । यह दूसरा कोई नहीं था । ये थे स्वयं महाराना प्रतापसिंह ।

प्रतापसिंह की कमर में तलवार लटक रही है । पास ही एक पेड़ के नीचे तृण की शय्या बिछी है । चित्तौर को बिना हस्तगत किये यह दृढ़प्रतिज्ञ योद्धा दूसरी शय्या पर शयन न करेंगे । इन्होंने प्रतिज्ञा की है कि "जब तक संकल्प पूरा न होगा तब तक सोने-चाँदी का स्पर्श न करेंगे, पत्ते के अतिरिक्त किसी अन्य पात्र में भोजन न करेंगे ; कोई बहुमूल्य भूषण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धारण न करेंगे और बाल भी न बनवावेंगे।" प्राचीन भारत के ऋषि भी इष्ट-साधन के लिए प्रतापसिंह की अपेक्षा कठिन व्रत धारण नहीं करते थे। संसार के बड़े बड़े वीर भी, अभीष्ट सिद्धि के लिए, प्रतापसिंह की भाँति प्राणपण से उद्यम नहीं कर सकते थे।

सारे भारतवर्ष का ऐश्वर्य, वीरता, बुद्धि-बल, बाहु-बल, और अस्त्र-बल प्रतापसिंह के विरुद्ध एकत्रित है। साथ ही राजस्थान के असाधारण वीर, मारवाड़, अम्बर, बीकानेर, बूँदी आदि राज्यों के सैन्यबल इकट्ठे हुए हैं। इस निर्जन पहाड़ पर अँधेरे में जो वीर अकेले खड़े हैं, वे समग्र भारत के विरुद्ध अकेले ही लड़ेंगे। उन्होंने ऐसा ही प्रण किया है। वे स्वदेश के लिए, स्वधर्म-स्थापन के लिए और स्वाधीनता के लिए युद्ध करेंगे और अन्त में मेवाड़ के बचे हुए पहाड़ी प्रदेश में स्वाधीन होकर रहेंगे—यही उनका संकल्प है।

आधी रात के बाद महाराना के कई प्रधान सेनापति उस स्थान में उपस्थित हुए। महाराना इन्हीं लोगों के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनको आते देख महाराना की चिन्ता दूर हुई। उन लोगों को उन्होंने सादर अपनी ओर बुलाया।

उस पहाड़ की चट्टान पर सभी बैठ गये। प्रतापसिंह ने कहा—वीरगण, आप लोगों का साहस और उत्साह देखकर हम बहुत प्रसन्न हैं। इस उच्च शिखर पर से इस सेना को देख कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम अत्यन्त उल्लसित हुए हैं। हमने आप लोगों को धन्यवाद देने ही के लिए इस एकान्त स्थान में बुलाया है।

सालुम्बराधीश रावत कृष्णसिंह राना के दहनी ओर बैठे थे। वे बोले—"महाराना! युद्ध के समय, या किसी सङ्कट के समय मेवाड़ के योद्धा क्या महाराना का साथ छोड़ सकते हैं? आप ये जो असंख्य सेना देख रहे हैं सो उनके हृदय का शोणित और हम लोगों के हृदय का शोणित महाराना का है। महाराना की आज्ञा पाते ही यह शोणित बह चलेगा।

प्रतापसिंह—कृष्णसिंह, आपका ऋण हम कभी चुका नहीं सकेंगे। जिस दिन हमारे पिता की मृत्यु हुई; और जिस दिन भ्राता योगमल्ल सिंहासन पर बैठे थे, उस दिन भरी सभा में आप ही ने उनसे कहा था, महाराज! आपको धोखा हुआ है। यह स्थान आपके भाई का है। उस दिन आप ही ने हमारे म्यान की तलवार को हिलाकर हमारी प्रतिष्ठा बढ़ाई थी—जब तक यह तलवार हमारे हाथ में रहेगी तब तक सालुम्बराधीश हमारे दहने हाथ रहेंगे।

कृष्णसिंह—"सालुम्बरा इसके अतिरिक्त अन्य पुरस्कार नहीं चाहता। स्वामी के धन की रक्षा करना ही सालुम्बरा का पुरुष-परम्परागत धर्म है। स्वामी का सन्तोष ही उसका पुरुषानुगत पुरस्कार है।

इसके बाद महाराना ने राठौरवंशीय जयमल्ल तथा जगावत-वंशीय पुत्त की सन्तान को, और आत्मीयगणों को पुकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर कहा—चित्तौर नष्ट होने के समय जयमल्ल और पुत्त ने प्राणदान कर जो यश प्राप्त किया था उस यश को प्राप्त करने की अभिलाषा क्या आप लोग भी फिर चित्तौर को अपने अधिकार में लाकर करते हैं ?

उन लोगों ने कहा—फल ईश्वर के हाथ है । हम प्रयत्न करने में न चूकेंगे।

महाराना ने फिर कोठारी के चौहानवंशीय वीर को पुकार कर कहा—पिता जब वधिक रणवीर के हाथ से चुपचाप लाये जाकर इस कमलमीर में छिप कर रहने लगे, और जब हमारे पिता पर सभी ने सन्देह किया, तब चौहानकुल के स्वामी ही ने उनके साथ भोजन करके सबके सन्देहों को दूर किया था। चौहानवंशियों में यह स्वामिभक्ति अब भी उसी प्रकार जाग रही है। वे अब भी इस धर्म को भूले नहीं हैं।

चौहान—महाराज, चौहानवंशी अपने धर्म को कभी भूलनेवाले नहीं।

प्रतापसिंह ने बिजली-पति की ओर देख कर कहा—बिजली-नरेश आप ही के पिता ने हमारे पिता को उस दुरवस्था में अपनी कन्या देकर उदारता दिखलाई थी। आप हमारे मामा हैं। सङ्कट के समय आप अपने भानजे को न भूलेंगे। आप प्रताप के प्रति यत्नवान् होंगे; इस आसन्न-युद्ध में प्रताप के गौरव की रक्षा करेंगे और प्रताप के नाम को चिरस्थायी करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिजली-पति ने बड़े उल्लास से कहा—आपके गौरव की रक्षा के लिए पवाँरवंशी राजपूत आनन्दपूर्वक प्राण देने के लिए तैयार हैं।

अब महाराना ने दैलवारा के अधीश्वर से कहा—झाला-वंशी तो मेवाड़ के स्तम्भस्वरूप हैं। सङ्कट के समय वही लोग हमारे प्राणरक्षक हैं।

दैलवारा-पति ने कहा—झाला स्वामी का धर्म जानते हैं। युद्ध के समय वे महाराना का साथ नहीं छोड़ सकते।

इस प्रकार सभी योद्धाओं के साथ कुछ कथोपकथन कर चुकने पर महाराना ने कहा—"वीरगण, आप लोग जिस काम के लिए यहाँ बुलाये गये हैं वह आप लोगों से छिपा नहीं है। सारे भारतवर्ष का सैन्यबल मेघराशि की तरह एक ओर जुट रहा है। बरसात के प्रारम्भ में ही वह मेवाड़ पर उतर आवेगा। हम लोग भी असावधान न रहेंगे। वे लोग मेवाड़ की उपजाऊ भूमि को जङ्गल से भरी हुई देखेंगे। मेवाड़ के पहाड़ी प्रदेश में उन लोगों का प्रवेश होना कठिन है।

"क्या बाप्पाराव का वंश विदेशियों के निकट सिर झुका-वेगा? क्या समरसिंह और संग्रामसिंह की सन्तान मुग़लों का दासत्व स्वीकार करेगी? अच्छा तो यह हो कि इस दासत्व-वृत्ति को अङ्गीकार करने से पहले ही संसार से सिसोदिया-कुल एक-दम ही विलुप्त हो जाय; इस रमणीय मेवाड़ देश की पर्वत-माला और तराई समुद्र के जल में निमग्न हो जाय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"प्रतापसिंह मातृ-भूमि का मुख उज्ज्वल करेगा । वह मुग़ल-सेना के साथ लड़ेगा । पूर्व-पुरुषों की बाँह में जो बल था वह इस भुजा में है या नहीं, प्रतापसिंह इसकी जाँच करेगा । वीरगण, हम लोग जङ्गल में या पहाड़ की गुफा में रह कर समय बितावेंगे, पर अपने वंश को कलङ्कित न करेंगे । बाप्पा-राव के वंश को स्वाधीन रक्खेंगे । समरसिंह और संग्रामसिंह की सन्तान नहीं जानती कि दासत्व कैसा होता है; और न वह कभी इसे जानेगी ।

"उत्सव का दिन आज बीत चला । हम लोगों के काम का दिन शुरू हुआ । वीरगण, आप लोग उस काम में दृढ़ संकल्प हों, सख़्त हाथ से तलवार की मूठ पकड़ें । अब भी मानसिंह और अकबर शाह देखेंगे कि मेवाड़ के राजपूतों का गौरव लुप्त नहीं हुआ है ।"

छठा परिच्छेद

मानसिंह

"येनास्यभ्युदितेन चन्द्रगमिताः कान्तिं रवौ तत्तु ते
युज्येत प्रतिकर्त्तुमेव न पुनस्तस्यैव पादग्रहः ।"

काव्यप्रकाश ।

पूर्वोक्त घटना को बीते दो तीन महीने हुए । इन कई महीनों में प्रतापसिंह चुपचाप बैठे न थे । उन्होंने जिस पर्वतवेष्टित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रदेश को सुरक्षित रखने का संकल्प किया था उसके प्रत्येक क़िले, प्रत्येक तराई और प्रत्येक गुफा को बार बार देखा-भाला; क़िलों के भीतर खाद्य-सामग्री संग्रह करके, उन्होंने द्वार बन्द करा दिया तथा सैन्यों को और समस्त मेवाड़वासियों को उत्साहित किया। सभी गढ़-पति अपनी अपनी सेना सहित महाराना के साथ मिल गये। किसान लोग सम्मुख-युद्ध करना नहीं जानते थे, किन्तु अपनी अपनी भूमि के रक्षार्थ प्राण देने के लिए वे भी प्रस्तुत हुए। महाराना का उत्साह देख मेवाड़ की असभ्य जातियाँ भी उत्साहित हुईं। दक्खिन के भील, पूरब ओर से मीर और पच्छिम से मीना लोग धनुष-बाण धारण कर राजपूत योद्धाओं के साथ आ मिले। मेवाड़ का सारा पहाड़ी प्रदेश रणरङ्ग में उन्मत्त हो उठा।

महाराना का प्रायः यह दैनिक नियम था कि वे थोड़ी सी सेना साथ लेकर क़िले से बाहर निकलते और चारों ओर घूम घूम कर देखते थे कि उनकी आज्ञा के अनुसार मेवाड़ की सभी आबाद भूमि, शहर, गाँव इस समय जनशून्य और अरण्यमय हो रहे हैं; गाँव के गाँव ख़ाली पड़े हैं; लोगों के घरों में बनैले जानवर निवास कर रहे हैं और अनाज के खेतों में जंगल खड़े हैं। वे देखते कि बनास और रवी नदी के किनारे एक भी मनुष्य कहीं दिखाई नहीं देता; मनुष्य की बोली भी कहीं सुन नहीं पड़ती। प्रतापसिंह के सैनिकों को देख जंगल के पक्षी घोंसले छोड़ कर भय से बोलते हुए आकाश में इतस्ततः घूमने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगे। बनैले पशु डर कर दूर के सघन वन में जा छिपे। जहाँ तक दृष्टि जाती थी, ऐसा मालूम होता था जैसे किसी दैवी दुर्घटना से ये सारी बस्तियाँ जनशून्य हो गई हैं। लोगों के न रहने के कारण क्या नगर और क्या गाँव सभी बबूल के पेड़ों और छोटे छोटे पौधों से भर गये हैं। प्रतापसिंह चुपचाप इन सब बस्तियों को जंगल के रूप में देख प्रसन्न हो लौट आते थे और जब तब लोगों से कहते थे—समस्त मेवाड़ प्रदेश भले ही इस तरह जनशून्य जंगलमय हो जाय, किन्तु वह पवित्र भूमि म्लेच्छों के पैर लगने से कलङ्कित न हो।

दिन भर युद्ध की आयोजना में व्यतीत कर के राना सन्ध्या समय अपने पर्वत की गुफा में लौट आते थे और देखते कि महारानी अपने हाथ से आग जला कर रसोई बना रही हैं; बाल-बच्चे मामूली कपड़ा पहने इधर उधर खेल रहे हैं। राना फ़ौजी पोशाक देह से उतारते हुए कहते थे—जगदीश्वर! अमरसिंह और अमरसिंह की माँ चिरकाल तक भले ही इस कन्दरा में निवास करें किन्तु मुग़ल के वशवर्ती होकर महलों में रहने की कभी इच्छा न करें।

इसी प्रकार कई महीने बीते। अन्त में बादशाह अकबर के बेटे युवराज सलीमख़ाँ, मानसिंह के साथ, सजी धजी असंख्य सेना को साथ ले मेवाड़ पर आक्रमण करने आये। सामुद्रिक तरङ्ग-माला की तरह मुग़ल-सेना मेवाड़ के आबाद हिस्से पर उमड़ पड़ी और उसने उसे निर्विघ्न अपने अधिकार में कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिया । प्रतापसिंह ने उसके इस कार्य में कुछ भी रोक टोक न की । अब मुग़ल सेना क्रमशः सुरक्षित पहाड़ी प्रदेश की ओर बढ़ चली । उस प्रदेश के भीतर प्रवेश करने का एक ही रास्ता था, जो बन्द था । वह एक-मात्र प्रवेशद्वार हलदीघाटी था । बाईस हज़ार राजपूत उस घाटी के रक्षक थे । मानसिंह ने चिन्तित होकर घाटी के समीप ही डेरा डाला । समस्त मुग़ल-सैन्य युद्ध के लिए प्रस्तुत हुआ ।

पाठकवृन्द ! चलिए, युद्ध के पहले हम लोग एक बार मुग़लों के शिविर (खेमा) में प्रवेश करें । जिन प्रख्यात वीर अम्बराधीश ने दिल्ली का दासत्व स्वीकार करके दिल्ली की विजय-वैजयन्ती को वङ्ग-देश से लेकर क़ाबुल तक फहराया है, चलो आज उन्हीं महाराज मानसिंह से भेट करें । हाय ! जातिविरोध के सदृश और विरोध नहीं । जातिविरोध ही के कारण आज राजपूतकुल-तिलक महाराज मानसिंह राजपूत-कुल-मुकुट मेवाड़-पति प्रतापसिंह के घोर शत्रु हो रहे हैं ।

रात में बहुत सी मुग़ल सेना के लिए खेमा खड़ा हुआ है । शिविर की रोशनी से वह अन्धकारमय पहाड़ी प्रदेश उजला हो गया है । कहीं कहीं सैनिक एकत्र होकर आपस में बड़े उल्लास के साथ बातचीत कर रहे हैं । मेवाड़वालों ने जैसी कुछ दृढ़ प्रतिज्ञा की है उसके कारण अवश्य ही भीषण युद्ध होगा । न मालूम इससे बच कर कितने मनुष्य फिर दूर देश दिल्ली लौट कर जाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन शिविर-समूहों के बीच सुलतानी बनात से मढ़ा हुआ, अनगिनित दीपावली और पताकाओं से विभूषित, जो एक खेमा देख पड़ता है उसी में युवराज रहते हैं । उस विस्तृत शिविर में बैठ कर युवराज सलीम प्रसन्न चित्त से गान सुन रहे हैं । सामने शराब की बोतलें और प्याले रक्खे हैं । पास ही मधुर गानेवाली कई एक नवयौवनाएँ बैठी तानें उड़ा रही हैं । युवराज क़द के लम्बे और बलिष्ठ हैं । गठन मज़बूत है । ललाट चौड़ा और सुन्दर है । कल युद्ध छिड़ेगा, किन्तु आज वह आयत ललाट चिन्ता-रहित है । वह सुन्दर मुख उद्वेगशून्य और हास्य-रञ्जित है ।

शिविर में अब भी आनन्द-ध्वनि हो रही है । इसी समय एक चोबदार ने आकर ख़बर दी—जहाँपनाह, राजा मानसिंह आये हैं । किसी विशेष कार्यवश हुज़ूर से सलाम करना चाहते हैं ।

युवराज समझ गये कि राजा मानसिंह युद्ध-विषयक सलाह करने आये हैं । गान बन्द हुआ । विनोद की सभा बरख़ास्त हुई । युवराज ने सबको वहाँ से चले जाने का संकेत किया । कुछ देर में अम्बर (जयपुर) के अधीश वीर श्रेष्ठ मानसिंह ने ख़ेमे के भीतर प्रवेश करके युवराज को सलाम किया । सलीम ने बड़ी प्रसन्नता से स्वागत करके उन्हें अपने पास बिठाया और द्वार बन्द कर दोनों आपस में कुछ बातें करने के लिए उत्सुक हुए ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मानसिंह और सलीम दोनों नवयुवक हैं। दोनोंही साहसी हैं, वीर हैं और युद्ध-विद्या में निपुण हैं। दोनों के हृदय में जवानी का उत्साह भरा है। अन्तर यदि कुछ है तो इतना ही कि सलीम शाहज़ादा हैं, और इसी से वे हद से ज़्यादा विलास-प्रिय हैं; उनके ऐसा विलासी (ऐयाश) बादशाह कभी कोई दिल्ली के शाही तख़्त पर नहीं बैठा। उनका स्वभाव सरल और उदार था। युवावस्था में उनकी इच्छा भोगविलास की ही ओर विशेषरूप से प्रबल हो उठी। राजसम्बन्धी काम से भी बढ़ कर वे भोगविलास को ही अधिक प्रिय मानते थे और दिन रात राग-रङ्ग में ही लिप्त रहा करते थे। फिर इनकी विलास-प्रियता इतनी प्रबल हुई कि ये राज-काज छोड़ कर उसी के पीछे पड़ गये और नूरजहाँ राज्य का शासन करने लगी। मन्त्री, मित्र, मदिरा और मृगनयनी को लेकर दिल्ली-पति जहाँगीर (सलीम) आमोद-प्रमोद में ही समय बिताते थे। मानसिंह थे असाधारण बुद्धिमान्, दृढ़-प्रतिज्ञ, कार्य-कुशल, और असाधारण योद्धा। जब से राजा मानसिंह दिल्ली से चले हैं तब से आज तक सभी काम वही करते हैं। सलीम ने सब काम उन्हीं के ऊपर छोड़ रक्खा है।

सलीम ने कहा—राजा साहब, दुश्मनों ने लड़ाई का जो कुछ सामान कर रक्खा है उसे तो आपने देखा ही होगा? आप कब से युद्ध जारी होना अच्छा समझते हैं?

मानसिंह—यह तावेदार कलही से युद्ध जारी होना उचित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समझता है। बरसात के आने में अब विलम्ब नहीं है। दिल्लीश्वर (अकबर) का काम जितना शीघ्र सिद्ध हो, उतना ही अच्छा।

सलीम—मेरी भी यही राय है। शाही सेना के सामने मेवाड़वाले खड़े भी नहीं हो सकते, लड़ेंगे कहाँ तक।

मानसिंह—इसमें सन्देह नहीं। तथापि मैं आपसे यह निवेदन किये देता हूँ कि यदि आपकी आज्ञा हो तो कल से युद्ध ठन जाय। हम लोगों ने इतने दिन से जो इतना श्रम उठाया है, युद्ध के लिए इतनी आयोजना की है, उसकी तुलना यदि कल के मामूली युद्ध के साथ की जाय तो वह लड़कों का खेल-मात्र ही होगा। अभिप्राय यह कि जो काम थोड़े ही श्रम से सिद्ध हो सकता था, उसके लिए इतना आडम्बर करने की क्या ज़रूरत थी।

सलीम—तैमूरलङ्ग की औलाद छिप कर लड़ना नहीं जानती, किन्तु यह सम्मुख की लड़ाई कितनी देर ठहरेगी? बाघ का सामना हिरन कब तक कर सकता है? बादशाही सेना के सामने कायर प्रताप कब तक ठहर सकेगा? वह तुरन्त युद्ध से भाग निकलेगा।

मानसिंह—आपके पिता की प्रबल सेना के सामने ठहर सके, ऐसा लड़नेवाला वीर भारत में इस समय तो है नहीं, तथापि प्रतापसिंह रणभूमि से सहसा भागनेवाले नहीं। यह तावेदार उन्हें अच्छी तरह जानता है और –

सलीम—मानसिंह, आप कुछ और कहना चाहते थे सहसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रुक क्यों गये ? प्रतापसिंह के साहस की बात मैंने भी सुनी है, पर उसकी बहादुरी की बात शायद आप कुछ अधिक जानते हों।

मानसिंह—प्रतासिंह के साथ इस ताबेदार की पहले एक बार भेंट हुई थी, इसी से यह उन्हें भलीभांति जानता है।

सलीम—आप क्या जानते हैं ?

मानसिंह—प्राताप‌सिंह घोर विद्रोही है। वह बादशाह के साथ पूरे तौर से बिगड़ा है। वह जीते जी बादशाह की अधीनता प्राय: स्वीकार न करेगा। कल घमासान लड़ाई होगी। यही संवाद कहने के लिए ताबेदार आया है।

सलीम—यह तो मुझे भी मालूम है, क्या आपको और कुछ कहना नहीं है ? दिल्ली से रवाना होने से अब तक आप मेरे दहने हाथ हो रहे हैं। मैंने सभी काम आपही के भरोसे छोड़ रक्खे हैं। मेरे हृदय की सब बातें आप जानते हैं। मैं अपने मन की सब बातें आपको साफ़ साफ़ कह सुनाता हूँ। क्या आप मुझसे कोई बात छिपाना चाहते हैं ?

मानसिंह—हुज़ूर के आगे यह ताबेदार कोई बात छिपाना नहीं चाहता, और न आज तक इसने हुज़ूर से कुछ छिपाया है। प्रताप पर मेरा कुछ ऋण है, उसका स्मरण हो आने से हठात मेरी ज़बान रुक गई थी।

सलीम—प्रताप हिन्दू है और आप भी हिन्दू हैं। दोनों में ऋण और मित्रता होना संभव है। यदि आप मित्र के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विरुद्ध हथियार उठाने में असमर्थ हों तो आप युद्ध से अलग रहें। हम अकेले ही लड़ेंगे। और देखेंगे कि प्रताप की भुजाओं में कितनी ताक़त है।

मानसिंह की आँखें क्रोध से लाल हो गईं। उन्होंने धीरे धीरे कहा—प्रताप पर जो मेरा ऋण है उसका परिशोध उसके हृदय के रक्त से ही होगा। आपसे छिपाने की कोई बात नहीं। मैं अपने अपमान की भी कोई बात आपसे न छिपाऊँगा। यह बात मैं आपके पिता के निकट प्रकट कर चुका हूँ, आज आपसे भी कह सुनाता हूँ, सुनिए—

जब सोलापुर से मैं लौटा आ रहा था, तब मैं प्रतापसिंह से भेंट करने की इच्छा से मेवाड़ आया था। मेवाड़ के राना सूर्यवंशी हैं, और राजपूतों में सर्वश्रेष्ठ हैं। अतएव रजवाड़ों में वे सभी के पूज्य और सम्मानार्ह हैं। आजकल प्रतापसिंह राना हैं, यह जान कर मैं उनसे मिलने गया।

चित्तौर विध्वंस होने के बाद उदयसिंह ने उदयपुर बसाया और वहीं अपनी राजधानी स्थापित की। किन्तु प्रतापसिंह, पिता के राजभवन को त्याग कर, कमलमीर के पहाड़ी क़िले में रहते हैं। मेरे आने की बात सुन कर मुझे लिवा ले जाने के लिए वे कमलमीर से उदयसागर तक आये थे।

उदयसागर के किनारे बड़े समारोह के साथ भोजन की सामग्री तैयार हुई। मैं भोजन करने के लिए बैठा, किन्तु राना वहाँ न थे। प्रताप के पुत्र अमरसिंह ने कहा—पिताजी सिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के दर्द के कारण स्वयं नहीं आ सके। आपके सत्कार के हेतु उन्होंने मुझको भेजा है। मैं आपके साथ बैठ कर भोजन करूँगा।

मानसिंह ने बहुत देश देखे हैं; भाँति भाँति के मनुष्यों के स्वभाव से वे परिचित हैं। सिर के दर्द का कारण उनकी समझ में आ गया। वे समझ गये कि हमने जो दिल्लीपति के साथ नया सम्बन्ध जोड़ा है, इसी से गर्विष्ठ राजविद्रोही प्रतापसिंह ने हमारा उचित सम्मान नहीं किया।

मानसिंह का स्वर क्रोध से रुद्ध हो गया।

सलीम—तब क्या हुआ?

मानसिंह क्रुध स्वर में कहने लगे—हमने अमर से कहा—"राना से जाकर कह दो कि हमने सिरदर्द का कारण समझ लिया। जो बात हो गई वह अब किसी तरह टल नहीं सकती। इस कारण महाराना यदि हमारे साथ बैठ कर भोजन न करेंगे तो दूसरा कौन करेगा।"

प्रतापसिंह ने हमारी इस विनीत अभ्यर्थना का जो अनुचित उत्तर दिया उसे मानसिंह इस जीवन में न भूलेंगे, या भूलें तो कल की लड़ाई में भूलेंगे।

प्रताप ने कहला भेजा—"मुसलमान को जिन्होंने राजपूत की लड़की दी, मुसलमान के साथ जिन्होंने बहन को ब्याह दिया, और मुसलमान के साथ जिनका अब प्राय: खान पान होता है, उनके साथ बैठ कर राना कदापि भोजन नहीं कर सकते।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राना से यह उत्तर पाकर हम परोसी हुई थाली छोड़ कर उठ गये । केवल अन्न-देव को नमस्कार कर दो चार दाने हमने अपनी पगड़ी में रख लिये । उसी दिन हमने प्रतिज्ञा की कि यदि इस गर्विष्ठ का गर्व चूर्ण न किया तो हमारा नाम मानसिंह नहीं । "उस अपमान-रूपी ऋण का बदला कल के युद्ध में हम प्रताप के हृदय के लोहू से चुका लेंगे ।"

मानसिंह का सारा शरीर क्रोध से काँप रहा था । उनकी आँखों से मानों आग की चिनगारियाँ झड़ रही थीं । सलीम भी उनकी बात से स्थिर नहीं रह सके । वे भी क्रोध से बोले—वीरवर ! जिसने आपका अपमान किया है, उसने आपकी भी अपेक्षा अधिक अपमान मेरा किया है । सलीम उसका बदला लेने में समर्थ है । जब आप अपमानित हुए तब हम क्या बचे रहे ? कल हम और आप मिल कर उस अपमान का परिशोध करेंगे । आज आप स्थिर रहें ।

सलीम की इस प्रतिज्ञा से मानसिंह के हृदय की ज्वाला कुछ शान्त हुई । उनकी आँखों से दो बूँद आँसू टपक पड़े । सलीम से अङ्कमालिका का व्यवहार करके मानसिंह चुपचाप शिविर से बाहर गये ।

मानसिंह के चले जाने पर उस रात को युवराज के शिविर में फिर गाना बजाना आदि न हुआ । सबेरा होते न होते दूसरा ही वाद्य बजने लगा । रण वाद्य से दसों दिशायें भर गईं । धरती और आकाश दोनों काँप गये ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सातवाँ परिच्छेद

हल्दीघाटी का युद्ध

"स घोषः..............................
नभश्च पृथिवीञ्चैव तुमुलो व्यनुनादयन्।"

भगवद्गीता।

घनघोर युद्ध आरम्भ हुआ। एक ओर थी असह्य अपमान के प्रतिशोध की प्रचण्ड अभिलाषा, और दूसरी ओर थी सिसोदिया वंश की चिर स्वाधीनता को बचाने की दृढ़ प्रतिज्ञा। एक तरफ़ थी मुग़लों और अम्बर की असंख्य सुरक्षित सेना और दूसरी तरफ़ थे मेवाड़ के अतुल पराक्रमी वीरगण।

हल्दीघाटी के नीचे और ऊपर, पहाड़ के दोनों ओर, बाईस हज़ार राजपूत सेना युद्ध करने के लिए तैयार है। सभी योद्धा दल बाँध कर, अपने अपने प्रधान को चारों ओर से घेर कर, विलक्षण रीति से रक्षा कर रहे हैं। कभी दूर से तीर या बर्छी फेंक कर बैरी को मारते हैं, कभी कुलाधिप का इशारा पाकर एक ही बार शत्रु-सेना पर टूट पड़ते हैं और अपने दुर्दम्य पराक्रम से उनके बीच खड़भड़ मचा देते हैं। पहाड़ की चोटी पर असभ्य जाति के सैनिक हाथ में धनुष-बाण लिये खड़े हैं और शत्रु-सेना पर तीर बरसा रहे हैं। सुबीता पाकर वे शत्रुसैन्यों के ऊपर पत्थर के बड़े बड़े ढोंके गिरा देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज दोनों दलों में घनघोर लड़ाई हो रही है। इस महोत्सव में कोई पीछे न हटा। चौहान, राठौड़, झाला, चन्दावत और जगावत आदि राना के जितने सहायक राजपूत योद्धा थे सभी सिंहनाद कर शत्रु के सैन्य पर टूट पड़े। एक दल के हत होते ही दूसरा दल अग्रसर होता था। ढेर के ढेर मुर्दों के ऊपर हो कर झुंड के झुंड सिपाही आगे की ओर बढ़ने लगे। किन्तु दिल्ली की असंख्य सेना के आगे इस अल्पसंख्यक राजपूत सेना की वीरता कहाँ तक काम दे सकती थी? दिल्ली की भयङ्कर तोपों की मार से झुंड की झुंड राजपूत-सेना एक साथ भस्मसात् होने लगी। राजपूत लोग इस प्रचण्ड आग्न-वाण से विचलित नहीं हुए—उनके दल के दल आगे बढ़ कर प्राण देने लगे।

इस भीषण युद्ध-महोत्सव में प्रतापसिंह पीछे न थे। युद्ध प्रारम्भ होते ही वे अम्बराधिपति (मानसिंह) की ओर बढ़ चले, किन्तु दिल्ली की अनगिनत पलटनों के ग़ोल को फाड़ कर उन तक न पहुँच सके।

प्रतापसिंह ने जब उधर जाने का अवसर न देखा तब उन्होंने अपने घोड़े को उस तरफ़ दौड़ाया जिधर हाथी पर सवार सलीम युद्ध कर रहे थे। इस बार राजपूत वीरगण तलवार के हाथ मुग़ल-सेना को हटा कर आगे बढ़ चले। अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित मुग़ल-सेना दल बाँधे अपनी अपनी जगह पर खड़ी थी। किन्तु बरसाती बाढ़ जैसे बाँध तोड़ कर आगे निकल जाती है वैसे ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रतापसिंह और उनकी सेना मुग़ल सैन्यरूपी प्रबल बाँध को तोड़ कर अग्रसर हुई। तलवार और बर्छी की मार से विकल मुग़ल-सेना राजपूतों को आगे बढ़ने से न रोक सकी। प्रतापसिंह सलीम के सामने जा पहुँचे। दोनों तरफ़ के प्रसिद्ध प्रसिद्ध योद्धा अपने अपने अधिप की रक्षा के लिए व्यग्र हो उठे। गुत्थमगुत्था युद्ध होने लगा, कुछ देर तक वीरों को अपने-पराये की सुधि न रही। जो जिसे पाता वह उसी को सामने से मार भगाता। उस समय के भयङ्कर हत्या-काण्ड, गगनभेदी जय-शब्द और घायल सिपाहियों के आर्तनाद का वर्णन नहीं किया जा सकता।

प्रतापसिंह की अमोघ तलवार के प्रहार से सलीम के रक्षकगण भूतलशायी हुए। प्रतापसिंह ने लक्ष्य करके सलीम पर बर्छी फेंकी किन्तु वह अम्बारी के लोहे से लग कर व्यर्थ हुई। सलीम की जान बच गई। प्रतापसिंह ने क्रोध से ललकार कर घोड़े को और आगे बढ़ाया। वह सुशिक्षित चेतक प्रतापसिंह के आशय को समझ गया। फुर्ती से कूद कर और सलीम के हाथी पर अगले पाँव रख कर वह पिछली टाँगों के बल खड़ा हो गया। प्रताप के अमोघ अस्त्र के आघात से महावत मारा गया। बे-महावत का हाथी विपत्ति की आशङ्का देख सलीम को ले भागा। प्रतापसिंह और उनके सहायक योद्धाओं ने बड़े निर्भीक भाव से सलीम का पीछा किया और मुग़ल-सेना की क़तारबन्दी को छिन्न भिन्न कर डाला। प्रतापसिंह की यह असाधारण वीरता देख हिन्दुओं को अर्जुन का पराक्रम स्मरण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो आया। मुसलमान-सेना कुछ देर के लिए मन ही मन डर कर क्षुब्ध हो रही।

इसके बाद मुसलमान-सैनिक अपनी विपत्ति देख उन्मत्त होकर लड़ने लगे। यवन योद्धा भी कायर नहीं थे। जो पाँच सौ वर्ष से भारत का शासन कर रहे हैं वे आज हिन्दुओं के आगे अपनी हार कैसे स्वीकार करेंगे? उस यवन-सेना ने एक बार उच्च स्वर से "अल्लाहो अकबर" कह कर प्रतापसिंह को चारों ओर से घेर लिया। राजपूत लोग युद्ध से भागना नहीं जानते। वे अपने प्रभु के लिए चारों ओर मुसलमान-सेना के साथ जी छोड़ कर जूझने लगे और बहुतेरी शत्रु-सेना को मार कर आप भी खेत आने लगे। प्रतापसिंह के शरीर में सात घाव लगे हैं, पर उस ओर उनका ध्यान भी नहीं है। वे आगे ही की ओर बढ़े जा रहे हैं।

पीछे से कई एक राजपूत-योद्धाओं ने महाराना को शत्रु-सेना के बीच घिरा हुआ देखा। वे लोग सिसोदियों की पताका ले, जयदुर्गे कह कर आगे बढ़े। जो राजपूत-सेना खड़ी थी वह भी पताका देख कर अग्रसर हुई और जहाँ प्रतापसिंह लड़ रहे थे वहाँ जा पहुँची। वे लोग बड़ी वीरता दिखा कर मृत्यु के मुख से अपने स्वामी को छुड़ा लाये। इस साहसिक उद्यम में सैकड़ों राजपूत योद्धा खेत रहे।

कुछ देर में फिर प्रतापसिंह ने युद्धमद से मत्त हो, बलाबल की परवा न करके, मुग़ल-सेना के भीतर प्रवेश किया। राजपूत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोग अपने नायक को शत्रुओं से घिरा हुआ देख फिर उनके पीछे चले और समरमदोन्मत्त वीर-वर प्रतापसिंह को शत्रुओं के हाथ से छुड़ा लाये।

किन्तु प्रतापसिंह आज अपने होश में नहीं हैं। वे फिर अपनी जान को हथेली पर रख कर मुग़ल-सेना में धँस पड़े। इस बार मुग़ल-सेना ने भी क्रोध से पागल होकर प्रतापसिंह को चारों ओर से घेर लिया। प्रताप को उस दल से निकलने का कोई मार्ग न रहा। अब इस बार प्रतापसिंह के बचने की कोई उम्मेद नहीं है। मुग़ल इस बार इस काफ़िर वीर को मार कर दिल्लीपति के हृदय से काँटा अलग करेंगे मानसिंह के अपमान का बदला लेंगे।

राजपूतों ने महाराना की विपत्ति देख, उनके उद्धार की चेष्टा की; किन्तु मुग़ल-सेना असंख्य है। इधर राजपूतों के प्रधान प्रधान वीर युद्ध में काम आ चुके हैं। उनकी थोड़ी सी सेना बच रही है। अब इस बार मेवाड़पति का उद्धार होना असम्भव है।

झुंड के झुंड राजपूत योद्धाओं ने बार बार प्रभु के उद्धार की चेष्टा की, परन्तु उनके हाथ से उद्धार न हो सका। केवल शत्रु-सेना में कितने ही जवानों को मार कर आप भी मर मिटे। मुग़ल-दल में वे किसी तरह प्रवेश न कर सके। इस बार प्रभु को छुड़ाकर न ले आसके।

दैलवारा के अधीश ने दूर से यह मामला देखा। तुरन्त ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वे इष्ट-देवता का स्मरण करके अपने झालावंशी योद्धाओं को साथ ले आगे बढ़ चले । मेवाड़ की सुवर्णसूर्याङ्कित पताका एक सैनिक के हाथ से अपने हाथ में लेकर झालापति बड़े कोलाहल के साथ अग्रसर हुए ।

उस तेज को मुग़ल न रोक सके । वीर दैलवारा-पति शत्रु-दल को हटा कर भीतर घुसे और जहाँ उन्मत्त हाथी की तरह प्रतापसिंह युद्ध कर रहे थे वहाँ बड़े उल्लास से जा पहुँचे । वहाँ पहुँच कर उन्होंने प्रतापसिंह को पूरी मदद दी । उनकी रक्षा की । झालापति उन्हें दुश्मनों के हाथ से बचा कर ले आये । इस प्रचण्ड साहस के काम में झालापति ने स्वयं अपने प्राण तक दे दिये ।

झालापति की ओर देख कर महाप्रतापी प्रतापसिंह ने कहा—"झालापति, आज अपने प्राण गवाँ कर आपने मेरे प्राण बचायें ।" दैलवाराधीश ने धीमे स्वर में उत्तर दिया—"झाला स्वामी का धर्म जानता है, वह विपत्ति के समय महाराना का साथ नहीं छोड़ सकता ।"

प्रतापसिंह को उस दिन की बात याद हो आई जो वसन्तोत्सव की रात में झालापति ने उनसे कही थी । दैलवाराधीश का शरीर जीवनशून्य होकर धरती पर गिर पड़ा ।

बाईस हज़ार राजपूत योद्धाओं में से चौदह हज़ार वीर इस प्रथम दिन के युद्ध में भूतलशायी हुए । केवल आठ हज़ार योद्धा बच रहे । लाचार होकर प्रतापसिंह को हल्दीघाटी का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

युद्ध छोड़ना पड़ा। मुग़लों की जीत हुई किन्तु इस युद्ध की बात भूलने योग्य न रही। कई वर्ष पीछे तक दिल्ली में, महाराष्ट्र देश में, और बङ्गाल में बूढ़े मुग़ल-सैनिक युवक योद्धाओं के निकट हल्दीघाटी की लड़ाई और प्रतापसिंह की विस्मयोत्पादक वीरता की चर्चा करके रात बिताते थे।

आठवाँ परिच्छेद

दो भाई।

"दिनकरकुलचन्द्र चन्द्रकेतो सरभसमेहि परिष्वजस्व माम्।
तुहिनशकलशीतलैस्त्वदाङ्गैः शममुपयातु ममापि चित्तदाहः॥"

उत्तरचरितम्।

प्रतापसिंह रणभूमि को छोड़ चले; किन्तु विपत्ति ने तब भी उनका साथ न छोड़ा। दो मुग़ल सवारों ने उनका पीछा किया। प्रतापसिंह का तेजस्वी घोड़ा चेतक फाँद कर एक छोटी सी नदी पार हो गया। मुग़ल सवारों को उस नदी के पार होने में कुछ देर हुई। किन्तु चेतक युद्ध में कई घाव खा चुका था और प्रतापसिंह भी घायल हो चुके थे। उस पर मुग़ल सिपाही पीछे से दौड़े चले आ रहे थे। उन लोगों के घोड़ों की टापें उस पहाड़ी भूमि में प्रतिध्वनित हो रही थीं। वह शब्द प्रतापसिंह के कानों में पड़ा। उन्होंने समझा कि अब इस बार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बचने की आशा नहीं है। किन्तु उन्होंने छिप कर प्राण बचाना उचित न समझ वीरता-पूर्वक जूझने ही की ठानी।

पीछे से एकाएक उन्हें यह शब्द सुन पड़ा—यह कौन सवार जा रहा है ?

प्रतापसिंह ने पीछे की ओर फिर कर देखा—एक घुड़-सवार है वह दूसरा कोई नहीं, उन्हीं का घोर शत्रु और उन्हीं का सहोदर भाई शक्तसिंह है।

प्रतापसिंह ने क्रोध से कहा—"संग्रामसिंह के पौत्र (पोता) होकर मुग़लों की गुलामी करते हो, इससे बढ़ कर हमारे वंश के लिए और कलङ्क ही क्या हो सकता है ? इस समय मुग़ल का पक्ष लेकर मुझको मारने के लिए मेरे पीछे दौड़े आरहे हो। कुल-कलङ्क, कुलाधम ! देखो, संग्रामसिंह के वंश को आज प्रतापसिंह निष्कलंक करेगा।" यह सुन कर शक्तसिंह डरे नहीं, वे रुष्ट भी नहीं हुए। वे धीरे धीरे प्रतापसिंह के पास आकर बोले—भैया, एक वह दिन था कि हम आपके प्राणों के गाहक हो रहे थे, किन्तु आज वह दुर्वासना हमारे हृदय से जाती रही। आज हम आपकी वीरता देख कर मुग्ध हो गये हैं। आप हमारे दोषों को क्षमा करें और हमें अपना सेवक समझें।

प्रतापसिंह ने देखा कि शक्तसिंह की आँखों में आँसू भर आये हैं। आज दोनों के मन से बहुत दिनों का वैर भाव दूर हुआ। दोनों के हृदय में प्रेम उमड़ आया। घोड़े से उतर, पर-स्पर प्रेमालिंगन कर दोनों पुलकित हुए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रतापसिंह का बड़प्पन और वीरता देख कर शक्तसिंह के हृदय से आज शत्रुता का भाव जाता रहा। कई बरसों का भ्रातृ-विरोध आज तिरोहित हो गया। भाई भाई से क्षमा माँग रहा है। क्या प्रतापसिंह क्षमा-पूर्वक स्नेह-प्रदान में कदर्यता दिखावेंगे? कभी नहीं। उनके सारे अपराधों को प्रतापसिंह भूल गये। डबडबाई हुई आँखों से उन्होंने शक्तसिंह की ओर देखा और उन्हें अपने गले से लगाया।

जिन दो मुग़लों ने प्रतापसिंह का पीछा किया था वे इस घड़ी कहाँ हैं? शक्तसिंह ने दूर से उन लोगों को आते देखा था। भाई के प्राण-नाश होने की संभावना देख उन्होंने अपनी अचूक बर्छी से उन दोनों को वहीं धरती पर सुला दिया।

सन्ध्याकाल की छाया उस सुनसान तराई में चारों ओर फैलने लगी। फिर वह पहाड़ को भी आच्छादित करने लगी। कुछ देर में उस छाया ने संसार को अन्धकार-समुद्र में डुबो दिया। उस निर्जन निःशब्द तराई में दोनों भाइयों ने बहुत दिन के खोये हुए भ्रातृस्नेह को पाया। अनेक दिन का गवाँया हुआ स्नेह-धन मिल गया। दोनों भाइयों के हृदय में स्नेह की धारा बिलकुल सूख न गई थी। आज उसी कुछ बची हुई स्नेह-धारा ने उमड़ कर उन दोनों के हृदय को आप्लावित कर दिया।

बहुत देर पीछे प्रतापसिंह ने कहा—"भाई शक्तसिंह! आज प्रताप के पराजय का दिन नहीं, बल्कि विजय का दिन है। आज हमने जिस खोये हुए धन को प्राप्त किया है उसके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आगे युद्ध के पराजय को हम कुछ नहीं गिनते । ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आज से हम और तुम दोनों सदा के लिए पहले के वैरभाव को भूल जायँ; हमारे और तुम्हारे बीच सदा स्नेह-भाव बना रहे । अब हम और तुम दोनों मिल कर स्वदेश की रक्षा करेंगे; विदेशी शत्रु की कुछ परवा न करेंगे और दिल्ली-पति या अम्बराधीश मानसिंह से भी न डरेंगे ।

नवाँ परिच्छेद

व्याघ्रनिकेतन पहाड़

"अन्तर्धैर्यभरेण वृद्धवचनात्संपीड्य पिण्डीकृतो
यन्मर्माश्रितशल्यवत् परिदहन् मन्युश्चिरं यः स्थितः ।।
स्फूर्यत्येव स एष सम्प्रति मम न्यक्कारभिन्नस्थितेः
कल्पापायमरुत्प्रकीर्णपयसः सिन्धोरिवौर्वानलः ।।"

वीरचरितम्

उस रात में जो तेजसिंह बनैले सूअर से दुर्जयसिंह के प्राण बचा कर उन्हें अपने रहने की गुफा में ले गये थे, इसे पाठक भूले न होंगे ।

आधी रात के समय दुर्जयसिंह से बिदा होकर तेजसिंह गुफा की ओर नहीं गये । रात अँधेरी थी । आकाश में तारागण जगमगा रहे थे । वन में सर्वत्र सन्नाटा छाया हुआ था । तेज-सिंह अकेले उस दुर्गम पहाड़ के मार्ग में इधर उधर घूम कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रात बिताने लगे । कभी वे पहाड़ के ऊपर, कभी पहाड़ के नीचे, और कभी घोर जङ्गल में—जहाँ अन्धकार के मारे अपना हाथ तक नहीं सूझता था—घूम रहे थे । किन्तु उस पहाड़ी प्रदेश में कोई स्थान ऐसा न था जो तेजसिंह के लिए अज्ञात हो । आज आठ वर्ष से, घर छोड़ कर, ये बराबर भीलों के साथ पहाड़ पर घूमते हैं, गुफा में सोते हैं और जङ्गल में छिप कर समय बिताते हैं । घूमते घूमते उन्होंने एक निविड़ वन में प्रवेश किया और उसके भीतर बहुत दूर तक चले गये । उस वन से निकलने पर उन्हें एक बहुत ऊँचा पहाड़ देख पड़ा ।

पहाड़ पर चढ़ने का रास्ता विकट होता है । किन्तु पर्वत पर चढ़ने में तेजसिंह बनैले पशुओं की अपेक्षा भी दक्ष थे । बाघ और सिंह भी पहाड़ पर दौड़ कर चलने में उनका मुक़ाबला न कर सकता था । तेजसिंह के हाथ में वही दीर्घाकार बर्छी है । उस लम्बे जवान के हाथ में वह तीव्र बर्छी और उनका वह विशाल शरीर देख कर भयङ्कर बनैले जन्तु भी रास्ते से हट कर अलग जा खड़े होते थे ।

तीन चार घंटे तक योंही भ्रमण करके तेजसिंह एक पहाड़ के ऊपर चढ़े । कुछ देर तक वहाँ खड़े रहे । लम्बे बालों को मुँह पर से धीरे धीरे हटा कर उन्होंने पीठ की ओर सन्निवेशित किया और कुछ देर तक स्थिर दृष्टि से आकाश की ओर देखा । फिर पहाड़ के निम्नवर्ती प्रकाशरहित निःशब्द जंगल की प्राकृतिक शोभा की ओर दृष्टि डाली । उनके मन में किस गम्भीर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिन्ता की तरङ्ग उठ रही थी, यह कौन कह सकता है? बहुत देर बाद वे वहाँ से उठ कर चुपचाप उस पहाड़ की एक गुफा की ओर चले।

गुफा का द्वार बन्द था। तेजसिंह ने बाहर से किवाड़ खटखटाये। फिर उन्होंने ज़ोर से धक्का दिया। किन्तु भीतर से कुछ उत्तर न मिला।

उस निःशब्द रात में, उस भयङ्कर गुफा के द्वार पर खड़े होकर, तेजसिंह ने निर्भयता के साथ तीसरी बार ख़ूब ज़ोर से किवाड़ पर धक्का दिया। इस बार के धक्के से किवाड़ सहित सारी गुफा काँप उठी।

इस बार भीतर से एक गम्भीर शब्द आया—इतनी रात को इस गुफा के द्वार पर कौन है?

युवक ने कहा—"तिलकसिंह का पुत्र तेजसिंह।" द्वार खुल गया।

उस अँधेरी कन्दरा में प्रवेश करके तेजसिंह कुछ देर खड़े रहे। गुफा के भीतर न रोशनी है, और न कहीं किसी मनुष्य की बोली सुन पड़ती है, केवल एक झरने से पानी गिरने का शब्द कुछ कुछ सुनाई दे रहा है। तेजसिंह उस अँधेरे में खड़े होकर झरने के उस लगातार शब्द को सुनने लगे।

बड़ी देर बाद उस गुफा में किसी ने एक दिया जलाया और वह दिया धीरे धीरे द्वार की ओर आने लगा। एक अत्यन्त वृद्धा—जो बहुत लम्बी थी और जिसके सिर के बाल बिलकुल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सफ़ेद थे,—तेजसिंह के पास आकर खड़ी हुई। उसने तेजसिंह को, उँगली के इशारे से, एक बघछाले पर बैठने की आज्ञा दी। तेजसिंह बैठ गये और उस दुबली पतली वृद्धा की ओर विस्मित होकर देखने लगे।

तपस्विनी की उम्र अस्सी वर्ष से भी कुछ अधिक थी। उसके शरीर का सारा चमड़ा सिकुड़ गया था, इन्द्रियाँ शिथिल हो गई थीं। वह कुछ देर में बोली—राठौड़-वंश के तिलक महाराज तिलकसिंह का नाम मेवाड़ में कौन नहीं जानता। उनके पुत्र तुम इस अँधेरी रात में यहाँ किस लिए आये हो?

तेजसिंह—तिलकसिंह का नाम क्यों न चिर-स्मरणीय होगा? चित्तौर की रक्षा के लिए उन्होंने अपने प्राण दे दिये। इस समय उनका केवल नाम रह गया है। उनके सूर्य-महल में अब चन्दावत सरदार दुर्जयसिंह रहते हैं। तिलकसिंह की विधवा स्त्री भी अब इस संसार में नहीं। तिलकसिंह के बेटे को भीलों ने पाला है और उन्हीं भीलों के साथ छिप कर वह गुफा में रहता है।

तपस्विनी—चन्दावत और राठौड़ वंश की चिरकाल की शत्रुता मुझसे छिपी नहीं है। सूर्यमहल पहले चन्दावतों का ही था। तुम्हारे पूर्वपुरुषों ने मारवाड़ से आकर तलवार के ज़ोर से वह क़िला ले लिया था। तब से दोनों वंशों में जो विरोध चल रहा है वह तब तक मिटने का नहीं जब तक कि दोनों के वंश में कोई भी जीता रहेगा। चन्दावत लड़ने में अक्षम नहीं हैं, वे लोग सहज ही इस क़िले को न छोड़ेंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेजसिंह—माँ ! राठौड़ भी तो कमज़ोर नहीं है । आप आज्ञा दें तो मैं एक बार चन्दावत दुर्जयसिंह के साथ युद्ध करूँ । यदि मैं हार जाऊँगा तो फिर सूर्यमहल का नाम न लूँगा । फिर या तो अपने देश मारवाड़ को लौट जाऊँगा या इन्हीं कोल भील किरातों के साथ रह कर जीवन व्यतीत करूँगा ।

तपस्विनी—मेवाड़ सिसोदियों का पहला स्थान है और चन्दावत उन्हीं सिसोदियों की शाखा है। इस वंश का भी पहला स्थान मेवाड़ ही है । तुम लोग राठौड़ हो । तुम्हारा आदिम स्थान मारवाड़ है । फिर तुम किस अधिकार से चन्दावतों के विरुद्ध अस्त्र-धारण करना चाहते हो ? किस हक़ से तुम चन्दावतों का क़िला लेना चाहते हो ?

तेजसिंह—जिस अधिकार से भीलों को निकाल कर राठौड़ मारवाड़ में रहने लगे, और सिसोदिया मेवाड़ में रहने लगे उसी अधिकार से राठौड़ों ने सूर्यमहल पर भी अपना कब्ज़ा किया था । तिलकसिंह के पुरखों ने तलवार के ज़ोर से मेवाड़ में अपना अधिकार जमाया था । फिर पुरुषपरम्परा से मेवाड़ की रक्षा के लिए अपने प्राणों का भी कुछ मोह न कर राठौड़ों ने अपने उस अधिकार को दृढ़ किया । इस समय मेवाड़ पर राठौड़ों की अपेक्षा क्या चन्दावतों का ज़ोर अधिक है ? भला मेवाड़ की रक्षा के लिए राठौड़ से बढ़ कर किस चन्दावत ने अधिक वीरता दिखलाई है ? राठौड़ ने युद्ध में प्राण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देकर अपने हृदय के शोणित से मेवाड़ पर अधिकार जमाया है। राठौड़ ने जब जो कुछ अपने अधिकार में किया है, तलवार के बल से किया है—सम्मुख-युद्ध में वीरता दिखा कर किया है। वे इसके सिवा अधिकार करने का दूसरा उपाय नहीं जानते।

तेजसिंह की बुलन्द आवाज़ उस गुफा में बार बार गूँजने लगी। ऐसे समय तपस्विनी फिर धीर गम्भीर स्वर से बोली—बेटे! यद्यपि भीलों ने तुम्हारा प्रतिपालन किया है तथापि तुम क्षत्रिय धर्म को भलीभाँति जानते हो। वीरों का और नदियों का उत्पत्ति-स्थान कोई नहीं देखता। दोनों अपनी तेज़ी से ही जगत् विदित होते हैं। वे अपनी गम्भीरता और तीक्ष्ण धार के बल से ही संसार में प्रसिद्ध होते हैं। वे अपने तेज-बल से ही अधिकार प्राप्त करते हैं। उसी तेज-बल से यदि चन्डावत ने सूर्यमहल को फिर अपने अधिकार में कर लिया तो उसके लिए तिलकसिंह के पुत्र को रुष्ट न होना चाहिए।

तेजसिंह—यदि दुर्जयसिंह बाहु-बल से सूर्यमहल को ले लेता तो परम-शत्रु होने पर भी तेजसिंह उसे क्षमा कर देता। किन्तु वह नराधम राजनीति नहीं जानता; वह राजधर्म से अनभिज्ञ है। मेरे पिता की मृत्यु के अनन्तर उसने मेरी अनाथा माँ के हाथ से क़िले को ले लिया। वह मेरी माता के साथ सम्मुख युद्ध में असमर्थ होकर चोर की तरह क़िले में घुस आया और उसने मेरी माँ को मार डाला। यदि उसे इस भयङ्कर स्त्री-हत्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का दण्ड मिलना उचित हो, तो माँ ! आज्ञा दीजिए; उस नीच को दण्ड देने के लिए तेजसिंह तैयार है।

तपस्विनी—बेटा तेजसिंह ! तुम्हारे क्रोध का कारण मैं जानती हूँ। राठौड़ की वीरता भी मुझसे छिपी नहीं है। किन्तु तुम अभी बालक हो। इसलिए मैं तुम्हारी जाँच कर रही थी। अब मैं समझ गई कि तिलकसिंह के पुत्र को जैसा होना चाहिए तुम वैसेही हो। राठौड़-वंश की सन्तान में तुम्हें कोई अयोग्य नहीं कह सकता। तुम्हारी बातों से मैं ज़रा भी रुष्ट नहीं हूँ। मैं तुम्हारे पिता को जानती हूँ। उनके पुत्र को उन्हीं के समान पराक्रमी और नीतिज्ञ देख मैं बहुत प्रसन्न हुई। अब तुम जो कुछ चाहो मुझसे माँग लो, तपस्विनी के पास ऐसी कोई वस्तु नहीं जो तिलकसिंह के पुत्र के लिए अदेय हो।

तेजसिंह—माँ, आप भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों को जानती हैं। ब्रह्मा की यह सृष्टि नश्वर है। किसके ललाट में ब्रह्मा ने क्या लिख दिया है यह कोई नहीं जानता; किन्तु माँ, आप तपस्विनी हैं, आपकी दूरदर्शिनी दृष्टि से विधि की लिखी कुछ छिपी नहीं है। एक दिन बालक संग्रामसिंह इसी व्याघ्र-निकेतन पहाड़ पर अपने भाग्य की बात जानने के लिए आये थे। आज तिलकसिंह का पुत्र—स्थानच्युत, भीलपालित—अनाथ तेजसिंह उसी व्याघ्र-निकेतन पहाड़ की गुफा में अपने भाग्य की बात जानने के लिए आया है। मैं अपनी माता की हिंसा और वंश के अपमान का बदला कितने दिनों में चुका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकूँगा ? यही जानने के लिए मैं आपकी सेवा में आया हूँ। यदि मुझ अनाथ पर दया हो तो वह बात बतला कर मेरे सन्तप्त हृदय को आप शीतल करें।

तपस्विनी—बेटे ! भविष्य को जानने की इच्छा न करो। इस दुराशा को मन से दूर कर दो। मनुष्य का जीवन यद्यपि नश्वर है, क्लेश-परिपूर्ण है और चिन्ताओं से भरा हुआ है, तथापि उपेक्षा के योग्य नहीं है। जीवन उपेक्षणीय क्यों होगा? मधुर आश्वासन देनेवाली आशा बराबर अपने ऐन्द्रजालिक दीप को सामने रख कर भाँति भाँति की, जी लुभानेवाली, वस्तुओं को दिखलाती ही रहती है। क्या करने से क्लेश की शान्ति होगी और क्या करने से सुख मिलेगा,—इन मृगमरीचिकाओं को दिखला कर वह हृदय को शान्त रखती है। तेजसिंह ! भविष्य का परदा न हटाओ, इससे मायाविनी आशा का दीप बुझ जायगा; सुन्दर मरीचिका अदृश्य हो जायगी; जीवन आशा-शून्य, अवलम्ब-हीन और भोगशून्य हो जायगा। भविष्य को जान कर कौन ऐसा नश्वर जीव होगा जो इस दुःखमय संसार में जीवन धारण करना चाहेगा ? बेटे ! सन्तोष करो; भविष्य जानने की इच्छा न करो; हाँ कुछ और पूछना हो सो पूछो।

तेजसिंह—माँ, इस पहाड़ की एक तपस्विनी ने संग्रामसिंह का भविष्य बता दिया था। तपस्विनी का कथन सोलहोआने सत्य हुआ। अन्त में संग्रामसिंह ने सिन्धु नद से लेकर यमुना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नदी तक अपना राज्य स्थापन किया था। क्या आपके भविष्य-कथन से मुझ भाग्यहीन का प्रयत्न सफल न होगा?

तपस्विनी—संग्रामसिंह को जो इतना बड़ा राज्य मिल गया यह उनके भाग्य में लिखा था, कुछ तपस्विनी के कहने से ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने तपस्विनी के मुँह से केवल अपने भविष्य की बात सुनी थी और इसी से भाई के हाथ से मार खाकर उन्हें अपनी एक आँख भी गवाँनी पड़ी। घर से भाग कर वे बहुत दिनों तक जङ्गल-पहाड़ों में भटकते रहे। इसके बाद कितने ही दिनों तक साधारण भेड़ चरानेवालों के साथ रह कर उन्होंने दुस्सह क्लेश सहा। संग्रामसिंह की बात का स्मरण करके तुम भविष्य जानने की इच्छा न करो। कुछ और काम हो सो कहो।

तेजसिंह—अन्याय-युद्ध में जिसकी माता मारी गई है, चोरी से जिसका क़िला ले लिया गया है, भीलों की दया से जिसके प्राण बचे हैं, और भीलों ही के अन्न से जो पला है, उसके लिए इस जीवन में इससे बढ़ कर क्लेश और क्या हो सकता है? आप मना न करें। प्रतिहिंसा के सिवा यह दास और कुछ नहीं चाहता। इस दास के लिए यदि संसार में कुछ सुख है तो यही कि शत्रु को अपने किये दुष्कर्म का उचित दण्ड दे दे। मैं नहीं समझता कि भविष्य जानने से मेरे हक़ में क्या ख़राबियाँ होंगी, मेरा कौन सा सुख छिन जायगा? माँ, यद्यपि आपसे कोई बात छिपी नहीं है तथापि यदि आपकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज्ञा हो तो मैं एक बार आपसे अपने इस दुःखमय जीवन का कुछ वृत्तान्त कह सुनाऊँ । पहले आप मेरे जीवन की सारी घटनायें सुन लें, तब जो उचित समझें आज्ञा दें । जो जो कष्ट मैं भोग चुका हूँ उनकी अपेक्षा भविष्य जानने का कष्ट क्या अधिक होगा ?

तपस्विनी—जीवन-सम्बन्धी भयङ्कर घटनायें सुन कर भला मैं क्या करूँगी ? वे बातें सुनने से मुझे इस समय स्वप्नवत् जान पड़ेंगी, तथापि तुम जो कहना चाहते हो कहो, मैं उसे अवश्य सुनूँगी ।

तेजसिंह—आपकी इस आज्ञा से मैं चिरबाधित हुआ । सुनिए—

तेजसिंह ने अपने ऊपर बीती हुई बातें कहना शुरू किया । पहले की बातों का स्मरण करने से उनका हृदय फटने लगा । क्रोध और विषाद से उनके श्वास की गति चञ्चल होगई । तेजसिंह ने कम्पित स्वर से, अपनी राम-कहानी कहना प्रारम्भ किया । उनका वह काँपता हुआ कातर स्वर उस गुफा में गूँजने लगा ।

दसवाँ परिच्छेद

तपस्विनी की आज्ञा

"ध्वंसेत हृदयं सद्यः परिभूतस्य मे परैः ।
यद्यमर्षप्रतीकारभुजालम्बं न लम्भयेत् ॥"

किरातार्जुनीय

माँ, मैं पहले ऐसा न था । तेजसिंह की दशा सदा ऐसी न थी । तेजसिंह के हृदय में दिन-रात इस प्रकार प्रतिहिंसा की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिन्ता नहीं रहती थी। उसमें तो सदा यश और विजय की भावना ही बनी रहती थी। उसे भीलों के आश्रय की अपेक्षा न थी। वह राजपूतों के साथ रह कर सुख से समय बिताता था।

कौन ऐसा है जो राठौड़ तिलकसिंह का नाम न जानता हो? कौन ऐसा है, जिसने सूर्यमहल की बड़ाई न सुनी होगी? राठौड़-वंश के स्वामी जयमल्ल स्वयं तिलकसिंह के दहने हाथ बने रहते थे। उन्होंने स्वयं सूर्यमहल में आकर मेरे पिता तिलकसिंह की वीरता की प्रशंसा की थी।

माँ, मैं उस समय आज कल की तरह अनाथ और पर्वत-निवासी न था। तब मैं तिलकसिंह का उत्तराधिकारी और सूर्यमहल का युवराज था।

चन्दावत दुर्जयसिंह के पूर्वपुरुषों के साथ राठौड़ तिलक-सिंह के पुरुषों का चिरकालिक विरोध है। वंश-परम्परा से शत्रुता चली आती है और पहले ही से उन दोनों में युद्ध भी बराबर होता आया है। जब तक चन्द्र-सूर्य रहेंगे तब तक शायद इन दोनों में विरोध बना रहेगा। इस निर्वासित, भील-रक्षित, राठौड़-सन्तान के शरीर में वंशानुगत रोषाग्नि दिन-रात जलती ही रहती है। वह आग दुर्जयसिंह के हृदय के शोणित से ही बुझेगी।

राठौड़ का आदिम निवास-स्थान मारवाड़ है। तिलकसिंह के पुरखा ने वहाँ से आकर तलवार के हाथ चन्दावत को हटा कर सूर्यमहल ले लिया। तब से उनकी सन्तान परम्परा से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वहीं रहने लगी। ये बातें आपसे कुछ छिपी नहीं हैं। राठौड़ फिर तलवार के हाथ उस क़िले को लेगा और चन्दावत को वहाँ से निकाल बाहर करेगा।

पिताजी जब तक जीते रहे तब तक दुर्जयसिंह के साथ बराबर युद्ध होता ही रहा। सिंह के रहने की जगह शृगाल कब प्रवेश कर सकता है? उस पामर ने कई बार सूर्यमहल पर आक्रमण किया, किन्तु मेरे पिता के सामने उसकी एक भी न चली। युद्ध में बार बार हार खाकर उसने भाग कर प्राण बचाये।

आज आठ वर्ष हुए, राठौड़पति जयमल्ल के साथ मेरे पिता जी चित्तौर की रक्षा करने गये थे। चित्तौर की रक्षा तो न हो सकी, किन्तु माँ! जयमल्ल और तिलकसिंह की वीरता देख कर स्वयं अकबरशाह दङ्ग हो रहे हैं। सालुम्बरापति की मृत्यु के बाद उन दोनों ने जिस तरह चित्तौर के द्वार की रक्षा की थी, जिस बहादुरी के साथ लड़ कर अकबरशाह के सम्मुख-युद्ध में प्राण त्याग किया था, उसका यश चारणगण अब भी देश-देशान्तर में गाते फिरते हैं। चारणों के मुँह से उनका यशोगान सुन कर मेरी विधवा माता का हृदय काँप उठा। इस बालक का हृदय भी दृढ़ न रह सका। मेरी माता हुलस कर बोली—"प्राणनाथ स्वर्गलोक को चले गये, उनके बिना यह दासी यहाँ अकेली रह कर कौन सा सुख भोगेगी? वे इस दासी के आने की बाट जोहते होंगे।" यह कह कर उसने दासियों को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिता बनाने की आज्ञा दी । वह ऐसी आज्ञा क्यों नहीं देती ? पिताजी के जीवन-समय में उसका बेहद आदर-सम्मान था ।

तेजसिंह का कण्ठ सहसा रुद्ध हो गया । उनकी आँखों से दो बूँद आँसू टपक पड़े । फिर धीरज धर कर कहने लगे—माँ, मुझको आप क्षमा करें । तेजसिंह बहुत दिनों से रोना भूल गया था । आज स्नेहमयी माता की याद आने से आँसुओं को न रोक सका । माँ जब सती होने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर चुकी तब राजभवन के सभी लोगों ने आकर उसे सती होने से रोका । सब लोग तरह तरह से समझा बुझा कर थक गये पर माँ ने किसी की बात न सुनी । वह स्वामी के चरण-कमलों की सेवा में रहने के हेतु स्वर्ग जाने का संकल्प स्थिर कर चुकी थी । वह अपनी प्रतिज्ञा से विचलित न हुई ।

फिर मैंने उससे जाकर कहा—"माँ, मैं अभी लड़का हूँ । मेरी भुजाओं में अभी इतना बल नहीं जो शत्रु का सामना कर सकूँ । तुम सती हो जाओगी तो सूर्यमहल की रक्षा कौन करेगा ? दुर्जयसिंह के साथ कौन लड़ेगा ? इस बार वह मेरी करुणा-पूर्ण बात सुन कर अपने संकल्प को भूल गई और बोली—"अच्छा, तेरे लिए मैं कुछ दिन और प्राण धारण करूँगी ।" उसने दासियों को बुला कर कहा—"मेरे चितारोहण करने में अभी कुछ विलम्ब है । चित्तौर की रक्षा के लिए पुत्त की माता और स्त्री ने युद्ध किया था । सूर्यमहल की रक्षा के लिए एक और राजपुतानी सम्मुख-युद्ध करेगी ।" यह कह कर वह पिता के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अस्त्रागार में गई। वहाँ उसे उनके हाथ की एक कटार मिली। तब से वही कटार मेरी माता का कण्ठ-भूषण हुई।

दुर्जयसिंह ने जब मेरी माँ का प्रण सुना तब वह कायर डर गया। क़िले पर आक्रमण करने का उसे साहस न हुआ। अन्त में उसने द्वारपालों को धन देकर मिला लिया और चोर की तरह रात में चुपचाप द्वार खोल कर भीतर प्रवेश किया।

फिर भी क़िले के भीतर राठौड़ योद्धाओं के साथ घमासान लड़ाई हुई। उन डकैतों ने समझ लिया कि राठौड़ वीर मृत्यु से नहीं डरते; वे शत्रु-सेना को मार कर मरने ही में जीवन की सफलता समझते हैं।

माँ उस समय खाई के पासवाले कोठे के झरोखे पर खड़ी थी। बायें हाथ से वह मुझको थामे हुई थी और दहने हाथ में वही कटार लिये थी।

अचानक आक्रमण होने के कारण मेरी ओर के असावधान योद्धा क्रमशः मारे गये। दुर्जयसिंह की सेना धीरे धीरे उस ओर बढ़ने लगी जिधर मेरी माँ थी। आख़िर किवाड़ तोड़ कर हल्ला मचाते हुए वे दुष्ट घर में घुसे। सबके आगे, लोहू से लथ पथ, दुर्जयसिंह था।

उस नर-पिशाच को देख कर माँ तनिक भी न डरी। योद्धाओं का प्रचण्ड कोलाहल सुन कर उसके हृदय में ज़रा भी घबराहट पैदा न हुई। उसने स्वर्गीय स्वामी की जय मना कर उस चोखी कटार को ऊपर की ओर उठाया और क्रोध से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जलती हुई दृष्टि से उस नराधम की ओर देखा। माँ, उस कटार को हाथ में लिये,—बड़े वेग से दुर्जयसिंह की ओर दौड़ी। वह राजपूत-कुलकलङ्क उसी घड़ी इस संसार से चल बसता, किन्तु उसके एक सिपाही ने अपने प्राण देकर अपने मालिक की जान बचाई। माता की उस तीक्ष्ण कटार ने दुर्जयसिंह के सिपाही के हृदय का रक्त-पान किया। उसी समय दस योद्धाओं ने मिल कर मेरी असहाया विधवा माता को मार डाला।

तेजसिंह कुछ देर चुप रहे। उनकी आँखों से आग की चिनगारियाँ झड़ रही थीं। कुछ देर में सावधान होकर फिर कहने लगे— मैं उस समय केवल दस वर्ष का था, तो भी मैंने माँ के हाथ से कटार लेकर दुर्जयसिंह को मारने की चेष्टा की, किन्तु वह कायर अपने प्राण लेकर पहले ही वहाँ से भाग गया था। मैं उसको वहाँ न देख, झरोखे को तोड़, झट कूद कर ख़ंदक में जा गिरा। सम्मुख-युद्ध में उस कायर को अब एक बार देख पाऊँ तो उससे मातृ-हत्या का बदला चुका लूँ और अपने वंश के अपयश को धो बहाऊँ। केवल इसी आशा से तब से आज तक, आठ वर्ष हुए, भीलों के साथ जंगल और गुफा में रह कर मैंने समय बिताया है। उसी आशा से अब तक मैं इतना कष्ट सह कर भी जीवन धारण किये हुए हूँ। मैं निर्जन वन में घूमता फिरता हूँ। मैं पहाड़ की कन्दरा में रहता हूँ। मैं भीलों का शरणागत हुआ हूँ और हृदय की दुःसह यन्त्रणा सह कर भी अब तक जीता हूँ। यह केवल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसी लिए कि एक दिन दुर्जयसिंह के साथ भेंट होगी । आप दुर्जयसिंह के साथ एक बार युद्ध करने की आज्ञा दें । वह युद्ध में एक बार मेरे सामने से भाग जाय, मैं इतना ही चाहता हूँ । तेजसिंह के मन में यदि कुछ लालसा है तो इतनी ही ।

बड़ी देर तक कोई कुछ न बोला । तेजसिंह का गम्भीर स्वर बार बार उस गुफा में प्रतिध्वनित होकर लीन हो गया । बड़ी देर तक गुफा में सन्नाटा छाया रहा ।

अब तपस्विनी धीर गम्भीर स्वर से बोली—वंशानुगत विरोध राजपूतों में बराबर चला आता है । तिलकसिंह और दुर्जयसिंह के वंश में जो परस्पर शत्रुता है वह न मिटेगी । उस क्रोधाग्नि से तिलकसिंह के बेटे का हृदय जला करेगा, यह कुछ आश्चर्य की बात नहीं है । किन्तु विदेशीय शत्रु के आगे मेवाड़ का घरेलू झगड़ा ठंडा पड़ गया है । मेवाड़ की यह पुरानी प्रथा है । बेटा तेजसिंह ! तुम्हें भी इस प्रथा का पालन करना चाहिए ।

तेजसिंह—विदेशीय शत्रुओं के साथ युद्ध रहने पर भी क्या पामर दुर्जयसिंह ने चोर की भाँति सूर्यमहल को नहीं ले लिया ?

तपस्विनी—अकबर ने जब चित्तौर को तहस नहस कर दिया तब राना उदयसिंह के साथ उनका कलह शान्त हुआ । युद्ध बन्द हो गया । राना उदयपुर में राजधानी स्थापन कर निर्विघ्नतापूर्वक रहने लगे । उसी समय दुर्जयसिंह ने सूर्यमहल को हस्तगत किया था ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेजसिंह—अब भी विदेशियों ने युद्ध से हाथ नहीं खींच लिया है। सुना है, मानसिंह ने क्रुद्ध होकर दिल्ली से मेवाड़ की ओर प्रस्थान किया है। महाराना भी चुपचाप नहीं बैठे हैं, वे भी युद्ध की आयोजना कर रहे हैं, किन्तु मालूम नहीं, शत्रु अभी कहाँ है?

तपस्विनी—बरसात के दिनों में लड़के भी इसी तरह पूछते हैं कि मेघ कहाँ है। असाढ़ की घटा जिस समारोह से आती है उससे भी अधिक समारोह के साथ शत्रु-सेना आ रही है। जिस तलवार से तुम दुर्जयसिंह को मारना चाहते हो उस तलवार को लेकर अभी हल्दीघाटी में राना का साथ दो। इस वृद्धा की बात मानो, हल्दीघाटी में अभी अनेक आयुधों और अनेक योद्धाओं की बड़ी आवश्यकता है। यहाँ तेजसिंह और दुर्जयसिंह दोनों वीरों का उपस्थित होना ज़रूरी है। विदेशीय शत्रु के साथ युद्ध छिड़ जाने पर अपने घरवालों से झगड़ना राजनीति के विरुद्ध है। जब दूसरों के साथ लड़ने-झगड़ने की नौबत आवे तब अपने घरवालों के साथ मेल कर लेना ही रजवाड़ों की सनातन प्रथा है।

तेजसिंह—माँ, यदि मेवाड़ की रक्षा के लिए युद्ध अवश्यंभावी है तो राठौड़ उस युद्ध में योग दिये बिना न रहेंगे। किन्तु जो अधम राजपूत अब तक राजधर्म को भूला हुआ है, जिसने चोर की भाँति क़िले में घुस असहाय विधवा की हत्या की है, और जिसने मेरे पिता के वंश को कलङ्कित किया है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस नराधम राजपूत-कुल-कलङ्क को जीते जी मैं कैसे देख सकता हूँ?

तपस्विनी—विदेशीय युद्ध जारी रहते घर का झगड़ा ठीक ।

कुछ देर तक दोनों चुप रहे। इसके बाद तपस्विनी ऊपर की ओर दृष्टि कर कुछ देर ध्यानस्थ हुईं, फिर अति गम्भीर स्वर से बोलीं—बेटे, आज ही तो तुमने दुर्जयसिंह के प्राण बचाये हैं।

तेजसिंह चकित होकर बोले—माँ, आप सब जानती हैं। उस दुष्ट को अपने हाथ से मारूँगा, इसीलिए वराह के आक्रमण से उसे बचाया था।

तपस्विनी—जब दुर्जयसिंह को अपनी गुफा में ले जाकर आश्रय दिया तब भी तो उसे नहीं मारा।

तेजसिंह—थके हुए और शरण में आये हुए व्यक्ति के साथ युद्ध करना राजनीति के विरुद्ध है। मेरी इच्छा तो यह है कि पिता के अधिकृत क़िले पर आक्रमण कर सम्मुख-युद्ध में उसे समरशायी करूँगा। यही मेरा प्रण है। आप सूर्यमहल पर आक्रमण करने की आज्ञा दें। आपका आशीर्वाद होगा तो मैं उस चोर के हाथ से अपने पिता के सुरक्षित क़िले को अवश्य छीन लूँगा और उस तस्कर को उसकी की हुई अनीति का उचित दण्ड दूँगा।

तपस्विनी—बनैले सूअर से शत्रु की रक्षा करके तुमने राज-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूत-धर्म का पालन किया है और थके हुए के साथ युद्ध न करके राजनीति का पालन किया। बेटा तेजसिंह! तुम मेरी बात मानो, विदेशीय युद्ध के समय गृह-कलह को भूलकर राज-पूत-धर्म का पालन करो। तुम तिलकसिंह के सुयोग पुत्र हो। तिलकसिंह की वीरता तुम्हारी नस नस में विद्यमान है। विजय का टीका तुम्हारे ललाट पर शोभायमान हो रहा है। इसलिए तिलकसिंह की तरह राजपूत-धर्म का पालन करो। जब दस वर्ष के भीतर विदेशीय युद्ध निरस्त होगा तब सूर्यमहल में फिर राठौड़ का सूर्य देदीप्यमान होगा।

एकाएक गुफा का दीप बुझ गया। उस अन्धकारमय गुफा में तपस्विनी की आज्ञा प्रतिध्वनित होने लगा। उस अँधेरी गुफा से तेजसिंह बाहर निकले और दूसरे दिन महाराना प्रताप-सिंह के सैन्य में जा मिले। हल्दीघाटी में जिस दिन घोर युद्ध हो रहा था उस दिन राठौड़ों की तलवार बेकार नहीं पड़ी थी।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

भील-प्रदेश

"अहो मोहप्रायमेषां जीवितं साधुजनविगर्हितञ्च चरितं, तथाहि पुरुषपिशितोपहारे धर्मबुद्धिः, आहारः साधुजनविगर्हितो मधुमांसादिः, श्रमो मृगया, शास्त्रं शिवारुतं, उपदेष्टारः कौशिकाः।" कादम्बरी

हल्दीघाटी का युद्ध समाप्त हो जाने पर एक दिन तीसरे पहर तेजसिंह अकेले, भीलों के पहाड़ी प्रदेश के बीच, सड़क

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सड़क जा रहे थे। यदि तेजसिंह चिन्ता में अभिभूत न रहते तो उस निर्जन भील-प्रदेश की शोभा देख कर बहुत विस्मित होते। सड़क के दोनों किनारे हज़ारों हाथ ऊँचे काले पहाड़ प्राचीर की तरह खड़े हैं, मानो वे उस निर्जन मार्ग की रक्षा कर रहे हैं। पहाड़ की चोटी पर और उसके पास भाँति भाँति के वृक्ष और लतायें पवन का झोंका खा कर झूम रही हैं। दोपहर के बाद सूर्य का प्रकाश बीच में पहाड़ की आड़ पड़ जाने से, नीचे सड़क तक नहीं पहुँचता। तेजसिंह जिस रास्ते से जा रहे थे वहाँ पहर भर दिन रहते ही अँधेरा हो गया था। कहीं कहीं ऊँचे पहाड़ की चोटियों के अवान्तर से सूर्य की किरणें रास्ते पर पड़ती हैं और ज्यों ज्यों सूर्य पच्छिम ओर हटते हैं त्यों त्यों वह आलोक छिपता जाता है। जहाँ सड़क के किनारे घने वृक्ष हैं वहाँ तो एक-दम अन्धकार हो गया है। उस निर्जन मार्ग के पास एक छोटी सी पहाड़ी नदी कलकल शब्द करती हुई बड़ी तेज़ी के साथ बह रही है। मानो पार्श्ववर्ती सुविशाल कठोर पहाड़रूपी पहरेदारों का उपहास करती हुई कोई क्रीड़ा-कुशल-बालिका बड़े वेग से दौड़ी जा रही हो। कहीं कहीं सूर्य की किरण पड़ने से नदी का जल चमचमा रहा है। कहीं कहीं पहाड़ों से झरने का पानी झर झर कर नीचे गिरता है और उस नदी में जा मिलता है। भील-प्रदेश की अद्भुत शोभा सी शोभा संसार के विरले ही स्थानों में देखी जाती है। फ़्रांस के एक आधुनिक यात्री ने मुक्त-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कण्ठ से इस बात को स्वीकार किया है कि यूरोप के समस्त मनोहर स्थानों की अपेक्षा भारत का भील-प्रदेश सुन्दर और विस्मयोत्पादक है।

तेजसिंह ऐसे हृदयहारी शून्य मार्ग से अकेले जा रहे थे। पहाड़ की चोटी पर जगह जगह भीलों के घर दिखाई दे रहे हैं। नीचे की सड़क से देखने पर जान पड़ता है, जैसे वे मनुष्यों के घर नहीं, कुलङ्ग पक्षी के घोंसले हों। भीलों की बस्ती के आस पास चारों ओर, और कुछ पहाड़ के नीचे, जोती हुई भूमि है। उस भूमि से जो अन्न उत्पन्न होता है उसी से भीलों की गुज़र होती है। दूसरी वृत्ति भीलों की वंशानुगत डकैती है। पर्वत के शिखर पर इधर उधर—आकाशस्थित प्रतिच्छाया की तरह—काले काले कितने ही भयङ्कर भील लँगोटी लगाये और धनुष-बाण हाथ में लिये खड़े हैं। वे लोग इस निर्जन मार्ग और भील-प्रदेश के रक्षक हैं। तेजसिंह की वीराकृति यदि प्रत्येक भील की परिचित न होती, यदि वे भील तेजसिंह को न पहचानते होते तो प्रत्येक भील धनुष पर तीर चढ़ाये बिना न रहता। उस पहाड़ की तराई से कुछ आगे बढ़ कर तेजसिंह एक अत्यन्त रमणीय विस्तीर्ण सरोवर के किनारे पहुँचे। वह पूर्ववर्णित पहाड़ी नदी इसी स्वच्छ सुन्दर सरोवर से आ मिली है। सरोवर के चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ नज़र आते हैं। सरोवर के किनारे पहुँच कर तेजसिंह ने एक बार सामने की ओर पलक उठा कर देखा और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वहाँ की मनोहारिणी प्राकृतिक शोभा देख कर कुछ देर के लिए अपनी चिन्ता एक-दम भुला दी।

सायंकाल के सूर्य की लालिमा उस सरोवर के पानी पर पड़ कर एक अपूर्व शोभा दिखला रही है। पहाड़ की छाँह न्यारी ही शोभा दे रही है। यहाँ न कोई मनुष्य दिखाई देता है और न किसी तरह का कोई शब्द ही सुन पड़ता है। सर्वत्र शान्ति छाई है। मानो प्रकृति ने सृष्टिकर्ता ईश्वर की आराधना करने के लिए यह ऊँचे पहाड़ों से घिरा हुआ शान्त सरोवर बना रक्खा है। तेजसिंह बड़ी देर तक चुपचाप उस सरोवर की विचित्र शोभा को देखते रहे। फिर उस सरोवर के स्वच्छ जल से हाथ मुँह धोकर वे एक पत्थर के टुकड़े पर बैठ गये।

हम यहाँ उस अपूर्व देश के निवासी भीलों के सम्बन्ध की कुछ बातें लिख देना आवश्यक समझते हैं।

भारतवर्ष के जिस सुन्दर प्रदेश में राजपूत लोग आकर बसे हैं और तलवार के ज़ोर से उन्होंने जिस प्रदेश में राज्य स्थापन किया है वह प्रदेश राजपूतों के आने के पहले भीलों के रहने की जगह थी। जब राजपूतों ने भीलों से उपजाऊ भूमि और तराई आदि उपयुक्त स्थान ले लिया, तब स्वाधीनताप्रिय भील विन्ध्याचल और अर्बली पहाड़ पर जा बसे और अपनी स्वाधीनता की रक्षा करने लगे। मालूम होता है, ईसा के जन्म के कुछ ही दिन पीछे ये सब काम हुए थे।

पहाड़ी प्रदेश में आकर जब से भील रहने लगे तब से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भीलों और राजपूतों के बीच मित्रता का भाव है। भीलों ने राजपूत राजाओं की नाम-मात्र की अधीनता स्वीकार की थी। किन्तु वास्तव में वे पहाड़ पर निवास करके सम्पूर्ण रूप से स्वाधीनता का ही उपभोग करते थे और अवसर हाथ आ जाने पर वे लोग क्या हिन्दू क्या मुसलमान सभी को लूटते और लूट से जो धन मिलता था उससे निर्वाह करते थे। यह सब होते हुए भी महाराना का राजतिलक होने के समय कोई एक भील सर्दार, कुछ भेट लेकर, राना के निकट हाज़िर होता था। राजपूतों पर जब कोई विपत्ति आ पड़ती, या किसी युद्ध में उन्हें सहायता की आवश्यकता होती तब भील योद्धा यथासाध्य उनको सहायता देते और उनकी रक्षा करते थे।

भारतवर्ष की प्रायः समस्त असभ्य जातियाँ, हिन्दुओं के किसी एक देवता को मान कर, अपने को हिन्दू-सन्तान बतलाती हैं। भीलों का कथन है कि—"हम लोग शवर-रूपधारी महादेव के औरस पुत्र हैं। महादेव ने किसी समय जङ्गल में घूमते घूमते एक जङ्गली जाति के मनुष्य की बालिका के रूप पर मोहित हो कर उसके साथ ब्याह कर लिया। उस बालिका के गर्भ से एक काला-कलूटा पुत्र उत्पन्न हुआ। उसने किसी दिन महादेव के वाहन को मार डाला। इससे महादेव ने उसे शाप दे दिया। तब से शापग्रस्त होकर वह भील नाम से जङ्गल जङ्गल घूमने लगा। हम लोग उसी की सन्तान हैं।"

पहाड़ पर भीलों की बस्ती कहाँ तक है, इसका वर्णन पहले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो चुका है । बस्ती के भीतर प्रायः प्रत्येक भील का घर, गढ़ी की भाँति, चारों ओर से भाँति भाँति के पेड़ों और काँटों से घिरा रहता था । जब कोई दुश्मन भीलों की बस्ती पर आक्रमण करता था तब भीलों की स्त्रियाँ, छोटे छोटे बच्चों और गाय-भैंस आदि पालतू पशुओं को साथ लेकर, समीपवर्ती दुर्गम पहाड़ की किसी दुर्भेद्य कन्दरा में या किसी घोर अगम्य जङ्गल में जा छिपती थीं । पुरुषगण धनुष-बाण के द्वारा, और आक्रमणकारी शत्रुओं के ऊपर पत्थर फेंक कर, अपने गाँव की और अपने घर-द्वार की रक्षा करते थे ।

भीलों में भी अलग अलग कई एक दल हैं । प्रत्येक दल में एक मुखिया होता है, उसी की राय से सब लोग काम करते हैं । इन भिन्न भिन्न दलों में विरोध और विवाद बराबर बना ही रहता है, किन्तु युद्ध में या किसी सङ्कट के समय सभी दल आपस में मिल जाते हैं । जब बाहरी शत्रु से सामना करने का अवसर आता है तब ये लोग आपस के कलह-विवाद को भूल जाते हैं और सभी दलों के वीर बात की बात में एकत्र होकर अपनी जाति को विपत्ति से बचाने की चेष्टा करते हैं । जब दिन में इन्हें दूसरे दलवालों को अपनी विपद्-वार्ता भेजने का अवसर नहीं मिलता तब ये लोग रात में बाघ, गीदड़ या किसी प्रसिद्ध पक्षी की बोली बोल कर संकेत द्वारा उन्हें अपने सङ्कट की सूचना देते हैं और यह बात रातोंरात भीलों की बस्ती में प्रायः सर्वत्र फैल जाती है; और झुंड के झुंड भील योद्धा अपना अपना दल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाँध कर सब एक साथ शत्रु के विनाश की चेष्टा में तत्पर हो जाते हैं । मेवाड़ के पहाड़ी प्रदेश में अब भी प्रायः बीस लाख भील रहते हैं ।

भीलों में जातिभेद नहीं है । वे लोग हिन्दुओं के एक आध देवता को और भाँति भाँति की पिण्डिकाओं को देवता मान कर पूजते हैं । महुआ के वृक्ष को वे बहुत चाहते हैं और उसके फूल से मद्य बना कर उसका सेवन करते हैं ।

भीलों में पुरुषों का क़द मझोला होता है; और काला रङ्ग होता है । वे साहसी होते हैं । काम पड़ने पर असाधारण शारीरिक बल और प्रौढ़ता दिखलाते हैं । भीलों की स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा कुछ गोरी और लावण्ययुक्त होती हैं । वे कपड़े से छाती के आधे हिस्से और कमर को छिपाये रहती हैं । गले में घुँघचियों की माला और हाथ में लाह की चूड़ियाँ और कौड़ी आदि का भूषण धारण करती हैं । कोई कोई जंगली फूल-पत्तों से भी अपना भली भाँति शृङ्गार करती हैं । इन लोगों में व्याह की रीति बहुत सीधी है । किसी नियत दिन में गाँव भर के अविवाहित युवक और युवतियाँ इकट्ठी होती हैं । उनमें जिस युवक ने जिस युवती को पसन्द किया उसे साथ लेकर वह एक निविड़ जंगल में चला जाता है, वही निर्जन वन उन दोनों के लिए निधुवन का काम देता है । वहाँ कई दिन तक दोनों विहार करते हैं और फिर अपने गाँव में लौट आते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

असभ्य भीलों में दो गुण असाधारण पाये जाते हैं। (१) तो यह कि जो कोई उनका उपकार करता है उसे वे कदापि नहीं भूलते, (२) जो बात वे एक बार कह देंगे उसका जीते जी उल्लङ्घन न करेंगे।

बारहवाँ परिच्छेद

भील-बालिका

"का उण धन्या इत्थि आ जा इमिणा परिमागणा अत्तालआं विणोदेदि"

विक्रमोर्वशी।

तेजसिंह जिस पहाड़ के नीचे, सरोवर के तट पर, अब तक बैठे हैं उस पहाड़ के ऊपर भीमचन्द्र नामक एक भील सर्दार की बस्ती थी। उस बस्ती के समीप एक गुफा थी। इसी गुफा में भीलों के बीच दुर्जयसिंह को पाठक एक बार देख चुके हैं।

सरोवर के किनारे, एक ऊँचे शिलाखण्ड पर, तेजसिंह बैठे हैं। एकाएक एक भील की लड़की ताली बजाती हुई हँसते हँसते वहाँ आकर बैठ गई और बाल्यकाल की चपलता के कारण सरोवर का जल लेकर तेजसिंह के शरीर पर छिड़कने लगी। तेजसिंह उस बालिका को पहचानते थे। इससे उन्होंने बालिका का हाथ पकड़ कर उसे अपने पास बैठाया; और वे चिन्तित चित्त से उसके केशपाश को सुरझाने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भील की कन्या भीलों ही की भाँति साँवली थी। आँखें स्वच्छ थीं और मुखड़ा अच्छा था। वह पहाड़ पर चढ़ने और उतरने में बड़ी तेज़ थी। अन्यान्य भीलों की तरह उसने जन्म ही से चतुरता और सतर्कता सीखी थी। कोई शब्द सुन कर या किसी वस्तु को दूर ही से देख कर वह झट उसके कारण का अनुमान कर लेती थी। उसकी खुली हुई काली काली लटें माथे पर चारों ओर बिखरी हुई थीं। दृष्टि सदा ही चौकन्ना बनी रहती थी। उसका स्वभाव बड़ा ही चञ्चल और कौतुक-प्रिय था। कभी वह पत्थर के छोटे टुकड़ों को लेकर और कभी सरोवर का स्वच्छ जल लेकर खेलती थी। कभी दूसरे के सर्वाङ्ग को पानी से भिगो कर ख़ूब हँसती थी। इतना चपल स्वभाव होने पर भी वह तेजसिंह को चिन्तत देख कर कभी कभी दो तीन घड़ी तक चुपचाप उनके पास बैठ कर प्रीति-पूर्वक उनका मुँह निहारा करती थी। बालिका का कभी अत्यन्त धीर गम्भीर स्वभाव और कभी अत्यन्त चञ्चलता देख सभी लोग विस्मित होते थे। उसकी चञ्चलता और गम्भीरता देख कर सब लोग यही कहते थे कि देखने में यह बालिका जान पड़ती है किन्तु ज्ञान इसका बालिका का ऐसा नहीं है।

तेजसिंह मन ही मन क्या सोच रहे थे ? बरसात का आगम देख शत्रुगण मेवाड़ छोड़ कर चले गये हैं। इसलिए तेजसिंह के मन में युद्ध की चिन्ता न थी। विदेशीय शत्रु के साथ युद्ध छिड़ने पर गृह-कलह अच्छा नहीं अतएव वे सूर्यमहल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की भी चिन्ता नहीं कर रहे थे । तो फिर वे किस बात की चिन्ता कर रहे थे ?

भील की कन्या बड़ी देर से बैठी हुई सरोवर के जल से अपने हाथ को भिगो रही थी और तेजसिंह के घुटने पर सिर रख कर उनके मुँह को निहार रही थी । बहुत देर तक उनके मुँह की ओर देख कर उस बालिका ने एक गीत आरम्भ किया । गीत का भाव यही था कि "बाल्य-काल का स्वप्न कभी कभी हृदय में स्मरण हो आता है; बाल्यावस्था में देखी हुई मुख की शोभा कभी कभी आँखों के सामने झलक जाती है । बचपन का प्रेम छिपी हुई आग की तरह कभी कभी प्रज्वलित हो उठता है ।" वह इसी मर्म का एक सीधा-सादा गीत गाने लगी ।

उसका गाना सुन कर तेजसिंह एकाएक चौंक उठे । वे बाल्यकाल की कुछ बातें मन ही मन सोच रहे थे । भील की बालिका किस तरह उनके मन की बात समझ गई ? उन्होंने बालिका का नाम लेकर पुकारा ।

बालिका ने पानी में से हाथ निकाल कर तेजसिंह की ओर देखा । उसके मुँह पर किसी तरह की चिन्ता का कुछ लक्षण दिखाई नहीं दिया । तेजसिंह ने उस बालिका के मुँह की ओर देख कर सोचा—यह छोटी सी बालिका मेरे मन की बात क्या समझेगी । जो गीत जानती है उसी को अपनी मौज से गा रही है ।

बालिका खिलखिला कर हँस उठी । तेजसिंह के मन में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर सन्देह हुआ। उन्होंने पूछा—मैं अपने बाल्य-काल की बात सोच रहा था। अच्छा बताओ तो सही, तुमने कैसे मेरे मन की बात जानी?

बालिका हँस कर बोली—बिना तुम्हारे कहे मैं कैसे जानूँगी? तुम क्या सोच रहे थे यह तुम जानो, मैं क्या जानूँ। स्वप्न की बात सोच रहे थे या फूल की?

इस बार तेजसिंह को और भी गम्भीर चिन्ता हुई। उनकी भौंहें सिकुड़ गईं। उन्होंने आश्चर्य से भरे हुए स्वर में पूछा—मैं फूल की बात सोच रहा था, यह तुमने कैसे जाना?

बालिका ने भोलापन लिये सभय दृष्टि से तेजसिंह की ओर देख कर कहा—मैं तुम्हारे मन की बात कैसे जानूँगी? बचपन में लोग फल-फूल की बातें स्वप्न में नहीं देखते तो और क्या देखते हैं?

तेजसिंह ने बालिका के मुँह का सरल भाव देख कर मन ही मन सोचा—"मैंने मिथ्या सन्देह किया था।" प्रकाश्य कहा—मैं सचमुच बाल्य-काल में फूलों का स्वप्न देखता था, उसी को इस समय स्वप्नवत् सोच रहा था। तुमने अपने मन से गाया है।

बालिका—भीलों की समझ विलक्षण होती है। वे भाँति भाँति की वस्तुएँ देखते हैं, कितनी ही तरह की बातें सुनते हैं। यदि तुम भील होते—

तेजसिंह—भील होने से क्या होता?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेजसिंह के हाथ में उस बालिका का हाथ था। उसने चुपचाप अपना हाथ उनको दिखलाया।

तेजसिंह ने फिर पूछा—भील होने से क्या होता ?

बालिका ने हँस कर कहा—तुम अन्धे तो नहीं हो ? क्या कुछ विभिन्नता नहीं देख पड़ती ? यदि तुम भील होते तो तुम्हारा हाथ इतना गोरा न होकर मेरी तरह काला होता।

भील-बालिका यथार्थ ही में बालिका है। वह इतनी देर से केवल वर्ण-विभेद की ही बात सोच रही थी।

तेजसिंह ने फिर स्नेह-पूर्वक कहा—शीघ्र घर भाग जाओ। घटा घिर आई है। अब पानी बरसने में विलम्ब नहीं है।

बालिका—मैं न जाऊँगी।

तेजसिंह—क्यों ?

बालिका—मुझे घटा देखना अच्छा लगता है।

तेजसिंह—क्यों ?

बालिका—काले बादल के साथ बिजली का खेल देखने में बड़ा ही अच्छा लगता है।

तेजसिंह ने फिर बालिका की ओर देखा। वह बड़ी सरलता से बिजली और काले बादल की ओर देख रही थी।

तेजसिंह ने धीमे स्वर में कहा—तुम सचमुच बालिका हो या बालिका के रूप में प्रवीणा स्त्री ? मैं अब तक तुम्हें भली भाँति नहीं पहचान सका।

कुछ ही देर में तेजसिंह ने पलक उठा कर देखा, बालिका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का कहीं पता नहीं। वह चञ्चला पहाड़ के किसी अन्धकार-मय स्थान में जा छिपी। दूर से केवल उसकी हँसी-मात्र सुन पड़ी। बालिका वास्तव में बड़ी ही विचित्र बालिका थी।

तेरहवाँ परिच्छेद

भीलों की बस्ती

"अंशावतारमिव कृतान्तस्य सहोदरमिव पापस्य सारथिमिव कलि-कालस्य भीषणमिव महासत्वतया गम्भीरमिव उपलक्ष्यमाणं अनभिभवनीय-कृति ......शबरसेनापतिमपश्यम्।"

कादम्बरी।

तेजसिंह उस सरोवर के तट से उठ कर पहाड़ पर चढ़े और कुछ देर में उस बालिका के पिता के घर जा पहुँचे। भीलों के मुखिया भीमचन्द ही ने दस वर्ष के तेजसिंह को अपनी बस्ती के निकट की गुफा में छिपा कर उनके प्राण बचाये हैं; भीमचन्द की दया और प्रभु-भक्ति के गुण से आज तेजसिंह अठारह वर्ष के एक नवयुवक योद्धा हुए हैं।

सन्ध्या-समय उस बस्ती के प्रत्येक घर की भील स्त्रियाँ अपने अपने घर के कामों में लगी हैं। शरीर सभी के हट्टे कट्टे हैं। बदन के ऊपर का भाग किसी का खुला है और किसी का आधा ढका है। कोई गाय-बछड़ों को भूसा खिला रही है, कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने बच्चे को दूध पिला रही है। कोई रसोई बना रही है, और कोई कोई—इस युद्ध के समय—बस्ती के जो कण्टकाकीर्ण घेरे हैं, उनमें और भी काँटे लगा रही हैं। घर घर में चूल्हे की आग जल रही है। बस्ती के चारों ओर धुआँ फैल रहा है। घर के बाहर छोटे छोटे बच्चे खुले बदन खेल रहे हैं। सभ्य मनुष्यों की बस्ती से बहुत दूर ऊँचे शिखर पर अगम्य वन और कँटीले पेड़ों से घिरी हुई इन भील डकैतों की बस्ती बड़ी ही विचित्र है। सभ्य मनुष्यों ने उनसे नफ़रत करके ज़बर्दस्ती उनकी उपजाऊ भूमि छीन ली है। भील लोग उसी का बदला डाँका डाल कर लेते हैं। ये पर्वत-निवासी भील, हिंसक पक्षी की भाँति, कई बार नीचे उतरते और धनवानों के घर में ज़बरदस्ती पैठ कर जो कुछ अन्न-धन हाथ लग जाता, लूट लाते हैं और उससे अपने बाल-बच्चों को पालते हैं। भीमचन्द के घर आज उस बस्ती के सभी वीर भिल्लगण इकट्ठे हुए हैं। सायंकालिक अग्नि के प्रकाश में उनका भयङ्कर स्वरूप और भी अत्यन्त भयङ्कर देख पड़ता है।

भीमचन्द का प्रायः सारा बदन नंगा है; केवल कमर से घुटने तक कपड़े से ढका है। शरीर लम्बा और ख़ूब बलिष्ठ है। मुँह ऐसा विकराल है कि देख कर भय हो। बाल्यकाल से कठोर आचरण करते करते मन की कोमलता बिलकुल नष्ट हो गई है। भीमचन्द का हृदय पत्थर से भी अधिक कठोर है किन्तु उस कठोर हृदय में भी दो एक गुण बहुत अच्छे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पाये जाते हैं। संकट के समय वह जैसा साहसी है, वैसा ही विपत्ति से बचने की तदबीर करने में भी कुशल है। उसकी बुद्धि इतनी तेज़ है कि अपने हिताहित की बात सोचने में उसे देर नहीं लगती। अपनी दूरदर्शिता के कारण वह होनेवाली भली या बुरी बातों को पहले ही जान लेता है। वह स्वामी में भक्ति रखता था, और मित्रों के साथ निश्छल व्यवहार रख कर सत्य का पालन करता था। उसके हृदय में यदि किञ्चित् कोमलता की झलक थी तो केवल एक-मात्र अपनी उस छोटी सी बालिका के लिए।

भीमचन्द के दोनों ओर जो अन्यान्य भील बैठे थे उनके बदन पर कपड़ा न था। वे लोग केवल कौपीन पहने थे।

उस भीलों की बस्ती में आज दो आगन्तुक भी उपस्थित हैं। पंतजी किसान और चन्द्रपुर के गोकुलदास—ये भीमचन्द और तेजसिंह से भेट करने आये हैं। पंतजी एक नामी गृहस्थ हैं। खेती करके अपना गुज़ारा करते हैं। ये योद्धा तो न थे पर शरीर उनका बलिष्ठ और परिश्रमी था। किसान लोग सम्मुख-युद्ध करना नहीं जानते, किन्तु युद्ध के समय अपने गाँव की और अपनी जगह-जायदाद की जी-जान से रक्षा करते हैं। अपनी बस्ती के भीतर शत्रुओं को एकाएक घुसने नहीं देते। मेवाड़ के किसान-राजपूतों में विशेष कर सिलिशिया, अन्यान्य राजपूतों की भाँति, विदेशीय शत्रु के आक्रमण से देश की रक्षा करने में प्राणपण से तत्पर रहा करते थे। गोकुलदास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जात के 'वंशी' थे। उनके वृत्तान्त से पाठक पहले ही परिचित हो चुके हैं। बुढ़ापा आने और अनेक प्रकार के कष्ट सहने के कारण उनका शरीर दुर्बल हो गया है। किन्तु दृष्टि की तेज़ी और हृदय का उत्साह तथा साहस अब भी है। उनके बेटे को फाँसी दी गई है। फाँसी देनेवाले से वे बिना बदला लिये न रहेंगे। केवल इसी आशा से वे अब तक जीवन धारण किये हुए हैं।

ये लोग भीमचन्द के यहाँ इधर उधर बैठे आपस में बातें कर रहे थे। इसी समय तीन चार घड़ी रात बीते तेजसिंह भी वहाँ आ पहुँचे। सभी ने उनको सम्मानपूर्वक बुलाया और अपने पास बैठाया।

फिर परस्पर भाँति भाँति की बातें होने लगीं। महाराना प्रतापसिंह की बात चली। हल्दीघाटी के युद्ध की चर्चा हुई। दुर्जयसिंह और सूर्यमहल का ज़िक्र निकला। फिर सबों ने यह पूछा कि तेजसिंह सूर्यमहल पर कब आक्रमण करेंगे। पंतजी अपने लट्ठधारी किसानों को, भीमचन्द अपने भील-योद्धाओं को और गोकुलदास अपनी जाति के वंशी लोगों को साथ ले युद्ध में तेजसिंह की सहायता करेंगे। सभों ने मिल कर प्रतिज्ञा की कि जैसे होगा तेजसिंह को उनके पिता की राजगद्दी पर ज़रूर बिठावेंगे।

तेजसिंह ने सबको धन्यवाद देकर और भीमचन्द की विशेष प्रशंसा करके कहा—तिलकसिंह का यह भाग्यहीन पुत्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब दस वर्ष का था तभी से घर-द्वार-विहीन होकर पहाड़ की गुफा में निवास कर रहा है और सर्दार भीमचन्द के अनुग्रह से अब तक जीता-जागता है। इन्होंने आठ वर्ष से मुझे छिपा रक्खा है और मेरा प्रतिपालन किया है। यदि ये मेरी रक्षा न करते तो वैरी दुर्जयसिंह के हाथ से मेरे प्राण बचने का कोई उपाय न था। उसके क्रोध से इनके सिवा मुझे कौन बचा सकता था? भीमचन्द के पिता ने हमारे महाराना प्रतापसिंह के पिता राना उदयसिंह को विपत्ति से बचाया था, यह आप लोग जानते ही हैं। इस समय भीमचन्द ने हमारे ऊपर वैसा ही अनुग्रह किया है। भीलों का मुझे पूरा भरोसा है। सैकड़ों बार, सैकड़ों युद्धों में, सैकड़ों विपत्ति के दिनों में, भीलों ने अपने मित्र राजपूतों की सहायता की है।

भीमचन्द—मैं तिलकसिंह को भली भाँति जानता हूँ। उनके सदृश वीर, धीर और न्यायी राजपूत और देखने में नहीं आता। मैं अपने सामर्थ्य भर आपके लिए प्रयत्न करूँगा। मेरे वशवर्ती जितने भीलयोद्धा हैं, धनुष-बाण ले कर सूर्यमहल पर आक्रमण के समय आपका साथ देंगे। राजपूत भीलों के स्वामी हैं। न्यायी राजपूतों की सहायता करना भीलों का प्रधान धर्म है। घर आये हुए को आश्रय देना भीलों का मुख्य कर्तव्य है।

पंतजी ने कहा—मैं भी तिलकसिंह को बखूबी जानता हूँ।

वृद्ध गोकुलदास ने कहा—गृहस्थों के सर्दार पन्तजी जब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुर्जयसिंह के अत्याचार से इतने दुःखी हैं तब हम लोग साधारण वंशी कहाँ तक दुर्दशापन्न होंगे, यह आप लोग अनुमान कर लें। ऐसा कोई साल नहीं, कोई महीना नहीं, कोई सप्ताह नहीं जिसमें चन्द्रपुर की प्रजा को दुर्जयसिंह के अत्याचार से दुखी न होना पड़ता हो। वंशी जाति आप लोगों की भाँति स्वाधीन नहीं है, सदा से पराधीन है। वह कर ही क्या सकती है? केवल स्वर्गीय तिलकसिंह का गुण गाती है। उनके पुत्र जीवित हैं या नहीं, दिन रात यही पूछा करती है। वंशी लोग आपके जीवित रहने की बात पहले नहीं जानते थे। अब लोगों ने सुना है कि शिकार के दिन आपसे दुर्जयसिंह की भेट हुई थी। सूर्यमहल के अधीन जितनी प्रजा है, सब मन ही मन दिन महीना गिन रही है और ईश्वर से मना रही है कि कब आप अपने पिता की गद्दी पर बैठेंगे। आप एक बेर आज्ञा दे दें तो चन्द्रपुर आदि गाँवों के आबाल-वृद्ध सभी दुर्जयसिंह के विरुद्ध हथियार उठावेंगे। यह वृद्ध आपसे और क्या निवेदन करे? इस बुढ़ापे में इस वृद्ध के ऊपर जो अत्याचार हुआ है उसका विचार ईश्वर करेंगे। चन्द्रपुर की प्रजा पर जो अत्याचार हो रहा है उसका आप अवश्य निवारण करें।

वृद्ध के पुत्र-वध की बात सभी जानते हैं। वृद्ध की बात सुन कर सभी क्षुब्ध हुए। तेजसिंह ने कहा—तुम लोग मेरे पिता के पुराने सेवक हो। तुम लोगों के दुःख की सान्त्वना अभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईश्वर ही कर सकते हैं। किन्तु इस बात को मैं मुक्तकण्ठ से स्वीकार करता हूँ कि यदि मैं पिता की गद्दी पर बैठूँगा तो चन्द्रपुर आदि गाँवों के वंशीगणों को यथासाध्य सुखी करने की चेष्टा करूँगा।

इस प्रकार अनेक बातें होने के बाद तेजसिंह बोले—एक बात और यह है कि मैं प्रथम आखेट के दिन व्याघ्र-निकेतन पहाड़ पर गया था।

उस भयानक स्थान का नाम सुन कर सभी अचम्भे में आ गये। तपस्विनी के मुख से तेजसिंह ने क्या सुना, यह जानने के लिए सभी उनके मुँह की ओर देखने लगे।

तेजसिंह ने कहा—तपस्विनी की आज्ञा है कि विदेशीय शत्रु के साथ युद्ध रहते समय मेवाड़ के गृह-कलह को दबा रखना ही मेवाड़ की पुरानी रीति है। तुम इस रीति का पालन करो।

बहुत देर पीछे गोकुलदास ने कहा—ईश्वर जानते हैं कि दुर्जयसिंह से प्रतिहिंसा लेने के लिए इस वृद्ध का हृदय जल रहा है। पुत्र-शोक से बढ़ कर दारुण दुःख इस संसार में नहीं है। तथापि इस वृद्ध की समझ में तपस्विनी माता ने यथार्थ आदेश किया है। जब तक दिल्लीपति के साथ राना का युद्ध जारी रहे तब तक घर के झगड़े को दबा रखना ही ठीक है।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौदहवाँ परिच्छेद

राठौड़ का क़िला

"ननु कलभेन यूथपतेरनुकृतम् ।"

मालविकाग्निमित्रम् ।

पहर रात बीते तेजसिंह, भीमचन्द्र के घर से बिदा हो, धीरे धीरे राठौड़-वंशी वीर देवीसिंह के भीमगढ़ की ओर चले।

तिलकसिंह के मातहत जितने योद्धा थे उनमें देवीसिंह से बढ़ कर लड़नेवाला साहसी, वीर या विश्वासपात्र दूसरा न था। कई बरस पहले जब तिलकसिंह के पूर्वज ने पहले पहल सूर्यमहल पर अधिकार किया था उस समय देवीसिंह के पुरखा ने, दहने हाथ की तरह, विपत्ति के समय उनकी सहायता की थी। सूर्यमहल के विजयी तेजसिंह के पूर्वज ने प्रसन्न होकर, एक समीपस्थ पहाड़ पर, भीमगढ़ नाम का एक दुर्ग बनवा कर अपने प्रधान सेनापति को दिया। तब से भीमगढ़ के आश्रित सभी योद्धा सूर्यमहल के अधिपति के अधीन रह कर युद्ध में साथ देने के लिए तैयार रहते थे। उन लोगों ने कई बार युद्ध में साथ दिया था और अपने प्राणों का कुछ भय न करके सच्ची प्रभु-भक्ति दिखलाई थी।

दुर्जयसिंह जिस रात को सूर्यमहल के भीतर अपनी सेना सहित घुस आये थे उस रात की लड़ाई में तिलकसिंह की अधिकांश सेना मारी गई थी। जो बच रही थी वह क़िले से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकल कर बहुत दिनों तक जङ्गल-पहाड़ों में भटकती रही। अन्त में वह सबकी सब भीमगढ़ आई और देवीसिंह की अधीनता में रह कर काम करने लगी। इन आगत सैनिकों में कितने ही बालक भी थे। उन बालकों में किसी किसी ने उस रात में तेजसिंह को तैर कर खन्दक पार होते देखा था। इसलिए तेजसिंह के जीवित रहने की आशा उन लोगों के मन में बनी रहती थी। वे लोग कई वर्ष तक तेजसिंह की खोज में लगे रहे। अन्त में तिलकसिंह के दो एक पुराने सेवकों ने भील-वेषधारी तेजसिंह को देख कर पहचाना और उमँग कर उस भील-पालित बालक को, स्वामी कह कर, अभिवादन किया।

इसके बाद तिलकसिंह के जितने पुराने सैनिक जङ्गल-पहाड़ों में छिपे थे वे सभी एक एक कर तेजसिंह के पास आये और तेजसिंह को पिता के सदृश हट्टे, कट्टे, लम्बे, पराक्रमी और बलवान् देख कर बहुत प्रसन्न हुए। तिलकसिंह के सभी पुराने सैनिकों ने एक स्वर से कहा—हम लोगों ने तिलकसिंह का नमक खाया है, हम तिलकसिंह के अन्न से पले हैं, अतएव हम लोगों का यह जीवन तिलकसिंह के पुत्र का ही है। इस जीवन की सार्थकता तभी है जब यह उनके काम आवे। हुक्म हो तो हम लोग फिर सूर्यमहल पर अधिकार करके आपको पिता की गद्दी पर बिठलावें।

तिलकसिंह के वृद्ध सेनापति देवीसिंह ने स्नेह-पूर्वक तेज-सिंह को गले लगा कर भीमगढ़ में आकर रहने के लिए उनसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुरोध किया। परन्तु तेजसिंह ने कहा—विपत्ति के समय भीलों ने मुझे आश्रय दिया और मेरा पालन किया है। इसलिए जब तक मैं सूर्यमहल को अपने अधिकार में न कर लूँगा तब तक भीलों ही के आश्रय में रहूँगा।

आज रात में वही राठौड़गण भीमगढ़ के क़िले के ऊपर एक लम्बी चौड़ी जगह में बैठे हैं। उस जगह के आसपास कोई पेड़ या घर नहीं है। निर्मल नीले आकाश में असंख्य तारे जगमगा रहे हैं। नीचे कहीं कहीं आग बल रही है। आग के चारों ओर बैठे हुए राठौड़ आग का सेवन कर रहे हैं। कहीं हँसी-खेल हो रहा है। कहीं गाने-बजाने का ठाट जमा है। कहीं योद्धागण आपस में इधर उधर की बातें कर रहे हैं। कोई कोई योद्धा, चारण को बीच में बैठा कर, युद्ध का करखा सुन रहे हैं। कोई बन्दीगणों से राठौड़-वंश का यशोगान सुन रहा है। इसी तरह सब लोग आपस में आमोद-प्रमोद कर रहे हैं। तेजसिंह को अकस्मात् दूर से आते देख सब उठ कर खड़े हुए और पाँच सौ राठौड़ एक ही बार आनन्द से गरज उठे। उन लोगों का ऐसा उत्साह देखकर तेजसिंह बहुत प्रसन्न हुए।

आग के प्रकाश में उन पुराने राठौड़ योद्धाओं का मुख साफ़ साफ़ दिखाई देता है। लड़कपन से ही युद्ध का व्यवसाय करते करते उन लोगों का शरीर मज़बूत हो गया है। किसी के सिर में, किसी के कपार में, किसी की छाती में, किसी की बाँह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में और किसी की पीठ में तलवार के घाव का चिह्न है। किसी के सिर के बाल बिलकुल सफ़ेद हो गये हैं, और किसी के अभी सफ़ेद होने ही लगे हैं। परन्तु आँखें सभी की तेज़ हैं। ये लोग तिलकसिंह के समय कई बार युद्ध कर चुके हैं, चित्तौर का अधःपात अपनी आँखों देख चुके हैं। अब ये लोग तेजसिंह को अपने दल का प्रधान बनाकर पहले सूर्यमहल, और फिर चित्तौर के उद्धार के लिए प्रस्तुत हैं। तेजसिंह ने जब अपने चारों ओर पिता के पुराने सैन्य को देखा, जब उन्होंने उन सैनिकों के युद्धाङ्कित शरीर में अत्यन्त उत्साह और नेत्रों में स्वामिभक्त का भाव देखा, तब उनका हृदय आनन्द से भर गया। उन्होंने सजल नयनों से पिता के समस्त योद्धाओं की ओर देखा। तेजसिंह की यह उदारता देख कर सभी राठौड़ों ने उमँग कर उनकी जय मनाई।

तेजसिंह ने कहा—वीरगण! आप लोगों ने स्वामी के साथ यथार्थरूप से सेवकधर्म को निबाहा है। आप लोगों के उस धर्म की बदौलत राठौड़-कुल अवश्य गौरवान्वित होगा। तेजसिंह आप लोगों के इस उपकार को कभी न भूलेगा।

राठौड़ों ने कहा—हम लोग स्वर्गीय तिलकसिंह के नमक से पले हैं। हम लोगों का जीवन, धन, आयुध आदि जो कुछ है सब आपका है। हम लोग आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार हैं।

वृद्ध देवीसिंह ने कहा—इस सेवक ने राजा तिलकसिंह को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूर्यमहल की गद्दी पर बैठते हुए देखा था। अब यह बूढ़ा, अपनी मृत्यु के पहले, चाहता है कि उनके पुत्र तेजसिंह को उस गद्दी पर बिठावे। इस वृद्ध के जीवन में यही एक लालसा बच रही है।

तेजसिंह- मेरे पिता के समकालीन राठौड़ योद्धाओं में आपके ऐसा पुराना कोई नहीं है। हल्दीघाटी की लड़ाई में जितने राठौड़ वीर थे उनमें आपसे बढ़कर साहसी कोई न था। मैं आपके हृदय को भली भाँति जानता हूँ। किन्तु अभी आपकी लालसा पूरी होने में विलम्ब है।

देवीसिंह—मेरे लिए जैसे प्रभु स्वर्गीय तिलकसिंह थे वैसे ही आप भी हैं। आपकी आज्ञा सदा इस दास को शिरोधार्य है। किन्तु आप क्या विजय में कुछ सन्देह करते हैं? सुना है, चन्दावत दुर्जयसिंह के पास एक हज़ार सेना है। तो एक हज़ार चन्दावत सेना के लिए क्या पाँच सौ राठौड़ काफ़ी नहीं हैं?

तेजसिंह—राठौड़ों की वीरता में मुझे कोई सन्देह नहीं है। इसके सिवा पिता जी के अन्यान्य मित्रों ने भी मेरी सहायता करने की प्रतिज्ञा की है। पन्तजी के अधीन प्रायः एक हज़ार किसान हैं; भीमचन्द के पास प्रायः दो सौ धनुर्धारी भील योद्धा हैं; और चन्द्रपुर के दो सौ वंशी जवान हैं; ये सबके सब मेरे लिए प्राण देने को तैयार हैं।

देवीसिंह—तो फिर युद्ध में विलम्ब क्या है?

तेजसिंह—अभी सूर्यमहल पर आक्रमण करने से विजय-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाभ हो सकता है। किन्तु संभव है, उस युद्ध में आपकी अधिकांश सेना मारी जाय।

देवीसिंह—आपके लिए प्राण-दान करने के अतिरिक्त राठौड़ों का और गौरव हो ही क्या सकता है? राठौड़ मृत्यु से नहीं डरते।

तेजसिंह—आपका कहना बहुत ठीक है। पिताजी ने चित्तौर की रक्षा करने में अपनी जान दे दी थी। किन्तु सूर्य-महल के पुनरुद्धार के लिए यदि आप लोग प्राण देंगे तो हल्दी-घाटी की लड़ाई में फिर कौन लड़ेगा? वीरगण! माता के वध और कुल के अपमान की बात तेजसिंह के हृदय-पट पर अङ्कित है। जब तक इस नाड़ी में शोणित का सञ्चार होता रहेगा तब तक यह बात भूलने की नहीं। किन्तु विदेशीय युद्ध वर्तमान रहते घर की लड़ाई त्याज्य है। राजपूतवीरगण! आप लोग क्षत्रिय-धर्म का पालन करें।

जितने प्राचीन राठौड़ वीर थे, सभी ने एक साथ सिर झुकाया। बहुत देर में देवीसिंह ने गम्भीर स्वर से कहा—"हमारे प्रभु तेजसिंह ने जो आदेश किया है वह राठौर मात्र के लिए शिरोधार्य है। हम लोग उस आदेश को सादर स्वीकार करते हैं। विदेशीय शत्रु के साथ युद्ध छिड़ने पर राठौड़ चन्दावत को भाई समझे और चन्दावत राठौड़ को। मुसलमानों के सिवा राजपूतों के और कोई दुश्मन नहीं हैं। किन्तु इस विदेशीय युद्ध के आख़ीर तक यदि देवीसिंह जीता रहा तो चन्दावत दुर्जयसिंह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का नाम न रहेगा। दुर्जयसिंह! अभी से सावधान हो जाओ।" सभी राठौड़ वीर एक स्वर से बोल उठे—दुर्जयसिंह! अभी से सावधान हो जाओ।

इस तरह की उत्साह से भरी बातें हो रही थीं, इसी समय देवीसिंह का चौदह वर्ष का पुत्र चन्दनसिंह धीरे धीरे तेजसिंह के सामने आया। उसके सिर पर काले काले भँवर सरीखे सुन्दर केश शोभायमान हो रहे हैं। उसका ललाट ऊँचा और चौड़ा है। उसकी आँखों में बाल्यकाल की चपलता विराज रही है। शरीर छरहरा है। दोनों होंठ लाल हैं। मुख पर सुकुमारता छाई है। किन्तु इसी उम्र में वह बलिष्ठ सा और उसके शरीर का गठन मज़बूत सा देख पड़ता है। वह तेजसिंह के सम्मुख सिर नवा कर खड़ा हुआ।

उसको देख कर तेजसिंह को पहले की बात धक से याद हो आई। उनकी आँखों में आँसू भर आये। उन्होंने कोमल स्वर में कहा—चन्दन! तुम हमारे लड़कपन के साथी हो। जब हम और तुम दोनों सूर्यमहल में थे तब तुम बराबर मेरे साथ रहते और खेलते थे। क्या वह बात तुम्हें याद है? जब तुम छः वर्ष के थे तब मेरी देखादेखी तुम भी तीर-तलवार चलाने की चेष्टा किया करते थे। मेरे पिता ने एक दिन तुम्हारा उच्च ललाट देख कर कहा था कि चन्दन देवीसिंह के समान वीर होगा। शायद यह बात तुम्हें याद न होगी।

चन्दन ने कृतज्ञता-सूचक स्वर में कहा—स्वामी! आप ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे बालपन के गुरु हैं। आप ही उस समय मेरे बड़े भाई के तुल्य थे। क्या इस बात को मैं कभी भूल सकता हूँ? पहले पहल आप ही से मैंने युद्ध की शिक्षा पाई थी। इस समय यदि मुझे मुसलमानों के साथ युद्ध करने के लिए जाने की आज्ञा दी जाय तो मैं अपने को कृतार्थ मानूँ।

तेजसिंह—चन्दन! अभी तुम्हारी कम उम्र है। क़िले में रह कर अभी युद्ध करना सीखो। उपयुक्त समय देख कर तुम्हारे पिता तुम्हें युद्ध में ले जायँगे।

चन्दन—क्या चौदह वर्ष का यह राठौड़ बालक युद्ध में मुसलमानों का मुक़ाबला नहीं कर सकता?

तेजसिंह ने हँस कर कहा—सिंह का बच्चा सिंह ही होता है। देवीसिंह के पुत्र होकर तुम युद्ध के लिए इतने व्यग्र क्यों न होगे। चन्दनसिंह! कुछ दिन धीरज धर के घर ही में रहो। शीघ्र ही भयङ्कर युद्ध होनेवाला है। उस युद्ध में हम लोगों की लालसा पूरी होगी। तुम्हारे पिता युद्ध में बराबर महाराना के साथ रहेंगे। तुम यहाँ न रहोगे तो भीमगढ़ की रक्षा कौन करेगा? तुम इसी अल्प अवस्था में वीरोचित काम कर सकोगे, इसमें सन्देह नहीं है। मैं तुम्हें इसी किशोर अवस्था में भीमगढ़ की रक्षा के निमित्त नियुक्त करता हूँ। मुझे पूरी आशा है कि तुम्हारे हाथ में राठौड़ की तलवार की कभी अप्रतिष्ठा न होगी।

चन्दनसिंह ने धीरे धीरे म्यान से तलवार निकाली। उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तलवार को छूकर और आकाश की ओर ताक कर उस अल्प-वयस्क वीर बालक ने कहा—तथास्तु। चन्दनसिंह आज से आपकी आज्ञा के अनुसार भीमगढ़ की रक्षा करेगा। ईश्वर चाहेगा तो जब तक चन्दनसिंह जीता रहेगा, जब तक इस क़िले में एक भी राठौड़ जीवित रहेगा, तब तक इस क़िले में मुसलमान का प्रवेश न होगा।

बालक के मुँह से ऐसी प्रतिज्ञा सुन कर जितने राठौड़ थे सभी वाह वाह करने लगे। सभी उस बालक की वीरता को सराहने लगे। वृद्ध देवीसिंह कुछ न बोले। उनकी आँखों से आनन्दाश्रु बह चले। किन्तु राठौड़ों का ध्यान इस ओर न गया। देवीसिंह ने भी न जाना कि जब युद्ध की आग भभक उठेगी, जब शोणित की धारा बह चलेगी, तब चन्दनसिंह की इस कठिन प्रतिज्ञा की रक्षा कैसे होगी।

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

चन्दावत का दुर्ग

"अथाजिनाषाढधरः प्रगल्भवाक् ज्वलन्निव ब्रह्ममयेन तेजसा।
विवेश कश्चिज्जटिलस्तपोवनं शरीरबद्धः प्रथमाश्रमं यथा॥"

कुमारसम्भव।

पाठकगण! अब एक बार सूर्यमहल में चल कर देखना चाहिए कि वहाँ के अधीश दुर्जयसिंह क्या कर रहे हैं।

हल्दीघाटी का युद्ध हो जाने पर दुर्जयसिंह सूर्यमहल लौट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आये हैं। प्रातः समय, सूर्यमहल क़िले के पहाड़ की चोटी पर चन्दावत की पताका फहरा रही है। चारों ओर जुझाऊ बाजे बज रहे हैं। सभा-भवन में दुर्जयसिंह बैठे हैं। उनके साथी योद्धा ढाल-तलवार बाँधे उनके दोनों ओर बैठे हैं। दुर्जयसिंह को देखने के लिए क़िले के रहनेवाले चारों ओर से आये हैं। नगर-निवासी लोग आपस में हल्दीघाटी की लड़ाई और मुग़लों के विषय में भाँति भाँति की गप्पें उड़ा रहे हैं। बस्ती की स्त्रियाँ मङ्गल-गान गाकर युद्ध से लौटे हुए चन्दावत वीरों का स्वागत कर रही हैं।

जिस सभा-भवन में अभी दुर्जयसिंह अपने कतिपय योद्धाओं के साथ बैठे हैं उसी में कुछ दिन पहले जो शूर-वीर बैठे थे, उनमें आज कितने ही नहीं हैं। हाय! वे लोग अब इस संसार में ढूँढ़ने पर भी कहीं न मिलेंगे। उन लोगों की वीरता और अकाल-मृत्यु की बातें स्मरण कर सभी लोग बार बार उन्हें धन्यवाद देने और उनके आत्मा की शान्ति के लिए जगदीश्वर से प्रार्थना करने लगे। जो वीर युद्ध से जीते-जागते लौट आये हैं वे लोग भी उसी तरह अपने देश और जाति के लिए प्राण देने का संकल्प करने लगे। आज की सभा में जितने वीर बैठे हैं उनमें कितनों ही के शरीर में अब तक युद्ध के घाव का दाग़ बना है। किसी के ललाट में, किसी के विशाल बाहु में, किसी की छाती में और किसी के पाँव में बर्छी, तलवार और गोली आदि आयुध का चिह्न विद्यमान है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सभा-गृह में एक तरफ़ दुर्जयसिंह के अङ्ग-रक्षक दास खड़े थे। ये लोग युद्ध के समय कभी मालिक का साथ नहीं छोड़ते। हल्दीघाटी के युद्ध में दुर्जयसिंह के साथ प्रायः एक सौ अङ्ग-संरक्षक सेवक गये थे, उनमें पचास भी लौट कर नहीं आये। ये अङ्ग-संरक्षक सदा से दास-वृत्ति करते आये हैं। इनके घर की बहू-बेटियाँ भी दासी की भाँति अन्दर महल में रहती हैं। इन ग़ुलामों का जीवन-मरण अपने स्वामी के हाथ रहता है। ये लोग भी प्रभु-भक्ति के अतिरिक्त दूसरा धर्म नहीं जानते। अभी सभा-गृह में दुर्जयसिंह के जो ग़ुलाम अदब से खड़े हैं उनकी संख्या चालीस से अधिक न होगी। सभी के पैरों में चाँदी के कड़े शोभा दे रहे हैं।

दुर्जयसिंह युद्ध की आलोचना करते हुए बोले—बरसात बीत जाने पर क्या फिर शाहज़ादा सलीम और मुग़ल सिपाही आवेंगे ? स्वदेशवासियों के रक्त-पात से राजा मानसिंह क्या अब भी तृप्त नहीं हुए हैं ? यदि नहीं हुए हैं तो मेवाड़ के सिसोदिया और भी रक्त देने को राज़ी हैं। मुग़ल-सेना के आने पर सिसोदिया फिर भी रण-मद से मत्त हो उन्हें ललकार कर बुलावेंगे और जी छोड़ कर लड़ेंगे। जब तक एक भी सिसोदिया वीर के प्राण बचेंगे, जब तक चन्दावत की नाड़ी में शोणित का सञ्चार रहेगा, तब तक मेवाड़ का राज्य अपने ललाट पर पराधीनता का कलङ्क धारण न करेगा।

इसी समय वहाँ चारण आकर उपस्थित हुए। दुर्जयसिंह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की आज्ञा के अनुसार उन्होंने हल्दीघाटी के युद्ध का वर्णन करना प्रारम्भ किया ।

एक वृद्ध चारण ने हल्दीघाटी का युद्ध अपनी आँखों देखा था । प्रतापसिंह का दुर्दमनीय साहस और चन्दावतों की अद्वितीय वीरता भी देखी थी । डिङ्गल भाषा में उन्हीं सब बातों की छन्द-रचना करके वे गम्भीर स्वर से सुयश गाकर सुनाने लगे । सभास्थित सभी लोग चुप हो रहे । चारण का वही एक-मात्र यशो-गान सारे सभा-भवन में गूँजने लगा । अन्त में जब चारण ने चन्दावतों की वीरता और दुर्जयसिंह के अदम्य साहस का वर्णन करके गान समाप्त किया तब योद्धाओं की आनन्दध्वनि से समस्त सभा-गृह भर गया ।

वृद्ध चारण के पीछे पीछे एक युवा चारण भी आया था । उसने सभा में स्थित वीरों से अपनी बनाई हुई युद्ध-सम्बन्धिनी कविता पढ़ने की अनुमति माँगी ।

दुर्जयसिंह की ओर लक्ष्य करके वह बोला—चन्दावत वीर ! इस वृद्ध राज-चारण ने जैसा कुछ युद्ध-सम्बन्धी यशोगान किया है वैसा गा सकने का मुझमें सामर्थ्य नहीं; तथापि आप लोगों की रुचि पाऊँ तो अकबरशाह के द्वारा चित्तौर के अपहरण की कुछ कविता गाकर सुनाऊँ । वर्षा के जिस जल से पीपल, पाकड़, शाल, तमाल आदि बड़े बड़े पेड़ पुष्ट होते हैं उस जल से क्या नन्हीं नन्हीं घास या छोटे छोटे पौदे नहीं बढ़ते ? आप सरीखे महानुभावों की आज्ञा पाने से यह क्षुद्र कवि भी कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कविता कर सकता है । आप आज्ञा दें तो इस कवि का मनोरथ पूर्ण हो ।

दुर्जयसिंह—तुम्हारा विनय भाव देख कर हम प्रसन्न हुए । यद्यपि तुम हमारे परिचित नहीं हो तथापि तुम्हारा परिचय तुम्हारे गुण से ही होगा । वीर और कवि अपने गुणों से ही प्रसिद्ध होते हैं । अच्छा, कविता सुनाओ ।

आगन्तुक चारण कवि तीव्रस्वर से कविता पढ़ने लगा । सभास्थित सभी वीरगण कान लगा कर आश्चर्य के साथ कविता सुनने और उस कवि के मुँह की ओर देखने लगे । कविता का भाव यह था—

"वह मज़बूत क़िला किसका ?

"जिन्होंने वंश-परम्परा से उसकी रक्षा की थी, उनका ? या जिन्होंने डाका डाल कर उसे ले लिया है उनका ?

"क़िले के भीतर चोर कब तक रह सकेगा ? वह बड़ी बेइज़्ज़ती के साथ निकाला जायगा । उसके हृदय के रक्त से राजपूतों की तलवार लाल होगी ।

"वह अभेद्य दुर्ग किसका ?

"जिस * रमणी ने दुर्ग के रक्षार्थ युद्ध किया था उसका ? अथवा जिसने स्त्री-हत्या करके दुर्ग पर अधिकार किया था उसका ?

---

*चित्तौर-गढ़ पर विजय प्राप्त होने के समय पुत्त की माता और पत्नी ने मुग़लों से युद्ध करके प्राण दे दिये थे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"स्त्री-हत्याकारी अवश्य अपमानित होगा। स्त्री-हत्याकारी के हृदय में किसी न किसी दिन राजपूत की तलवार ज़रूर चुभेगी।

"वह दृढ़ क़िला किसका?

"जिसने बालक का सर्वस्व अपहरण कर लिया है उसका? या जो वीर* बालक शत्रु के भय से कन्दरा में छिपा है उसका?

"वह बालक अब बालक नहीं है, उस वीर बालक ने अब तलवार पकड़ी है; हल्दीघाटी के युद्ध में अपनी वीरता दिखलाई है। क़िले के अपहारक का हृदय उस बालक की तलवार से टूक टूक होगा।

"वह उन्नत क़िला उसी का है जो क़िले को छोड़ कर इस समय जङ्गल-पहाड़ों में भटक रहा है। राजपूतों के साथ वह बालक फिर क़िले पर आक्रमण करेगा और शत्रुओं को मार भगा कर फिर क़िले पर अपना अधिकार जमावेगा।"

कविता समाप्त हुई। युवक का रोबदार चेहरा देख कर सभी विस्मित हुए। सभी उच्च स्वर से बोल उठे—"जैसे होगा, मुसलमानों के लोहू से तलवारों की प्यास बुझा कर राजपूतगण बिना चित्तौर लिये न रहेंगे" किन्तु दुर्जयसिंह के मुँह से एक भी उत्साह का वाक्य न निकला। वे कविता की कुछ

---

*चित्तौर-विजय के समय प्रतापसिंह के बाप जीवित थे। अतएव प्रताप उस समय युवराज-मात्र थे। हल्दीघाटी के युद्ध के समय प्रतापसिंह परिवार-सहित पहाड़ की गुफा में निवास करते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रशंसा किये बिनाही सिर नीचा करके धरती की ओर देखने लगे। कुछ देर में चारण की ओर पलक उठा कर देखा तो वह सभागृह में कहीं दिखाई न दिया।

———

सोलहवाँ परिच्छेद

कविता सुनानेवाला कौन था ?

"ज्वलज्जटाकलापस्य भ्रुकुटीकुटिलं मुखम्।
निरीक्ष्य कस्त्रिभुवने मम यो न गतो भयम् ॥"

विष्णुपुराणम्।

एक पहर रात बीती है। दुर्जयसिंह छत पर सोये हुए हैं। उनका मस्तक एक दासी की गोद में है। एक और दासी उनके पैर दाव रही है। दोनों नवयौवनाएँ हैं, दोनों ही रूपवती हैं। किन्तु उन दोनों की सेवा से भी आज न मालूम दुर्जयसिंह की चिन्ता क्यों दूर नहीं होती* ?

---

* पाठकों को यह जान लेना चाहिए कि उन दिनों राज्यशासन-प्रणाली यूरप के फ़िउडल राज्यतन्त्र के सदृश थी। महाराना की अधीनता में भिन्न भिन्न वंशों के राजपूत श्रेष्ठ योद्धा थे। उन क्षत्रियकुल-श्रेष्ठों के अधीन जो ज़मींदार थे उनका अपना क़िला था और भूमि, सम्पत्ति तथा प्रजा थी। वे सबके सब महाराना की आज्ञा के वशवर्ती थे। रजवाड़ों में दो तरह के दास थे—रना; और गोला। फ़िउडल समय के कोलोनी और स्लेव्स लोगों के सदृश किसान लोग मिलिटिया सम्प्रदाय के सदृश थे।

ग्रन्थकार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुर्जयसिंह बहुत देर तक सोचते रहे, अन्त में मन्त्री को बुलाने का आदेश दिया और आप बिछौने से उठ कर धीरे धीरे छत पर टहलने लगे। दासियाँ वहाँ से उठ कर भीतर चली गईं। कुछ देर में वहाँ मन्त्री उपस्थित हुए। दुर्जयसिंह ने मन्त्री से कहा—हमने युद्धयात्रा के समय जो आदेश दिया था उसका पालन हुआ ?

मन्त्री—मैंने उसी घड़ी कई एक (भेदियों) को चारों ओर भेज दिया था। उनमें से कोई कोई लौट आये थे, उन्हें फिर भेजा है। किन्तु अभी तक कोई तिलकसिंह के पुत्र का ठीक ठीक पता लगा कर नहीं आया

दुर्जयसिंह—उन जासूसों से विशेष कर जंगल पहाड़ों में और भीलों की बस्ती में खोजने के लिए कह दिया है न ?

मन्त्री—जी हाँ, उन्हीं सब स्थानों में वे लोग तिलकसिंह के पुत्र को तलाश रहे हैं।

दुर्जयसिंह सिर नीचा करके चिन्ता करने लगे।

मन्त्री—महाराज, आप चिन्ता न करें। यदि तेजसिंह जीता ही होगा तो वह आपका क्या कर सकता है ?

दुर्जयसिंह—यदि क्या ? तेजसिंह के जीवित रहने में क्या कुछ सन्देह है ?

मन्त्री—महाराज ने तो कहा था कि रात में उसे एक ही बार देखा तब से फिर कभी उसकी सूरत नहीं देखी। वह जीता होता तो उसे हमारे दूत लोग ज़रूर ढूँढ़ निकालते और उसका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ठीक ठीक पता लगा कर ख़बर देते । यदि वह जीवित होता तो इतने दिन चुपचाप बैठा ही क्यों रहता ? महाराज, आप व्यर्थ सोच न करें । इस ख़न्दक में तेजसिंह कभी का मर गया होगा ।

दुर्जयसिंह—यदि उसे हमने एक ही रात को देखा होता तो उसकी मृत्यु के सन्देह को जगह थी, किन्तु उस बालक को हमने दो या तीन बार देखा होगा ।

मन्त्री—कब ?

दुर्जयसिंह—भील या कृषि-जीवी लोग क्या समझें कि बर्छी कैसे चलाई जाती है । हल्दीघाटी के युद्ध के दिन भीलों के एक दल और किसान-रूपधारी एक युवा वीर ने बर्छी और तलवार के हाथ मानसिंह की सेना पर आक्रमण किया था ।

मन्त्री—यह तो सचमुच आश्चर्य की बात है ।

दुर्जयसिंह—अचरज की कोई बात नहीं है । वे लोग भील नहीं थे । भील का वेष धारण करके राठौड़ आये थे । उन छद्म-वेषधारी भील-योद्धाओं के सर्दार को हमने पहचान लिया था; वह वही युवक था । चित्तौर-ध्वंस के समय हमने जयमल के पार्श्व भाग में तिलकसिंह को देखा था; हमने तिलकसिंह को असुर-बल से लड़ते और चित्तौर के द्वार की रक्षा करते देखा था । तिलकसिंह लड़ने में जैसा बहादुर था, वैसा ही उसका पुत्र भी है । युद्ध में वह अपने बाप की अपेक्षा किसी तरह न्यून नहीं है ।

मन्त्री का मुँह कुछ भारी सा हो गया । दुर्जयसिंह फिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहने लगे—हल्दीघाटी के उस युद्ध में उस बालक की वीरता देखने से हमारे हाथ की बर्छी काँप उठी। दुर्जयसिंह की बर्छी व्यर्थ होने की नहीं। एक ही आघात से चिर-शत्रु को इस संसार से दूर कर देने की इच्छा हुई थी; किन्तु आखेट के दिन की बात याद हो आई। इससे हाथ की बर्छी हाथ ही में रह गई।

मन्त्री—आखेट के दिन उस बालक ने आपके प्राण बचाये थे, क्या इसी से वह अवध्य है?

दुर्जयसिंह—यह बात नहीं है। विदेशीय शत्रु के साथ युद्ध ठना है, यह जान कर तेजसिंह ने शिकार के दिन हमारी रक्षा की थी। विदेशी शत्रु के विद्यमान रहते दुर्जयसिंह गृहकलह में उलझ कर अपने को कलङ्कित न करेंगे।

मन्त्री—तो फिर इतनी खोज क्यों?

दुर्जयसिंह—जिस दिन विदेशी युद्ध की समाप्ति होगी उसी दिन दुर्जयसिंह अपनी हृदय-भूमि का शल्योद्धार करेंगे; उसी दिन अपने हृदय के काँटे को दूर करेंगे। इसलिए पहले ही से उसका पता-ठिकाना ढूँढ़ रखना आवश्यक है।

मन्त्री—मैंने उसका पता लगाने में कुछ उठा नहीं रक्खा है। दिन रात उसी के पीछे हैरान रहता हूँ; पर अभी तक पता नहीं लगा। महाराज ने तीसरी बार उसे कहाँ देखा था?

दुर्जयसिंह ने बहुत देर तक इस प्रश्न का कुछ उत्तर न दिया। क्रमशः उनके चेहरे का भाव बदलने लगा। भौंहें चढ़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गईं । उन्होंने क्रोध-पूर्वक कम्पित स्वर से पूछा—आज जिस नये चारण की कविता सुनी थी उसका अर्थ क्या था ?

मन्त्री—चारण ने चित्तौर के पुनरुद्धार की कविता पढ़ी थी ।

दुर्जयसिंह ने क्रोध करके कहा—इसी समझ पर तुमने मन्त्रित्व का काम अपने हाथ में लिया है ? ओफ़् ! तभी से हमारे मन में सन्देह की मात्रा बढ़ रही है । किन्तु अब सन्देह की कोई बात न रही । इन आँखों को भ्रम हो भी सकता है, परंतु जिघांसा-पूर्ण हृदय को अब भ्रम कहाँ ? उस नवीन चारण को जब से देखा है तब से हमारे हृदय में जिघांसा, आग की तरह, उद्दीप्त हो उठी है । मन्त्रिवर ! वह व्यङ्ग से भरी कविता चित्तौरध्वंस-विषयक न थीं, वह दुर्जयसिंह के द्वारा किये गये सूर्यमहल के अपहरण से सम्बन्ध रखती थी । वह छद्मवेषधारी चारण नहीं था, वह तिलकसिंह का पुत्र तेजसिंह था ।

सत्रहवाँ परिच्छेद

उद्यान का फूल

"अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
रनाविद्धं रत्नं मधुनवमनास्वादितरसम् ।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः ॥"

अभिज्ञानशाकुन्तलम् ।

पाठकगण, आप एक बार हमारे साथ दुर्जयसिंह के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रासाद से कुछ ही दूर आगे, उसी पहाड़ के ऊपर, एक अन्य स्थान में चलें । चन्द्रमा का उदय हो चुका है । मन्द मन्द ठंडी हवा बह रही है । जाने में कुछ भी कष्ट न होगा । यदि इतनी दूर जाने में भी आप थक जायँगे तो हर्ज क्या है ? थोड़ी देर के लिए हम लोग एक सुन्दर पुष्प-वाटिका में विश्राम कर लेंगे ।

आधी रात का समय है । किन्तु इस निःशब्द रात में, अब भी सूर्यमहल पहाड़ के ऊपर, एक पुष्पवाटिका में एक राजपूत-बालिका अकेली टहल रही है । उद्यान में उस बालिका के सिवा एक भी जन्तु कहीं दिखाई नहीं देता और न कहीं कोई शब्द ही सुनाई देता है । न मालूम वह बालिका चाँदनी रात में क्यों अकेली इधर उधर घूम रही है । कभी स्थिर दृष्टि से स्वच्छ आकाश की ओर देखती है, कभी दो एक फूलों को तोड़ कर उनकी पखड़ियों को एक एक कर नीचे डालती है और कभी चिन्ताकुल होकर, कोमल स्वर से, गुनगुना कर गीत गाने लगती है ।

उस कनकलता सी कोमलाङ्गिनी को देखकर यह नहीं जान पड़ता कि यह मानवी है । मालूम होता है मानों कोई चन्द्रलोक-वासिनी अप्सरा उस उपवन में विहार करने के लिए उतर आई हो । बालिका की उम्र चौदह वर्ष से अधिक नहीं है । उसका चाँद सा मुखड़ा, कमल से बड़े बड़े नेत्र, लावण्य से भरा हुआ—फूल से भी अत्यन्त कोमल—शरीर देख यही जी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाहता कि बार बार उसी की ओर देखा करें। बालिका का नाम था कुसुमकुमारी। उसके मुँह की ओर ध्यानपूर्वक देखने से यही जान पड़ता है कि इस थोड़ी सी उम्र में ही किसी गूढ़ चिन्ता ने उस बालिका के कोमल चित्त में अपना घर बनाया है और उसके सुन्दर मुखड़े को द्वार बना कर वहाँ अपनी सहचरी उदासीनता को बैठा रक्खा है। यही दशा उसकी दोनों आँखों की थी। भली-भाँति निहारने से मालूम होता था जैसे उसके प्रेमावास सुन्दर नयनों में शोक ने आश्रय लिया है।

चन्द्रमा का प्रकाश पेड़ के पत्तों और फूलों पर चाँदी की तरह चमचमा रहा है। नव-विकसित पुष्पराशि आधी रात को मानो अपने हृदय का आवरण हटा कर शीतल वायु के समागम से जी को जुड़ा रही है। कुसुम को रात में फूल चुनना बहुत अच्छा मालूम होता था, इसी से वह चाँदनी रात में चुपचाप फूल लेने आई है।

यद्यपि वह चिन्ता में डूबी थी तथापि उसके मुँह की शोभा देखने से मानों चन्द्रमा का मुँह फीका हो गया। उस बालिका के शरीर का गोरापन देख चाँदनी मलिन सी हो गई। उस फुलवाड़ी में जिधर वह बालिका जाती है उधर की शोभा ही कुछ न्यारी हो जाती है।

यह सचमुच कोई बालिका है, या स्वप्न की मूर्तिमती दिव्यरूप-धारिणी देवी है? क्या ऐसी सुन्दरी इस संसार में और होगी? हमने तो आज तक नहीं देखी। इसी से उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कल्पना शक्ति की प्रत्यक्ष मूर्तिमान थी है। अनुपम सौन्दर्य के लिए जितनी सामग्री चाहिए सभी उसमें विद्यमान थी। अतएव उसके अङ्ग के सौन्दर्य का अलग अलग वर्णन न करके थोड़े ही में उसकी इतिश्री कर दी। हमारे पाठकगण अपनी अपनी कल्पना के अनुसार उस चतुर्दश-वर्षीया अनुपम सुन्दरी के मनोहर रूप का चित्र खींच कर मन में मान लें कि उस राजपूत-बालिका का स्वरूप वैसा ही था।

एकाएक उस रात के सन्नाटे में दूर से एक वीणा का शब्द सुन पड़ा। मानो उस मधुर शब्द ने थोड़ी देर के लिए सारे संसार को मोहित कर दिया। उस वीणा-झङ्कार के साथ ही साथ वीणाशब्द-विनिन्दक स्वर में एक नाम भी सुनाई दिया—"कुसुम"।

उस निःशब्द रात में यह शब्द कुसुम के कानों में आ कर खटका। उस ने चकित होकर पीछे की ओर देखा। वह गर्दन को ज़रा टेढ़ी कर और दोनों होठों को किञ्चित् अलग करके खड़ी हुई और फिर उस शब्द को सुनने की प्रतीक्षा करने लगी।

फिर वीणा का शब्द सुन पड़ा और उसके साथ साथ फिर वही "कुसुम" नाम कुसुम के कानों में प्रविष्ट हुआ।

जिस तरफ़ से वह संगीतध्वनि आ रही थी उसी ओर साकांक्ष दृष्टि से कुसुम देखने लगी। देखा, पुष्पोद्यान की दीवार के बाहर, एक पेड़ के नीचे बैठ कर, एक चारण वीणा बजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर कुछ गाने का उपक्रम कर रहा है। कुसुम को चारणों का गाना बहुत प्रिय लगता था। वह धीरे धीरे चारण के निकट जाकर एक वृक्ष की आड़ में खड़ी हो गई और गीत सुनने लगी।

गीत का भावार्थ यह था—

"राजपूत-स्त्रियो, पूर्वकाल का एक वृत्तान्त सुनो, सत्यपालन की एक अपूर्व-घटना सुनो। सात वर्ष की एक बालिका से दस वर्ष के एक बालक की किसी समय भेंट हुई। खेल ही खेल में उस बालिका ने उस बालक को वरण करके प्रतिज्ञा की कि इस बालक के अतिरिक्त किसी दूसरे को वह पति न बनावेगी। बालक ने भी ऐसा ही कुछ प्रण किया। राजपूत की बालिका कभी अपने सत्य का भङ्ग नहीं करती।

"एकाएक विपत्ति की मेघराशि उमड़ आई। उत्पात की वृष्टि से सुख का संसार बह चला। वह बालक क्या हुआ, कहाँ गया? युद्ध में मारा गया या पानी में डूब मरा? कौन कह सकता है कि वह बालक कहाँ गया? सभी लोग उसे भूल गये। तो क्या वह बालिका भी उसे भूल गई?

"चन्द्रावत-कुल के एक दुर्धर्ष वीर ने उस बालिका के साथ ब्याह करना चाहा। उस वीर के अतुल ऐश्वर्य और असीम पराक्रम का यश सारे देश में छाया हुआ है। उस चन्द्रावत वीर का ऐश्वर्य देख कर वह बालिका क्या अपने सत्य सङ्कल्प को भूल गई? राजपूत की बालिका सत्य का अपमान नहीं करती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"चन्दावत ने लोभ दिखलाया। बालिका ने कहा—मैं राठौर को वाक्य-दान दे चुकी हूँ। तब चन्दावत ने बल-पूर्वक बालिका का हाथ पकड़ना चाहा। बालिका ने कहा—'चन्दावत वीर, आप व्यर्थ ऐसा साहस न करें, मृत्यु से डरें! मृत्यु के आगे आपकी एक भी नहीं चल सकती। राजपूत की कन्या कभी अपने सत्य को नहीं छोड़ सकती।'

'बालिका जिस राठौड़ के साथ सत्यबद्ध हुई थी वह कहाँ है? वह इस समय पहाड़ की गुफा में रहता है; भीलों के साथ समय बिताता है, भीख माँग कर खाता है, और महाराना के युद्ध में जाकर लड़ता है। राजपूत की बालिका यदि सत्य का निरादर न करेगी तो राजपूत वीर अवश्य जयी होगा। राजपूत-बालिका यदि प्राण से भी बढ़ कर सत्य को समझेगी तो राजपूत का कभी पराजय न होगा। यदि राजपूत को कुमारी सत्य-संकल्प से विचलित न होगी तो राठौड़ भी अपने सत्य का पालन करेहीगा।'"

इस गम्भीर आशय के गीत को सुन कर कुसुम बड़े अचम्भे में आई। जब तक उस संगीत की मधुरता भलीभाँति वायु में विलीन न हो गई तब तक वह उसी तरह क्षुब्ध होकर खड़ी रही। उस गीत से मानों बालिका का कोमल हृदय द्रवीभूत हो गया। इतने दिनों से जो गूढ़ भाव हृदय में छिपा था, वह एक-दम प्रकट हो पड़ा। कुसुम अपने हृदय के आवेग को न रोक सकी। धीरे धीरे वह वृक्ष की ओट से बाहर निकली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चतुर चारण ने उस लावण्यमयी हृदय-हारिणी बालिका की ओर एक बार पलक उठाकर देखा और फिर धरती की ओर दृष्टि फेर कर कहा—मेरे इस क्षुद्र-गान ने इस गहरी रात में कुमारी कुसुम के कोमल हृदय को कुछ कष्ट तो नहीं दिया? इस वनवासी चारण का गीत सुननेवाला कोई नहीं। यदि कोई है तो एक कुसुमकुमारी। यदि उसे भी मेरा गाना अच्छा न लगे तो वह भी जवाब दे, चारण यहाँ से दूर किसी घोर जंगल में जाकर एकान्त में बैठे और अपना गीत गावे।

अहा! कुसुम को संगीत से भी बढ़कर चारण का यह विनीत वचन प्रिय लगा। जो माधुर्य इस वचन में था वह उस संगीत में भी न था। चारण यों विनयवचन कहता हुआ धीरे धीरे पेड़ की ओट से बाहर निकल आया। चन्द्रमा के प्रकाश में उसका अवयव देखकर कुसुम और भी विस्मित हुई। उसका उन्नत और विशाल शरीर युवत्व की अपूर्व छटा और तेज से भरा है। उस ब्रह्मचारी चारण का सुन्दर स्वरूप, चाँदनी रात में, उद्यान की शोभा को सौगुना अधिक बढ़ा रहा है। उसके एक हाथ में वीणा है। चन्द्रमा के प्रकाश में यद्यपि उसका ऊँचा ललाट चमचमा रहा है, और दोनों आँखें प्रसन्नता से भरी हुई सी देख पड़ती हैं, तथापि उनमें कुछ उदासीनता और चिन्ता की झलक भी अवश्य है।

चारण ने फिर नीची दृष्टि करके कहा—कुमारी, तुम कहो तो यह चारण अपने निर्जन वन में लौट जाय,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किन्तु यह गीत तुम दूसरे के मुँह से फिर क्या कभी सुन सकोगी ?

कुसुम अब अपने हृदय के आवेग को न रोक सकी। उसने घूँघट के भीतर से धीमे स्वर में कहा—चारणदेव, आपने यह गीत कहाँ, किससे, सीखा ?

चारण ने पूर्ववत् धीरे धीरे गम्भीर स्वर से कहा—जंगल पहाड़ों में रह कर जो समय बिता रहा है उसी से, उस निर्जन-वन और गुफा में सीखा है।

कुसुम—जंगल और पहाड़ों में रहकर कौन समय बिता रहा है ?

चारण—जो अपने पैत्रिक दुर्ग को खोकर बाल्यकाल से ही जंगल पहाड़ों में घूम रहा है।

कुसुम अब अपने उद्वेग को न रोक सकी। वह उच्च स्वर से बोली—आप एक अभागिनी राजपूत-बालिका की ढिठाई क्षमा करें, वे राठौड़-वीर क्या इस दुःखिनी के भाग्य से जीवित हैं ?

चारण—हल्दीघाटी की लड़ाई में उस राठौड़ की तलवार की चमचमाहट लोगों ने देखी थी। फिर मुग़लसेना के आने पर लोग उसे देखेंगे।

कुसुमकुमारी आँसू-भरी आँखों से चारण की ओर देखकर बोली—ईश्वर उन्हें कुशलपूर्वक रक्खें।

चारण—देवि ! यदि आप इस चारण की धृष्टता क्षमा करें तो यह आपसे कुछ पूछने का साहस करे। क्या आपने उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राठौड़ को कभी देखा था ? जिसको सभी लोग भूल गये, बन्धु-बान्धवों ने जिसे भुला दिया, जो भिल्ल और किसानों के अन्न से पलकर निविड़ वन या पहाड़ की गुफा में रहता है, उसको स्मरण करनेवाला क्या इस संसार में एक भी व्यक्ति है ?

चारण ने कुछ और कहना चाहा पर उसका गला रुक गया। अन्त में बड़े कष्ट से उसने कम्पित स्वर में कहा—मैं भी गह्वर-निवासी हूँ। संयोग से उस राठौड़ से फिर भेंट हो सकती है, इसलिए पूछता हूँ, क्या उससे कुछ संवाद कहना है ?

कुसुम—संवाद केवल इतना ही कहना है कि राजपूत-कन्या सत्यपालन करना जानती है। वह अपने सत्य का पालन अवश्य करेगी।

चारण—तो क्या वह राठौड़ आपका पूर्वपरिचित है ?

इस बार कुसुम का सिर लज्जा से झुक गया। उसने नीची दृष्टि करके धीरे धीरे कहा—वह राठौड़ वीर इस अभागिनी से अपरिचित नहीं है।

बहुत देर तक दोनों चुप रहे। इसके बाद चारण ने कहा—देवि ! जिस दिन तेजसिंह ने यह गीत मुझको सिखलाया था उस दिन यह सोने की अँगूठी देकर मुझसे कहा था कि "गीत-वर्णित वीरबाला के साथ यदि कभी भेंट हो जाय तो मेरे सत्य का निदर्शन-स्वरूप यह अँगुलीय उसे दे देना।" आज आपसे भेंट हो गई। यदि आज्ञा हो, यदि मेरी धृष्टता क्षमा हो, तो यह अँगूठी आपको पहना दूँ।—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लज्जा से सिमटी हुई कुसुम ने उस कामदेव-सरीखे सुन्दर नव-युवक चारण की ओर देखा। बालिका का सम्पूर्ण शरीर कण्टकित होगया। सङ्कुचित भाव से उसने युवक की ओर अपना हाथ बढ़ाया। न मालूम उसका शरीर क्यों काँप रहा था।

चारण ने धीरे धीरे वह अँगूठी उसकी उँगली में पहना दी। अँगूठी पहनाते समय चारण के सम्पूर्ण शरीर में रोमाञ्च हो आया और दोनों हाथ भी थरथराने लगे। कुसुम ने अपनी आँखें मूँद ली थीं। उसको जान पड़ा जैसे चारण का दीर्घ-निश्वास उसके हाथ पर पड़ता हो। एक बार उसे यह भी मालूम हुआ जैसे चारण के तप्त होठों ने उसके हाथ का स्पर्श किया हो।

तो क्या चारण ने सचमुच ही ऐसी धृष्टता की?—नहीं। यह केवल कुसुमकुमारी के मन की कल्पना थी। कुसुम ने आँखें खोलीं। देखा, सामने वही मनोहर वेषधारी सुन्दर शरीर और प्रेम-प्रसन्न मुखमण्डल है। कुसुम ने चारण के हाथ से अपने कर-पल्लव को किञ्चित् चेष्टापूर्वक छुड़ाया। कुछ देर के लिए कुसुम का मुँह लाल हो गया और रुक रुक कर साँस चलने लगी।

कुछ देर में कुसुम ने धैर्य धारण कर पूर्ववत् अकम्पित स्वर से कहा—ऐसा कोई भूषण मेरे पास नहीं जो इस अँगूठी के बदले उस वीर पुरुष के पास भेज सकूँ। किन्तु यदि उनसे आपकी भेट हो तो इस अभागिनी का निदर्शन-स्वरूप यह फूल आप उन्हें दे दीजिएगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अठारहवाँ परिच्छेद

जंगली फूल

"गाढोत्कण्ठां गुरुषु दिवसेष्वेषु गच्छत्सु बालां
जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम् ॥"

मेघदूतम् ।

रात नाम-मात्र को बच रही थी । ऐसे समय तेजसिंह सूर्य-महल पहाड़ से नीचे उतरे और चारण का वेष परित्याग कर भीमचन्द की बस्ती के निकटवर्ती सरोवर में प्रातःस्नान करने गये । जब वे उस सरोवर के पास पहुँचे तब उन्हें भीलों की भाषा में एक गीत सुन पड़ा । इस निःशब्द रात के पिछले पहर कौन गीत गा रहा है ? यह जानने के लिए उत्सुक होकर वे सरोवर के किनारे की अमराई के भीतर घुसे । वहाँ देखा, एक ऊँचे पत्थर पर बैठी हुई एक बालिका, रात के पिछले पहर की, फीकी चाँदनी में फूल चुन रही है और बीच बीच में गीत गा रही है । उसे पहचान कर तेजसिंह विस्मित हुए । वह भीमचन्द की लड़की थी ।

तेजसिंह ने कुछ देर खड़े रह कर पुकारा—"वनदेवी !" उनकी ओर देख कर बालिका चकित हुई और हँस कर बोली—मैं तुम्हारे लिए जंगली फूल चुन रही हूँ ।

तेजसिंह— क्या तू यथार्थ में ही वनदेवी है ? इतनी रात को अकेली, इस जनशून्य उपवन में, क्यों फूल तोड़ रही है ? मेरे साथ घर चल ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तुम फूलों को बहुत चाहते हो, इसी से तुम्हारे लिए फूल लेने आई हूँ।" यह कह कर बालिका हँस उठी। तेजसिंह भौंहें चढ़ा कर चुप हो रहे। उस बालिका की बात का आशय कुछ न समझ सके।

बालिका ने फिर हँस कर कहा—मेरी बनाई यह फूलों की माला न लोगे ?

तेजसिंह—क्यों न लूँगा, दे भी तो।

बालिका—मैं अपने हाथ से तुम्हारे गले में पहनाऊँगी।

तेजसिंह—अच्छा पहना दे, फिर मेरे साथ घर चल।

बालिका—अयँ ! तुम्हारी छाती पर यह क्या है ?

तेजसिंह—कुछ नहीं, एक फूल है।

बालिका—उसे फेंक दो।

तेजसिंह—क्यों ?

बालिका—वह देहाती बाग़ का फूल है।

तेजसिंह—है तो क्या ? मैं न फेंकूँगा।

बालिका—तो मैं तुम्हें यह माला न पहनाऊँगी।

तेजसिंह—क्यों ?

बालिका—माला पहिराने से तुम्हारे हृदय की कुसुम-कलिका रुष्ट होगी।

तेजसिंह ने चकित स्वर से पूछा—क्या ?

बालिका—बाग़ के फूल और वन के फूलों में उतना ही अन्तर है जितना बड़े और छोटे आदमियों में। छोटे आदमी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को देख कर बड़ा आदमी क्रोध करता है। तुम्हारे गले में जंगली फूलों की माला देख कर यह तुम्हारे हृदयस्थ बाग़ का फूल क्रोध करेगा।

बालिका के वचन का मर्म तेजसिंह भली भाँति नहीं समझ सके; इसलिए उन्होंने पूछा—क्या फूल भी किसी पर क्रोध करता है ?

बालिका—"क्यों नहीं करता ? नहीं करता तो तुम इस फूल को फेंकने में इतना क्यों डरते हो ?" तेजसिंह चुप हो रहे।

बालिका—तुम इतनी रात को अकेले कहाँ गये थे ?

तेजसिंह—यह क्यों पूछती हो ?

बालिका—इसलिए कि रात को रास्ते में भय बना रहता है।

तेजसिंह—किसका भय ?

बालिका—चोरों का।

तेजसिंह—चोर-डाकू किसको कहते हैं, यह तो मैं जानता भी नहीं।

बालिका—क्या वह कभी तुम्हारी कोई चीज़ नहीं चुराता ?

तेजसिंह—नहीं।

तेजसिंह को सिर से पैर तक ध्यान-पूर्वक देख कर बालिका बोली—तो तुम्हारे हाथ की अँगूठी कहाँ ग़ायब हुई ?

इस दफ़े तेजसिंह को सचमुच बड़ा आश्चर्य हुआ। वे मन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही मन सोचने लगे—क्या यह भील-बालिका मेरा सब हाल जानती है ? क्या आज की सारी घटना इसने अपनी आँखों देखी है ? छिप कर यह मेरे साथ तो नहीं गई थी ? अँगूठी देते समय क्या इसने देखा है ? नहीं, यह सम्भव नहीं । अभी तो वह ऊँचे पत्थर पर बैठ कर फूल तोड़ रही थी ।

तेजसिंह को चिन्तित देखकर भील की बालिका खिलखिला कर हँस उठी और बोली—कहो, तुम्हारी एक चीज़ की चोरी हो गई न ?

तेजसिंह—नहीं, चोरी नहीं हुई है । उस अँगूठी को कहीं छोड़ आया हूँ ।

बालिका—अच्छा, मैं उसे ढूँढ़ निकालूँगी ।

तेजसिंह—ढूँढ़ ला, तुझे रोकता ही कौन है ?

बालिका—यदि मैं ढूँढ़ लूँगी तो फिर वह अँगूठी मेरी हो जायगी ।

तेजसिंह—अच्छा, यही सही ।

बालिका मारे ख़ुशी के तालियाँ पीट कर हँस उठी । फिर बोली—तो मेरी यह माला न लोगे ?

तेजसिंह—नहीं, अब न लूँगा । तू घर चल ।

बालिका—मैं न जाऊँगी ।

तेजसिंह—क्यों ?

बालिका—इस चाँद को देख कर कुछ गाने को जी चाहता है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेजसिंह सरोवर में स्नान कर के चले गये। थोड़ी ही देर में उन्हें उस बालिका के कोमल कण्ठ से गाने की ध्वनि सुन पड़ी। इस बार की ध्वनि में सातों स्वर मिले हुए थे; संगीत का विलक्षण भाव भरा हुआ था। ऐसा मालूम हुआ जैसे वह गीत-ध्वनि उस अनन्त पर्वतराशि को पार करके उष:काल के निर्मल आकाश में व्याप्त हो रही हो। भील-बालिका के हृदय की सरलता बतानेवाले उस गीत का थोड़ा सा भाव लेकर हमने यहाँ हिन्दी में दो पद्य, पाठकों के मनोरञ्जनार्थ, लिख दिये हैं।

बिना गन्ध-गुणराग-रङ्ग का अजब जंगली फूल।
नीरस वन्य पुष्प की माला कौन गहेगा भूल?
अहा! भिल्लबाला की माला रही धरा पै लोट।
जिसकी अवहेला लख होती अधिक हृदय में चोट॥
देख अनोखा फूल बाग़ का लिपट जात अलि धाय।
गन्धहीन इस वन्य पुष्प को कोई न छूता हाय॥
नहीं एक भी गुण जब इसमें कौन करेगा प्यार?
ठान वास एकान्त इसी से लेता जन्म सुधार॥

उन्नीसवाँ परिच्छेद

अँधेरे में उजियाली छटा

"न पृथग् जनवच्छुचो वशं वशिनामुत्तम गन्तुमर्हसि।
द्रुम सानुवतां किमन्तरं यदि वायौ द्वितयेऽपि ते चलाः॥"
रघुवंशम्।

यह बात पहले ही कही जा चुकी है कि शुरू बरसात में,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हल्दीघाटी के युद्ध में, चौदह हज़ार राजपूतों ने अपने देश के लिए जीवन उत्सर्ग किया। उस वर्ष बरसात के कारण यवन-सेना कुछ न कर सकी। अगत्या मेवाड़ छोड़ कर चली गई। प्रतापसिंह को कुछ महीनों तक विश्राम लेने का अवकाश मिला।

समय आते ही शत्रुगण सेना ले फिर मेवाड़ पर चढ़ आये। वीरश्रेष्ठ प्रतापसिंह ने फिर शत्रुओं का सामना किया। किन्तु बहुसंख्यक मुग़ल-सेना के साथ युद्ध करना वृथा हुआ। विफल होकर उन्हें फिर युद्धक्षेत्र से हटना पड़ा।

मुग़ल-सेनापति शहबाज़ ख़ाँ ने कमलमीर क़िले को जा घेरा। प्रतापसिंह ने, उदयसिंह के राज-प्रासाद को छोड़ कर, यहीं अपनी राजधानी बनाई थी। मेवाड़ से उत्तर-पच्छिम ओर मारवाड़ जाने की जो पहाड़ की घाटी थी, उसी घाटी के ऊपर यह पहाड़ी क़िला बना था। दोनों पार्श्वों में दो उन्नत पहाड़ थे। बीच में पत्थर के छोटे बड़े टुकड़ों के ऊपर होकर बड़ा ही संकीर्ण-मार्ग था। उसी मार्ग से शत्रुसेना ने मारवाड़ पर भी आक्रमण किया था। इस कारण, उस मार्ग को बन्द कर देने के लिए प्रतापसिंह ने कमलमीर में राजधानी स्थापित की थी। जितने दिनों तक हो सका, प्रतापसिंह ने इस पहाड़ी क़िले की रक्षा की। अन्त में जब रक्षा का कोई उपाय न देखा, क़िले की सेना को भाँति भाँति के कष्ट होने लगे तब लाचार होकर उन्होंने वह क़िला अपने मामा को सौंप दिया और स्वयं दूसरे क़िले में जाकर पनाह ली। प्रतापसिंह के मामा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिजली के पवाँर थे। युद्ध के प्रारम्भ में उन्होंने महाराना के निकट जो प्रतिज्ञा की थी, उसे पूरा किया। अपने सत्य की रक्षा करने के लिए पवाँरकुलनायक ने ख़ुशी से प्राण दे डाला। कमलमीर शत्रु के हस्तगत होगया।

कमलमीर से भाग कर प्रतापसिंह ने मेवाड़ के दक्षिण-पश्चिम चवन्द-प्रदेश में अपना अड्डा जमाया। यह प्रदेश पहाड़ों से भरा होने के कारण अत्यन्त दुर्गम्य था। इस प्रदेश में केवल जङ्गली भील रहते थे। इस विपत्ति के समय भीलों ने राजपूतों के साथ बड़ी उदारता दिखलाई। अपने ऊपर आनेवाली विपत्ति की कुछ आशङ्का न करके उन्होंने प्रतापसिंह को आश्रय दिया और पूरे तौर से उनकी सहायता की। प्रतापसिंह चवन्द के क़िले में भील और राजपूत सैन्य को लेकर रहने लगे।

इधर शत्रु भी चुपचाप बैठे न रहे। कमलमीर को हस्तगत करके मानसिंह ने धर्मेती और गगुन्द-क़िले को जा घेरा। उधर महावत ख़ाँ ने उदयपुर को अपने अधिकार में किया और प्रताप-सिंह को परास्त करने के लिए फ़रीदख़ाँ चवन्द-क़िले की ओर अग्रसर हुआ। इस प्रकार चारों ओर से घेरे जाने और असंख्य सेना के द्वारा आक्रान्त होने पर भी प्रतापसिंह धैर्य्यच्युत न हुए। उन्होंने अपने साहस और अध्यवसाय को न छोड़ा। जब तक मेवाड़ प्रदेश में एक भी पहाड़ी क़िला या पहाड़ की तराई स्वाधीन रहेगी तब तक यह निर्भीक वीर पहाड़ की गुफा में भीलों के साथ रह कर सिसोदियावंश की टेक रक्खेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रतापसिंह ने अपने मन में यही निश्चय कर रक्खा था। हर एक पहाड़ पर, पहाड़ के घने जङ्गलों में, राजपूत-सेना छिप कर रहती थी। पहाड़ के नीचे और कन्दरा में प्रतापसिंह के अनुचर लोग, प्रभु से आदेश लेकर, रहते थे और भेस बदल कर शत्रुसेना का भेद लाते तथा अपने स्वामी को सुनाते थे। आधी रात को पहाड़ की चोटी पर मशाल जलते देख प्रतापसिंह के सैनिक उसका मतलब समझ जाते थे। इस प्रकार संकेतद्वारा प्रतापसिंह अपनी सेना को बटोर कर एक जगह करते और शत्रुसेना को असावधान देख एकाएक उस पर आक्रमण करते थे। प्रतापसिंह जान लेकर कहीं दूर भाग गया है, या किसी जङ्गल में छिपा है, यह सोच कर जब दुश्मनों के सैनिक निश्चिन्त रहते थे उसी समय एकाएक प्रतापसिंह—हथियारबन्द राजपूत-सेना के साथ—दिखाई देते थे और शत्रुसेना में मार-काट मचा कर फिर अपना रास्ता लेते थे। उदयपुर गया, कमलमीर गया, और जितने पहाड़ी दुर्ग थे सब एक एक कर शत्रु के हाथ में चले गये। पहाड़ की तराई और घाटी में जिधर देखिए उधर ही यवनसेना, टिड्डीदल की तरह, छाई हुई है। मानसिंह, शहबाज़ ख़ाँ, फ़रीद ख़ाँ और महावत ख़ाँ असंख्य सेना को साथ ले चारों ओर से आक्रमण करने के लिए मुस्तैद हैं। किन्तु मेवाड़ का एक दृढ़-प्रतिज्ञ वीर अपने उद्देश पर अटल भाव से स्थिर है। प्रतापसिंह सिसोदिया का नाम रक्खेंगे और स्वाधीनता की रक्षा करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चवन्द-दुर्ग को हस्तगत करने के लिए फ़रीद ख़ाँ दलबल के साथ आ रहा था। उस उच्च पर्वतमय प्रदेश को जीत कर, और प्रताप को बाँध कर ले जाने के लिए यवनसेना बड़ी उमङ्ग के साथ आ रही थी। सहसा प्रतापसिंह का आदेश उस पहाड़ के चारों ओर राजपूत-सेना में, गुप्त-संकेत द्वारा, पहुँच गया। राजपूत-सैनिक प्रतापसिंह के उद्देश को समझ गये। उन्होंने बात की बात में फ़रीद ख़ाँ को चारों ओर से घेर लिया। उसने यवनसेना सहित अपने को राजपूत सैन्य के द्वारा घिरा हुआ पाया। उन राजपूत वीरों से बच कर निकल भागने का एक भी उपाय उसे न सूझा। आख़िर सारी यवनसेना वहीं लड़ कर कट मरी। वहाँ से फिर कर फ़रीद ख़ाँ या उसका एक भी सिपाही अपने देश को न गया।

असाढ़ी घटा की तरह चारों ओर से ज्यों ज्यों विपत्ति उमड़ कर आने लगी, भविष्य का आकाशमण्डल ज्यों ज्यों अन्धकार से आच्छन्न होने लगा, तथा धन, सेना और दुर्गों की संख्या ज्यों ज्यों घटने लगी, त्यों त्यों निर्भीक प्रतापसिंह का साहस और अध्यवसाय दिन दिन और भी बढ़ने लगा। असंख्य यवनसेना के विरुद्ध खड्ग धारण कर वे अकेले उस पर्वतमय प्रदेश की रक्षा करेंगे। उस पर्वत के प्रत्येक शिला-खण्ड पर अपने वीरत्व का चिह्न अङ्कित करेंगे।

भविष्य का आशा-नभोमण्डल विपद्रूपी मेघों से और भी आच्छन्न हो चला। अन्धकार की मात्रा दिन दिन बढ़ने लगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस अन्धकारमय घनघोर घटा में प्रतापसिंह का साहस और दृढ़ अध्यवसाय विद्युत् की भाँति चमकने लगा, जिसकी उजियाली छटा दिल्ली के दर्वाज़े तक दृष्ट हुई । वह अपूर्व विद्युत् का प्रकाश देशदेशान्तर में चारों ओर चकाचौंध उत्पन्न करने लगा ।

फिर बरसात का समय आया । इस बार भी मानसिंह और यवन सैनिक अकृतकार्य होकर मेवाड़ को त्याग कर दिल्ली लौट गये ।

बीसवाँ परिच्छेद

"शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति ।"

रघुवंशम् ।

ईश्वर की इस विलक्षण सृष्टि में समय का हेर फेर होता ही रहता है । देखते ही देखते फिर वसन्त ऋतु का आगम हुआ । इस वसन्तागम के साथ ही साथ टिड्डीदल की भाँति शत्रु-सेना भी आ पहुँची । किन्तु प्रतापसिंह सिसोदियों का नाम रक्खेंगे और अपने देश के गौरव की रक्षा करेंगे; स्वाधीनता के सुख को वे हाथ से न जाने देंगे।

फिर भी पहाड़ के नीचे-ऊपर, घाटी और तराई आदि स्थानों को शत्रु-सेना ने आकर घेर लिया । फिर भी शत्रु लोग एक एक कर समस्त पहाड़ो क़िलों को हस्तगत करने लगे और पहाड़ की गुफा आदि स्थानों में छिपे हुए अल्पसंख्यक राजपूत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सैन्य को मार भगाने लगे। किन्तु प्रतापसिंह अब भी उसी तरह अपनी प्रतिज्ञा के पालन में तत्पर हैं। वह साल गया, दूसरा साल आया, यों ही साल पर साल बीतने लगे; पर न तो युद्ध का अन्त हुआ और न मेवाड़ पर पूर्ण रूप से विजय ही प्राप्त हुआ। प्रतापसिंह स्वाधीन के स्वाधीन ही बने रहे।

स्वाधीनता की रक्षा के लिए प्रतापसिंह ने बहुत बहुत कष्ट सहे। उन्होंने एक एक कर मेवाड़ के सभी पहाड छान डाले, कई दफ़े पहाड़ की गुफा में रह कर समय बिताया, और कई दफ़े उन्हें घोर जंगल के भीतर हिंस्रक जन्तुओं की माद में भी छिपना पड़ा। उनकी रानी और बाल-बच्चों की भी यही दशा थी। वे लोग भी एक गुफा से दूसरी गुफा में, और एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ में शत्रु-सेना के भय से भागते ही फिरते थे। कभी जंगली भीलों का आश्रय लेते, और कभी व्याघ्र-निकेतन पहाड़ की कन्दरा में जा छिपते थे। ये राजपरिवार के लोग उस समय जितना कष्ट सहते थे उतना तपस्वी भी नहीं सह सकते। जाड़े में, गरमी में, और वर्षा के समय इन लोगों का एक-मात्र आश्रय पहाड़ ही था। क्या शीत, क्या उष्ण, और क्या अविरल वृष्टिधारा—सभी सामयिक क्लेशों को इन लोगों ने सहा था। इस पर भी आहार का दुःख बना ही रहता था। कभी भर पेट खाने को मिल गया, और कभी वह भी नहीं। किसी किसी दिन ये लोग साग खाकर ही क्षुधा का निवारण कर लेते थे। इन अनेक कष्टों को सहते हुए भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रतापसिंह ने युद्ध करना न छोड़ा, और इसी से यवन-सेना मेवाड़ पर विजय प्राप्त न कर सकी ।

प्रतापसिंह की इस वीरता की बात बादशाह के कानों तक पहुँची । दिल्ली में घर घर प्रतापसिंह के वीरत्व की चर्चा होने लगी । सारे भारत में प्रतापसिंह की वीरता का प्रताप फैल गया । क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, सभी प्रतापसिंह का जय जयकार मनाने लगे । प्रतापसिंह के साथ जो वीर लड़ रहे थे वे भी शत्रु की वीरता देख बिना प्रशंसा किये नहीं रह सकते थे ।

परम-पराक्रमी अकबरशाह इस क्षत्रियवीर के युद्ध-साहस की बात सुन कर चकित हुए । बादशाह के सिपहसालार लोग भी अचम्भे में आये । दिल्ली के रत्नजटित सिंहासन पर गह्वर-निवासी दरिद्र प्रतापसिंह की तारीफ़ होने लगी । सारे भारतवर्ष में उनका जय जयकार मच गया ।

प्रतापसिंह की वीरता की आलोचना करते समय प्राचीन भारतवर्ष की याद आती है । महाभारत के महारथी वीरों का स्मरण हो आता है । यह ठीक है कि प्रतापसिंह ने सप्त-रथियों के साथ युद्ध नहीं किया था, उन्होंने सात करोड़ मनुष्यों के अधिप अकबरशाह के साथ युद्ध किया था । उन्होंने एक दिन भी सँभल कर लड़ाई नहीं की, किन्तु लगातार पच्चीस वर्ष तक वे देश की रक्षा करने और स्वाधीनता के पालन में तत्पर रहे । पच्चीस वर्ष तक युद्ध जारी रख कर उन्होंने जीवन त्याग दिया, किन्तु जीते जी स्वाधीनता का त्याग नहीं किया ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रतापसिंह के वीरत्व की कहानी उपन्यास से भी बढ़ कर विस्मयोत्पादक है। किन्तु वह असत्य नहीं है, और उपन्यास की भाँति उनका चरित्र मनःकल्पित नहीं है। यदि विश्वास न हो तो आप निम्नलिखित कविता पढ़ लें। वह कविता हमारी तुच्छ लेखनी से नहीं निकली है, वरन् प्रतापसिंह के परमशत्रु अकबरशाह की राजसभा के प्रधान सभासद् खानखाना ने उस दरिद्र हिन्दू वीर की बहादुरी के उपलक्ष्य में वह कविता लिखी थी।

खानखाना की कविता का आशय लेकर, पाठकों के मनोरञ्जनार्थ, हिन्दी में यहाँ केवल उसका भाव-मात्र दिखलाया गया है।

दोहा

इस अस्थायी जगत् में है सब वस्तु अनित्य।
जो कुछ लख पड़ता सभी है माया का कृत्य ॥ १ ॥
धारा-धाम-धन एक दिन होगा अवश विनष्ट।
सुयश एक इस विश्व में कभी न होगा नष्ट ॥ २ ॥
धारा-धाम-सम्पत्ति-सुख दिया सभी को त्याग।
पै न तजी निजदेश की रक्षा निस दिन जाग ॥३॥
कभी न सिर नाया नहीं डरे शत्रु से आप।
यश छाया चहुँ ओर है जय जय वीर प्रताप ॥ ४ ॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इक्कीसवाँ परिच्छेद

अपरिचिता

"का स्विदवगुण्ठनवती ?"

अभिज्ञानशाकुन्तलम् ।

योंही लगातार युद्ध का तार बँध गया । मेवाड़ में कोई दिन ऐसा न जाता जब कि यवनसेना के साथ राजपूत-वीरों की दो एक छोटी-मोटी लड़ाइयाँ न हो जाती हों । हर साल इस प्रकार भीषण युद्ध होने लगा । शत्रुसेना टिड्डीदल की तरह गाँव, नगर, पहाड़ और पहाड़ की तराइयों में सर्वत्र छा गई । दुश्मन ने एक एक कर सभी क़िलों को हस्तगत कर लिया । किन्तु गह्वर-निवासी प्रतापसिंह ने युद्धदान-पूर्वक स्वाधीनता की रक्षा की और मेवाड़ पर पूरे तौर से शत्रु का विजय न होने दिया ।

एक दिन यवनसेना के साथ दिन भर युद्ध होता रहा । अनगिनत शत्रु की सेना ने चारों ओर से प्रतापसिंह को घेर लिया । प्रतापसिंह बड़ी वीरता के साथ लड़ने लगे । उनका युद्ध-कौशल देख सारी शत्रुसेना चकित हो गई । समस्त दिन यों ही युद्ध करते बीता । रात में भी यह विषम-युद्ध बन्द न हुआ किन्तु प्रतापसिंह पर शत्रु का कुछ वश न चला ।

आधी रात बीतने पर अन्धकारमय निविड़ वन के भीतर से कई एक भील, बड़ी सावधानी से, एक काठ का सन्दूक़ लेकर पहाड़ के ऊपर चढ़े जा रहे थे । रात ऐसी अँधेरी थी कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई किसी मनुष्य को न देख सकता था। हाथ को हाथ नहीं सूझता था। उस गाढ़तम अन्धकार में भीमचन्द के वशवर्ती भिल्ल-गण, झुरमुट के भीतर से, उस सन्दूक़ को भीमचन्द के यहाँ लिये जा रहे थे। ऐसे भयानक जंगल के भीतर से, ऐसे विषम और संकीर्ण पर्वत-पथ से ऐसी अँधेरी रात में निर्भीक भीलों के सिवा किसकी सामर्थ्य थी जो जा सकता? न भीलों के चलने की आहट ही सुन पड़ती थी और न उनके साँस लेने ही का शब्द सुन पड़ता था। चुपचाप वह सन्दूक़ भीमचन्द की बस्ती में पहुँचा दिया गया। उस बस्ती के पास ही एक गुफा थी। इस गुफा से पाठक पहले ही परिचित हो चुके हैं। वह सन्दूक़ उसी गुफा के भीतर लाया गया। वहाँ सन्दूक़ रखकर भील चले गये।

उस सन्दूक़ में और कुछ नहीं, वही पूर्व-परिचिता कुसुम-कुमारी थी, जो भीलों के द्वारा इस समय गुफा में लाई गई है। इन कई वर्षों के अप्रतिहत युद्ध में सूर्यमहल भी सुरक्षित न रहा। सूर्यमहल में कोई स्थान ऐसा न रहा जहाँ निःशङ्क होकर रानी और अन्तःपुर की अन्यान्य स्त्रियाँ रह सकतीं। इसलिए दुर्जयसिंह के कुटुम्बियों ने पहले ही उस क़िले से बाहर दूसरे क़िले में जाकर आश्रय लिया था। आज किसी अपरिचित योद्धा के आदेश से कुसुमकुमारी सूर्यमहल से भीलों की गुफा में लाई गई है।

गुफा के भीतर एक दिया जल रहा था। उसकी रोशनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में कुसुम ने विस्मित होकर देखा कि वहाँ एक अर्धवयस्का राजपूत रमणी बैठी है । उस रमणी का क़द लम्बा सा है । उसके आयत ललाट पर एक छोटा सा हीरे का टुकड़ा चमक रहा है और गले में एक मोती की माला लटक रही है । उसका पुष्ट और सुन्दर शरीर, तथा चाँद सा मुखड़ा देखने से वह किसी बड़े घराने की बहू-बेटी जान पड़ती थी । किन्तु परिश्रम, कष्ट और सोच से उसकी आँखें झिप रही हैं; और आज उसका मुँह कुछ म्लान सा देख पड़ता है । उसकी उमर चवालीस वर्ष के लगभग होगी । यह स्त्री कौन है, इसे पाठक नहीं जानते, किन्तु मेवाड़वासी इसे भली भाँति पहचानते हैं ।

कुसुम ने जब से सूर्यमहल को छोड़ा है तब से उसने एक भी स्त्री का मुँह नहीं देखा और न किसी स्त्री के साथ कुछ बात ही की है । भीलों के निवासस्थल में आकर कुसुम चकित और भयभीत थी । जब उसने चिराग़ की धुँधली रोशनी में वहाँ एक राजपूतनी को देखा, जब उसका रूप लावण्य और उसके मुँह की शोभा देखी तब कुसुम के हृदय में कुछ धीरज हुआ और आशा भी हुई । वह धीरे धीरे उस अपरिचिता रमणी के पास आई और उसके चरण छूकर प्रणाम करके बोली—मैं कहाँ आई हूँ, किसके दर्शन कर रही हूँ, यह कुछ भी मुझे मालूम नहीं । जान पड़ता है, आप किसी उच्च घराने की गृहलक्ष्मी हैं, और इस युद्ध के समय कोई विपत्ति होने के कारण आपने इस कन्दरा का आश्रय लिया है । कदाचित् मुझ अना-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थिनी पर दया करके आप ही ने मुझे भी इस रक्षित स्थान में मँगा लिया है। आप जो कोई हों, मैं आपके शरण में आई हूँ, मुझे आप आश्रय दें। कुसुमकुमारी आश्रयहीना और अभागिनी है। इसे आप अपनी बेटी समझ रक्षा करें।

कुसुमकुमारी की आँखों में जल देख कर और उसके दीन वचन सुन कर उस अपरिचिता स्त्री ने स्नेह के साथ उसका हाथ पकड़ अपने पास बैठा लिया और उसकी आँखों के आँसू पोंछ कर कहा—बेटी कुसुम, आज तुम्हारी जो अवस्था है, वही मेरी भी है। यह गुफा भीलों की है, उन्हीं ने विपत्ति के समय हम लोगों को आश्रय दिया है। एक राजपूत योद्धा भी इस गुफा में रहता है। यही हम लोगों की रक्षा में तत्पर है। शत्रु के हाथ से सुरक्षित रखने के लिए वही मुझे, आज कई दिन हुए, इस निरापद स्थान में ले आया है। उसी ने तुमको भी सुरक्षित रखने के लिए आज यहाँ मँगवा लिया है। तुम्हारा जी चाहे तो तुम बराबर मेरे ही पास रहो। यदि मेरे बाल-बच्चे कुशल से रहेंगे तो तुम भी कुशल-पूर्वक रहोगी। इससे अधिक आश्वासन क्या दूँ ?

ऐसा वात्सल्य-पूर्ण, स्नेह से सना, वचन बोलनेवाली यह रमणी कौन है ? कुसुम ने बहुत दिनों से ऐसी प्रीति-सनी बातें किसी के मुँह से न सुनी थीं। बहुत दिनों बाद ऐसे मधुर स्नेह-वाक्य सुन कर कुसुम का हृदय द्रवित हो गया। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। उस धारा से अपरिचिता रमणी के दोनों पैर भीग गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपरिचिता रमणी के हृदय में दया उमड़ आई। उसने बहुत बहुत आश्वासन देकर कहा—बेटी, धीरज धरो, स्थिर हो; मेरे स्वामी मेवाड़ के एक परिचित वीर हैं। इस भीषण युद्ध के समाप्त हो जाने पर वे तुम्हारी सहायता करेंगे। तुम घबरावो मत।

बाईसवाँ परिच्छेद

भविष्य वाणी

"लब्ध्या धरित्री तव विक्रमेण ज्यायांश्च वीर्यास्त्रवधैर्विपक्षः।
अतः प्रकर्षाय विधिर्विधेयः प्रकर्षतन्त्रा हि रणे जयश्रीः॥"

किरातार्जुनीयम्।

अपरिचिता रमणी जिस समय कुसुम के साथ बातें कर रही थी उसी समय व्याघ्रनिकेतन पहाड़ की वृद्धा तपस्विनी एकाएक उस भीलों की गुफा में उपस्थित हुई।

तपस्विनी आगे बढ़कर, धीर गम्भीर स्वर से, बोली—देवी, मुझे आज मालूम हुआ कि भीमचन्द का यह अन्धकारमय गह्वर आपके आगमन से पवित्र और प्रकाशमान हुआ है। वही प्रकाश देखने के लिए मैं आई हूँ। आप घूँघट हटावें, तपस्विनी के आगे घूँघट की आवश्यकता नहीं।

प्रतापसिंह की महारानी ने घूँघट हटाया। उनके मुखमण्डल की ज्योति से वह पहाड़ी गुफा प्रकाशमान हो उठी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनके ऊँचे ललाट पर एक हीरे का आभूषण जगमगा रहा था। गले में मोतियों की एक लरी हिल रही थी। तपस्विनी का उचित सत्कार करके महारानी उनके साथ बातचीत करने लगी। कुसुम चुपचाप उनकी बातचीत सुनने लगी।

रानी—तपस्विनी माँ, आज आपके दर्शन करके मैं निरुद्विग्न होगई। विपत्ति के दिनों में आप ही चिरकाल से हमारी सहायता करनेवाली हैं। महाराना यद्यपि अनेक बार विपत्तियाँ झेल चुके हैं, और मैं भी अनेक सङ्कट के दिन देख चुकी हूँ तथापि याद नहीं आती कि इसके पूर्व कभी मेवाड़ प्रदेश में ऐसी घोर विपत्ति दिखाई दी हो। बहुत दिनों से महाराना के दर्शन नहीं हुए। युद्ध से उन्हें ज़रा भी विश्राम नहीं मिलता। दिन-रात युद्ध के पीछे व्यग्र रहने के कारण उन्हें बाल-बच्चों के देखने का भी अवकाश नहीं मिलता। मैं बाल-बच्चों को लेकर एक दुर्ग से दूसरे दुर्ग में,—यों ही कई क़िलों में,—आश्रय लेती हुई अन्त में कुछ दिनों से भील की इस गुफा में हूँ और यहाँ आश्रय लेने के लिए बाध्य की गई हूँ। यहाँ भी हम लोग बेखटके नहीं हैं, विपत्ति की आशङ्का बनी रहती है। मालूम होता है हम लोगों का पता लगा कर इस तरफ़ यवनसेना आ रही है। यहाँ से कुछ दूर पर, पहाड़ की तराई में, महाराना के साथ मुसलमान लोग जूझ रहे हैं। बड़ा ही भयानक युद्ध हो रहा है। अब भी उस युद्ध का अन्त नहीं हुआ है। मुसलमानों का युद्धघोष अब भी सुनाई दे रहा है। मेरे मन में बड़ी चिन्ता हो रही है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माँ, आप महाराना का कुशल-संवाद सुना कर मेरी चिन्ता दूर करें।

तपस्विनी—महारानी, आप स्थिर हों, कुछ चिन्ता न करें। स्वयं पार्वती देवी आपके पति की रक्षा कर रही हैं। वे कुशल-पूर्वक हैं।

रानी—माता, आपके वचन से मैं स्वस्थ हुई। मेरे चित्त की चिन्ता दूर हुई। आपके मुँह में चन्दन-फूल पड़ें। मेवाड़ की महारानी विपत्ति से नहीं डरती। वह अपने लिए कोई परवा नहीं करती। क्योंकि विपत्तियों को वह तुच्छ जान कर, शत्रुओं की कुछ परवा न कर, सिसोदियों के प्राचीन धर्मानुसार जीवन त्याग कर मानरक्षा करना जानती है। मुझे अपने लिए कोई चिन्ता नहीं, जो कुछ चिन्ता है वह महाराना और महाराना की सन्तान के लिए ही है। मेवाड़ प्रदेश में ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ राजकुमार सुरक्षित रह सकें। क्या मेवाड़ के राज-कुमार मुसलमानों के हाथ बन्दी होंगे? क्या मेवाड़ के इति-हास का आज अन्त होनेवाला है?

बच्चों के भविष्य सङ्कट का स्मरण करने से महारानी का वीर हृदय एक बार काँप उठा। वे दोनों तेजः-पूर्ण नयन नीर से भर गये। उनकी यह दशा देख कुसुम अपना सारा दुःख भूल गई। वह महारानी की ओर टकटकी बाँध कर भक्ति भाव से देख रही थी। महारानी की आँखों में आँसू देख कुसुम भी अपने आँसू न रोक सकी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तपस्विनी—सिसोदिया-वंश में जब तक एक भी वीर जीता रहेगा तब तक मेवाड़ का इतिहास समाप्त न होगा। महारानी, आप घबरायें नहीं। मेवाड़ के राजकुमारों के योग्य अब भी सुरक्षित स्थान है। भील लोग सिसोदिया-राजपूतों के चिर-विश्वासी हैं। महाराना उदयसिंह को इसी भीमचन्द के पिता ने इसी गुफा में आश्रय दिया था। महाराना प्रतापसिंह के परिवार को भीमचन्द आश्रय देगा। इस गह्वर के समीप ही एक सुरङ्ग है। उसके भीतर सूर्य की किरण प्रवेश नहीं करती, और न वहाँ से बाहर का शब्द ही कुछ सुन पड़ता है। सुरङ्ग का द्वार बन्द है। उसके खोलने की रीति मेरे सिवा और कोई नहीं जानता। महाराना की सन्तान उसी सुरङ्ग के भीतर बेखटके रहेगी। उस सुरङ्ग का सम्बन्ध जिस जगह से है वह भी मैं जानती हूँ। विदेशीय शत्रुकृत इस भयङ्कर युद्ध का अन्त शीघ्र ही होगा।

रानी—तपस्विनीजी, आपके शीतल वचनों से मेरे जी को बहुत धैर्य मिला। मेरा मनस्ताप मिटा। राजपूत लोग युद्ध में या विपत्ति में अधीर नहीं होते। शत्रु के भय से उनका हृदय कम्पायमान नहीं होता। मैं यद्यपि वीरपत्नी हूँ तथापि हूँ तो स्त्री-जाति ही, इसी से बाल-बच्चों की दशा का स्मरण करके एक बार मेरा हृदय काँप उठा था। यदि मेरे बाल-बच्चों पर कोई विपत्ति न आवे, यदि वे लोग सुरक्षित रह सकें तो यह युद्ध भले ही युगयुगान्तर तक जारी रहे। मेवाड़ के महाराना युद्ध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की कुछ परवा नहीं करते। वे युद्ध में कभी नहीं घबराते। उन की यह दासी भी युद्ध से नहीं डरती। मैं इसी गुफा को प्रासाद समझूँगी।

तपस्विनी—भीलों की इस गुफा में राजपरिवार को कोई क्लेश न होगा। क्लेश क्यों होगा? यह गुफा तो इस समय एक प्रधान राजपूत योद्धा का आश्रयस्थान है।

महारानी—मैंने यह बात भी सुनी है। उसी राठौड़ योद्धा ने भीमगढ़ में हम लोगों की रक्षा की थी। वही हम लोगों को निरापद रखने के लिए भिल्लों की इस गुप्त-गुफा में लाया है। योद्धा का विशेष परिचय जानने को जी चाहता है। किस कारण वह वीराग्रगण्य राजपूत, बचपन से ही अपना घर वार छोड़, भीलों के साथ इस गुफा में रहता है? क्या कोई कठिन संकल्प पूरा करने के लिए वह जङ्गल-पहाड़ों में रहता है? यह सब जानने की इच्छा होती है। किन्तु हम लोगों के ऊपर जो यह भारी विपत्ति आ पड़ी है इसके मारे उस राजपूत वीर का विशेष परिचय लेने का अवकाश नहीं मिलता। वह अपना परिचय देना चाहता भी नहीं। किन्तु इन विपत्तियों से यदि हम लोगों ने छुटकारा पाया तो मैं अपने इस दुर्दिन के बन्धु को कभी न भूलूँगी और महाराना भी उसे न भूलेंगे।

कुसुम का उद्वेग पल पल पर बढ़ रहा था। वह दम साधे बैठी थी। क्या महारानी उसी राठौड़वीर की बात कर रही हैं? उस राठौड़कुल-भूषण साहसी वीर ने जब से पैत्रिक दुर्ग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छोड़ा है तब से क्या इसी भयानक गुफा में रह कर समय बिताया है ?

तपस्विनी—देवी, उस वीर की लम्बी कहानी किसी दूसरे दिन कह सुनाऊँगी ! आज इसके लिए मुझे क्षमा करो । मैं आज केवल इतना ही कहती हूँ कि भिल्ल-पालित तेज-सिंह की अपेक्षा दुर्दम्य योद्धा और विश्वासपात्र अनुचर महाराना के पास और कोई नहीं है । तेजसिंह के हाथ में जब तक तलवार रहेगी, जब तक उसकी नाड़ी में शोणित का सञ्चार रहेगा तब तक आप लोगों को विपत्ति की कोई आशङ्का नहीं ।

कुसुम का सारा शरीर कण्टकित हो उठा । उसके रोम रोम में उल्लास भर गया, हृदय में अनिर्वचनीय आनन्द की तरङ्गें लहराने लगीं ।

रानी—ईश्वर तेजसिंह की सहायता करें । माँ, मैं उस वीर पुरुष की निरपेक्ष स्वामिभक्ति का क्या पुरस्कार दे सकती हूँ ?

कुसुम का हृदय फिर सोच से भर गया । उद्वेग के मारे उसकी व्याकुलता पल पल पर बढ़ रही थी । दम साध कर वह तपस्विनी के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी ।

तपस्विनी—महारानी, उस तेजसिंह की निराश्रया वाग्-दत्ता पत्नी आपके चरणों के आश्रय में आ गई है । बालिका कुसुमकुमारी को आप आश्रय दें । इसकी ऐसी विश्वासिनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दासी आपको दूसरी न मिलेगी । कुसुम, घूँघट हटाओ । तपस्विनी के निकट संकोच करने की आवश्यकता नहीं । जो सिसोदिया-वंश की एक-मात्र पूजनीया हैं, जो मेवाड़ प्रदेश की एक-मात्र आश्रयरूपा हैं, आज उन महारानी की शरण गहो ।

विस्मय, लज्जा, आनन्द और उत्कण्ठा से विह्वल होकर कुसुमकुमारी आँसू-भरी आँखों से महारानी के पैरों पर सिर रख कर धरती पर पड़ रही । वह कुछ बोल न सकी । महारानी ने अनेक भाँति से आश्वासन देकर कुसुम को उठाया और कहा—बेटी, मैं तुमको पहले ही वचन दे चुकी हूँ । तुम मेरी बेटी के बराबर हो और मैं तुम्हारी माता के सदृश हूँ । यदि मेरी सन्तान सुख से रहेगी तो तुम भी सुख से रहोगी । मैं अभी इससे अधिक आश्वासन और क्या दे सकती हूँ ?

यों ही बहुत वार्तालाप होने के बाद महारानी ने फिर तपस्विनी से युद्ध की बात पूछी । तपस्विनी ने कहा—महारानी आप चिन्ता न करें । मेवाड़ की विपत्ति-रात्रि का शीघ्र ही अन्त होगा । वीरत्व और अध्यवसाय की जय अनिवार्य है ।

रानी—किस तरह सिसोदिया-वंश का विजय होगा, यह मैं कैसे जान सकती हूँ ?

तपस्विनी—राजा का बल आयुध और मन्त्रणा है । इसी बल से राजा का विजय होता है । जो काम आयुध-साध्य है उसे महाराना ने किया ही है, रहा मन्त्रणा-बल सो इस समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भामाशाह की आवश्यकता है। उनकी मन्त्रणा और स्वामिभक्ति के बल से मेवाड़ का विजय होगा।

रानी—माँ, आपकी इस बात से मेरे हृदय में बहुत कुछ धैर्य हुआ। आपसे एक बात और पूछूँगी।

तपस्विनी—आप जो कुछ पूछना चाहें पूछें। तपस्विनी उसका उचित उत्तर देगी।

रानी—तपस्विनी देवी! मैंने आप लोगों के मुँह से सुना है कि दिल्ली का सिंहासन और समस्त भारतवर्ष पहले राजपूतों के अधिकार में था। महाराज पृथ्वीराज किसी समय दिल्ली के अधीश्वर थे। ५० वर्ष हुए, राना संग्रामसिंह ने दिल्ली को अधिकार में लाने के लिए युद्ध किया था। क्या हम लोगों का फिर ऐसा भाग्य होगा कि कभी दिल्ली पर राजपूतों का अधिकार हो जाय? भारत का भविष्य कैसा है कुछ जान नहीं पड़ता। अन्त में यवन की जीत होगी या सिसोदिया की?

तपस्विनी बड़ी देर तक ध्यान करती रहीं। फिर गम्भीर स्वर से बोलीं—"मैं बहुत वृद्धा हूँ। मेरी दृष्टि मन्द हो गई है। भविष्य के आकाश में दूर तक दिखाई नहीं देता। अन्धकार के ऊपर घोर अन्धकार है। राजपूत लोग बहुत दिनों से मुसलमानों के साथ जूझ रहे हैं, इसके बाद देख रही हूँ वे दक्षिणी मरहठों के साथ युद्ध करने के लिए सन्नद्ध हैं और इसके अनन्तर यह क्या! महासागर से दूध सरीखी श्वेत तरङ्ग के ऊपर श्वेत तरङ्ग आकर सम्पूर्ण भारतवर्ष को आप्ला-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वित कर रही है । इससे ऊपर का दृश्य कुछ नहीं सूझता। वृद्धा की आँखों में उतनी ज्योति नहीं जो दूर की वस्तु देख सके ।

तेईसवाँ परिच्छेद ।

सूर्यमहल का अधःपात

"हाहाकारः समभवत् तत्र तत्र सहस्रशः ।
अन्योन्यं छिन्द्यतां शस्त्रैरादित्ये लोहितायति" ॥

महाभारतम् ।

राजपरिवार की क्या दशा थी, और वे लोग किस लिए भीलों की गुफा में आश्रय लेने के लिए वाध्य हुए थे, इस समय संक्षेप से उसका वर्णन कर देना हम आवश्यक समझते हैं ।

महाराना प्रतापसिंह मुग़ल-सेना के साथ युद्ध करने के लिए, राजभवन को छोड़ कर, कभी से सपरिवार पर्वत की कन्दरा में निवास कर रहे थे । मेवाड़ की महारानी भी अपने स्वामी की तरह स्वदेश-वत्सला थीं । ऐसा कोई कष्ट न था जिसे अपने देश के रक्षार्थ वे सुख से न सहन कर सकती हों । वे राजकीय सभी सुखों को तुच्छ मान कर गुफा को प्रासाद से भी सुखद समझती थीं ; रात में पत्थर पर सोती थीं अपने हाथ से रसोई बना कर बाल-बच्चों को खिलाती थीं, और विपत्ति आ पड़ने पर एक गुफा से दूसरी गुफा, एक पहाड़ से दूसरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहाड़ के सुरक्षित स्थान में भाग कर आश्रय लेती थीं । वे पहाड़ पर चढ़ने-उतरने का प्राणान्तक कष्ट भी सहती थीं परन्तु सन्धि-प्रार्थना के लिए स्वामी से अनुरोध न करती थीं । कभी कभी वे हिंसक जन्तुओं की माँद में जा छिपतीं और जाड़े में पहाड़ के ऊपर आग जला कर शीत से सन्तान की रक्षा करती थीं । बरसात के मौसम में जब कभी वर्षा का जल गुफा के भीतर पहुँच जाता तब वे छोटे बच्चे को गोद में लेकर रात रात भर खड़ी ही रह जाती थीं । कभी बाजरे और चने की रोटी, तथा कभी कन्द या फल-फूल आदि खिला कर बालकों को पालती थीं । आप अपने पति की चिन्ता से कभी कभी कुछ भी न खातीं और कभी आधे ही पेट खाकर उठ जातीं । कभी कभी अन्न के अभाव से बाल-बच्चों को भूखे देख कर वे दारुण यन्त्रणा सहतीं । कभी तैयार रसोई-पानी को छोड़, शत्रु के भय से, क्षुधार्त बालकों को साथ ले एक जगह से दूसरी जगह और वहाँ भी शत्रु के आगमन का भय मान किसी अन्य स्थान में जाकर पनाह लेतीं । यह दुर्दशा होने पर भी मुग़ल-सम्राट् के निकट सन्धि के लिए प्रार्थना करना वे उचित न समझती थीं ।

अपनी प्राणप्रियतमा पटरानी को और सन्तान को ऐसी दुःसह यन्त्रणा में छोड़ महाराना अनेक विपद्-बाधाओं को झेलते हुए भी, प्रतिवर्ष मुसलमानों का सामना करते रहे,— युद्ध में बहादुरी दिखलाते रहे । किन्तु मुसलमानों के पास असंख्य सेना थी । ये कहाँ तक उससे लड़ कर पार पाते ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धीरे धीरे यवन-सेना ने मेवाड़ के प्रायः सभी प्रदेशों को हस्तगत कर लिया। उतने बड़े मेवाड़ राज्य में कहीं निर्भय होकर ठहरने के लिए प्रतापसिंह को उपयुक्त जगह न रही। अन्त में उन्होंने चन्दावत दुर्जयसिंह के सूर्यमल क़िले में अपने परिवार को भेज दिया और आप थोड़ी सी सेना लेकर शत्रु-सेना पर बार बार, छिपे छिपे, आक्रमण करने लगे।

राजपरिवार के लोगों के रहने के लिए दुर्जयसिंह ने अपना प्रासाद ख़ाली कर दिया और उन लोगों की बड़ी ख़ातिर की। जिधर जिधर राजपरिवार के लोग जाते थे, विपत्ति उनके साथ साथ लगी फिरती थी। अचानक असंख्य शत्रुसेना ने आकर चारों ओर से सूर्यमहल को घेर लिया। मेवाड़ की कुछ प्रधान सेना तो प्रतापसिंह के साथ थी, और जो कुछ बच रही थी, वह सूर्यमहल की रक्षा करने लगी।

तेजसिंह सूर्यमहल में ही रह गये थे। विपत्ति के समय राजपूत परस्पर भाई होते हैं। दुर्जयसिंह ने बड़ी उदारता के साथ तेजसिंह और उनके अधीन राठौड़ों को सूर्यमहल में जगह दी। देते क्यों नहीं? तेजसिंह एक नामी राजपूत वीर थे, वे विश्वास-घात करना नहीं जानते थे। स्वामी के काम से क़िले में प्रवेश करके वे कभी अपना मतलब न निकालेंगे। शत्रु के दुर्ग में शत्रु-सेना के बीच, तेजसिंह अपनी थोड़ी सी सेना के साथ बेख़ौफ़ रहने लगे। दुर्जयसिंह भी तो राजपूत ही थे। विदेशीय युद्ध के समय वे तेजसिंह के ऊपर कदापि हाथ न उठावेंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेजसिंह और दुर्जयसिंह दोनों असाधारण वीर थे। इस समय दोनों वीर, परस्पर मिल कर, बड़ी बहादुरी दिखलाने लगे। जिस तरफ़ विपत्ति की अधिक आशङ्का देखते, जिस ओर शत्रुओं का विशेष आक्रमण देखते, उसी ओर तेजसिंह और दुर्जयसिंह दोनों जाते और शत्रुसेना से दुर्ग की रक्षा करते। राठौड़ और चन्दावत वीरता में एक से एक बढ़े-चढ़े थे। दोनों ने मिल कर असाधारण वीरता दिखाई। एक दिन दुश्मनों ने रात में दुर्ग के एक द्वार को तोड़ कर भीतर प्रवेश करने को राह करली। यह विपत्ति देख क़िले के सभी अधिवासी डर गये। उस समय तेजसिंह अपने चुने हुए कुछ राठौड़ वीरों को साथ ले एकाएक शत्रुसैन्य से जा भिड़े और उन्होंने प्रचण्ड साहस करके उन लोगों की गति रोक दी। अलौकिक वीरता से शत्रुसेना को छिन्नभिन्न करके वे दुर्ग के टूटे हुए द्वार पर जा पहुँचे। दुर्गद्वार को उन्होंने तत्काल बन्द करवा दिया। दुर्गद्वार जब भली भाँति दुरुस्त करा लिया तब आप दीवाल फाँद कर क़िले के भीतर चले आये। उनका सारा शरीर लोहू से लथ-पथ था। उनकी यह असाधारण वीरता देख क़िले के रहनेवाले सभी लोगों ने एक स्वर से उनकी जय मनाई। जयध्वनि से सूर्यमहल का क़िला भर गया। दुर्जयसिंह ने तेजसिंह की वह वीरता देखी, और वह जय जयकार सुना। अब भोर होते ही उन्होंने क़िले का दर्वाज़ा खोलने का हुक्म दिया। केवल दो सौ चन्दावत वीरों को साथ ले दुर्जयसिंह ने एकाएक पाँच सौ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुग़ल-सैनिकों पर आक्रमण किया । उनके दुर्दमनीय तेज को मुग़लसेना न सह सकी । दुर्जयसिंह को उन्मत्त की भाँति लड़ते देख सारी मुग़लसेना साहस छोड़,—पहाड़ से नीचे उतर,—जिधर जिसे रास्ता मिला जान लेकर भागी । शत्रुसेना पर विजय प्राप्त कर प्रचण्ड साहसी चन्दावत वीर ने फिर क़िले में जाकर द्वार बन्द कर दिया । चन्दावत की वीरता का यश सारे क़िले में छा गया ।

इस प्रकार दोनों—राठौड़ और चन्दावत—वीर परस्पर स्पर्धा करके असाधारण साहस के साथ युद्ध करने लगे । राठौड़ और चन्दावत राजपूतों का प्रचण्ड युद्ध-साहस देख शत्रु-सेना को अपनी वीरता का गर्व जाता रहा । दुर्जयसिंह और तेजसिंह में यद्यपि वंशानुगत शत्रुता चली आती थी तथापि उन दोनों को देख कर इस समय कोई नहीं कह सकता कि इनमें परस्पर विरोध है । रात को शय्या से उठ कर दोनों वीर, चन्द्रमा के प्रकाश में या मशाल की रोशनी में, साथ साथ क़िले के ऊपर टहलते थे; शत्रु-सेना पर लक्ष्य करते थे, और शत्रु के आक्रमण का अनुसन्धान करते थे । दोनों ही अपने अपने सैन्य को साहस प्रदान कर प्रोत्साहित करते थे । शत्रु-सेना को असावधान देख दोनों वीर तुरन्त अपनी सेना साथ ले रात में चुपचाप उस पर आक्रमण करके उसे छिन्न भिन्न कर डालते थे । युद्ध में दोनों वीर भाई के सदृश एक दूसरे के पास रहते और दोनों की रक्षा करते थे । दोनों ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आगे बढ़ने की सदा चेष्टा करते थे। दोनों एक से एक बढ़ कर वीरता दिखलाते और शत्रु-सेना को मार भगा कर एक साथ क़िले में लौट आते थे। दोनों वीर एक ही जगह बैठ कर रूखी-सूखी रोटी खाते और दो-एक घूँट पानी पीकर कुछ देर विश्राम करते थे। दोनों ही रात के पिछले पहर क़िले के बुर्ज़ पर एक साथ निःशङ्क होकर सोते थे।

राजपूतों का इतिहास आदि से अन्त तक पढ़ जाइए, कहीं कपट या सत्यभङ्ग का प्रसङ्ग न मिलेगा; परम-शत्रु के साथ भी अन्याय-युद्ध या विश्वासघात की बात न मिलेगी। बड़े बड़े सम्राटों के वाक्यों में अन्तर पाया जाता है, और सन्धिपत्र का उल्लङ्घन भी कई बार पाया गया है परन्तु राजपूतों को सत्य का अपमान करते किसी ने नहीं देखा।

यों ही कई महीने बीते। शत्रु-सेना बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ उठा कर भी क़िले को घेरे ही रही। इधर सूर्यमहल में खाने-पीने की सामग्री दिन पर दिन घटने लगी। तब सबों की राय से राज-परिवार को इस दुर्ग में रखना उचित नहीं समझा गया। बड़े बड़े प्रबन्ध और कठिनाई से राजपरिवार के व्यक्ति भीमगढ़ के क़िले में भेज दिये गये। दुर्जयसिंह आदि जितने योद्धा थे सभी आधे पेट भोजन कर, किसी तरह प्राण धारण कर, पूर्ववत् युद्ध में साहस दिखलाने और दुर्ग की रक्षा करने लगे।

जो मनुष्य-साध्य था वह सब राजपूतों ने किया। उन्होंने जान पर खेल कर एक महीने तक और दुर्ग की रक्षा की।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किन्तु बिना कुछ खाये प्राण धारण करना मनुष्य की शक्ति से बाहर की बात है। अन्त में सूर्यमहल का द्वार उद्घाटित हुआ। सारी मुग़ल-सेना क़िले में घुस पड़ी, क़िले के भीतर राजपूतों और मुसलमानों के बीच जो भयङ्कर युद्ध हुआ, दोनों ओर से जो अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार हुआ, उसका वर्णन कौन कर सकता है। और वर्णन करने की आवश्यकता भी नहीं है। राजपूत लोग मृत्यु को अवश्यम्भावी समझकर, मानरक्षा के लिए, किस तरह रणमद से उन्मत्त से होकर युद्ध करते हैं, यह इतिहास के हर एक पत्र में वर्णित है। राजपूत लोग बड़ी वीरता के साथ लड़े। किन्तु दस के साथ एक कहाँ तक लड़ सकता है ? मुसलमानों की संख्या बहुत थी, और राजपूत थे इने गिने। क्रमशः उनकी संख्या घटने लगी और वे पीछे हटने लगे। बड़ी देर तक क़िले के प्राङ्गण में युद्ध होता रहा। फिर प्रासाद के सिंहदर्वाज़े पर लड़ाई हुई, तदनन्तर प्रासाद के भीतर मार-काट मची। बन्दूकों के धूएँ और लोगों के कोलाहल से सूर्यमहल का प्रासाद भर गया। राजपूत बहुत थोड़े बच रहे थे, फिर भी वे लोग प्राणों की ममता छोड़ कर उन अनगिनित शत्रु-सैनिकों के साथ युद्ध कर प्रासाद की रक्षा में तत्पर थे।

प्रासाद की एक कोठरी में दुर्जयसिंह के साथ एकाएक तेजसिंह की भेट हुई। दोनों के हाथ में नङ्गी तलवार है, दोनों के शरीर लोहू से तरबतर हैं। तेजसिंह ने कुछ सोच कर कहा—दुर्जयसिंह, चन्दावत ने राठौड़ की वीरता देखी और राठौड़ ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी चन्दावत की वीरता देखली। अब युद्ध करना व्यर्थ है। इस युद्ध में प्राण गवाँना भी निष्फल होगा। यदि आज की लड़ाई में हम लोग अपने को बचा सकेंगे तो भविष्य में महाराना का बहुत कुछ काम निकाल सकेंगे।

दुर्जयसिंह—महाराना का कार्य-साधन राजपूतों का मुख्य कर्तव्य है। किन्तु आज बच निकलने का उपाय ही क्या है?

तेजसिंह ने धीरे से एक झरोखे की ओर उँगली दिखा कर कहा—सुना है, एक राठौड़ का बालक इस झरोखे से कूद कर ख़न्दक में जा गिरा था और फिर तैर कर उसने अपने प्राण बचा लिये थे। राठौड़ बालक ने जो साहस किया था, मैं समझता हूँ, इस समय चन्दावत वीर भी वह कर सकते हैं।

दुर्जयसिंह को बहुत दिनों की पुरानी बात याद हो आई। लज्जा और क्रोध से उनका मुँह लाल हो गया। उनके हाथ की तलवार काँपने लगी। क्रोधान्ध हो उन्होंने लात मार कर झरोखे को तोड़ डाला और बड़े वेग से कूद कर वे ख़न्दक में जा गिरे।

तेजसिंह भी उसी झरोखे से कूद कर ख़न्दक में जा पड़े और दोनों वीर तैर कर ख़न्दक के पार जा लगे। सूर्यमहल शत्रुओं के हाथ चला गया।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौबीसवाँ परिच्छेद

भीमगढ़ का विध्वंस

"क्व गताः पृथिवीपालाः ससैन्यबलवाहनाः ?
प्रमाणसाक्षिणी येषां भूमिरद्यापि तिष्ठति ॥"

महाभारतम् ।

जिस युद्ध-घटना की बात पूर्व परिच्छेद में पाठकगण पढ़ चुके हैं उसके बाद कोई एक महीने तक युद्ध बन्द रहा। भीमगढ़-निवासी राजपूतों ने समझा कि इस साल अब युद्ध न होगा। किन्तु उन लोगों का यह ख़याल शीघ्र ही जाता रहा।

महाराना प्रतापसिंह अक्सर क़िले में न रहते थे। वे थोड़ी सी सेना लेकर पहाड़ के निर्जनस्थान में और जब तब तराई के घने जंगलों में रहते थे। जहाँ तहाँ सेना को छिप कर रहने का आदेश देते और सुयोग पाकर अँधेरी रात में असावधान शत्रु-सेना पर एकाएक आक्रमण करते थे। जब दल के दल मुग़ल-सेना को चारों ओर से एकत्र होते देखते तब वे लोग ऐसे गुप्तस्थान में जा छिपते कि फिर उनका किसी को पता ही न मिलता। क्या दिन, क्या रात, क्या जाड़ा और क्या गरमी, प्रतापसिंह सदा मेवाड़ की रक्षा में तत्पर रहते थे। मेवाड़ में युद्ध की संख्या न रही। किस दिन किस घड़ी किस जगह युद्ध होगा, इसका कुछ ठिकाना न रहा। राजपूतों और यवन-सेना के बीच नित्यप्रति मुठभेड़ हो जाया करती थी। इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकार युद्ध पर युद्ध होता रहा। मेवाड़ पर पूर्णरूप से विजय प्राप्त न हुआ।

कुछ दिन योंहीं बीते। एक दिन, आधी रात के समय, एकाएक दो हज़ार यवन-सैनिकों ने भीमगढ़ पर आक्रमण किया। भीमगढ़ में राज-परिवार है, यह ख़बर किसी तरह उन लोगों को लग गई थी। राजपरिवार को बन्दी करके दिल्ली भेज देने पर उन लोगों के उद्धारार्थ प्रतापसिंह अवश्य ही अधीनता स्वीकार करेंगे;—इसी आशा से मुसलमानों ने आज बड़े समारोह से एकाएक भीमगढ़ को आ घेरा।

इस प्रकार रात में क़िले पर आक्रमण करने का हाल राजपूतों को मालूम न था। इससे दुर्ग-निवासी सबके सब असावधान थे। प्रतापसिंह क़िले में न थे। देवीसिंह भी कई सौ राठौड़-वीरों को साथ ले महाराना की सहायता के लिए उनके साथ साथ बराबर पहाड़ों में घूमते थे। केवल बालक चन्दनसिंह पाँच सौ राठौरों समेत क़िले में था। उस समय तेजसिंह भी उसी दुर्ग में थे। उन्होंने राजपरिवार की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया था। इस कारण वे दुर्ग छोड़ कहीं न जाते थे।

मुसलमानों का एकाएक यह भयङ्कर आक्रमण देख तेजसिंह कुछ चिन्तित हुए। वे कुछ देर तक चुपचाप पंक्तिबद्ध चींटियों की तरह इधर उधर फिरते हुए यवन-सैन्य की ओर देखने लगे। फिर बालक चन्दनसिंह को पुकार कहा—आज दुर्ग की रक्षा होना कठिन सा जान पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इतने थोड़े राजपूतों से दुर्ग की रक्षा हो सकेगी या नहीं, इसमें सन्देह है। ऐसे सन्देहात्मक स्थान में राज-परिवार को रहने देना उचित नहीं। भीमगढ़ से निकल कर बाहर जाने के लिए जंगल के भीतर से एक गुप्त-मार्ग है। उस मार्ग को केवल हम और हमारे विश्वस्त भील जानते हैं, किन्तु वह रास्ता बड़ा ही विकट है। निरापद स्थान में पहुँचते पहुँचते सारी रात बीत जायगी। वीर बालक! अब पाँच सौ राठौड़ राजपूतों को लेकर आज रात भर इस गढ़ की रक्षा करना तुम्हारा काम है।

चन्दनसिंह ने उमँग कहा—आप तो पहले ही इस गढ़ की रक्षा का भार इस दास को दे चुके हैं। दास अवश्य उसका पालन करेगा, सामर्थ्य भर शत्रुओं से लड़ेगा,—जीते जी शत्रुओं को क़िले के भीतर धँसने न देगा। हम लोगों का जीवन, धन, यश, प्रतिष्ठा जो कुछ है सब महाराना का है। महाराना के लिए यह दास आज अपने प्राणों को तुच्छ समझ शत्रुसेना से भीमगढ़ को बचावेगा। आप निश्चिन्त होकर राजपरिवार को निरापद स्थान में ले जाने का प्रबन्ध करें। सूर्योदय होने तक यह दास शत्रुओं को भीमगढ़ के भीतर प्रवेश करने न देगा।

बालक के मुँह से ऐसी वीरता-भरी बात सुन कर तेजसिंह ने प्रसन्न होकर कहा—"चन्दनसिंह! जब तुमने इस काम का भार ग्रहण किया है तब मुझे कोई चिन्ता नहीं।" फिर लम्बी साँस लेकर धीमे स्वर में कहा—हा, जब देवीसिंह लौट कर आवेंगे और पुत्र का संवाद पूछेंगे तब तेजसिंह क्या उत्तर देगा?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेजसिंह अब विलम्ब करना उचित न समझ राजपरिवार को क़िले से बाहर ले जाने की तदबीर में लगे। स्वयं भील का भेस धारण करके वे राजपरिवार को साथ ले उसी जङ्गल के विकट मार्ग से बाहर निकले। उन लोगों को वे कहाँ ले गये, यह पाठकों को पहले ही मालूम हो चुका है।

इधर थोड़ी ही देर में क़िले की दीवार पर मशाल बलती दिखाई देने लगी। घड़ी भर में तीन सौ राठौड़ योद्धा अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर क़िले से बाहर निकले और बड़े ठिकाने के साथ अड्डों पर खड़े होकर शत्रुसेना के आने की प्रतीक्षा करने लगे। जो स्थान बहुत ऊँचे पहाड़ पर था, जिधर के पहाड़ पर का चढ़ना अत्यन्त कष्ट-साध्य था, उसी स्थान को राजपूतों ने लड़ने का अड्डा बनाया और वहीं पर वे शत्रुओं के आने की अपेक्षा करने लगे। राजपूतों की संख्या बहुत थोड़ी थी, किन्तु उनका सहास असाधारण था और हृदय पहाड़ से भी बढ़ कर स्थिर था। बालक चन्दनसिंह आज अलौकिक ज्ञान से ज्ञानी और अलौकिक बल से बलिष्ठ होकर निःशङ्क-हृदय से शत्रुदल के आने की प्रतीक्षा करने लगा। केवल दो सौ योद्धा क़िले के भीतर रहे।

देखते ही देखते यवनसेना, तरङ्ग की तरह, बड़ी तेज़ी से पहाड़ के ऊपर बढ़ चली। उन लोगों के "धरो, मारो" आदि वीरत्व-सूचक युद्धनाद से धरती और आकाश काँप उठा। उस भयङ्कर रात में जैसा घनघोर युद्ध हुआ उसका वर्णन नहीं हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकता। "जैसे होगा, आज दुर्ग को हस्तगत करेंगे और महाराना के परिवार को गिरफ़ार करेंगे"—इस आशा पर मुसलमान सैनिक प्राणों की बाज़ी लगा कर राजपूतों के साथ लड़ने लगे। मुसलमानों की संख्या अधिक थी, किन्तु एक तो पहाड़ पर चढ़ने का एक-मात्र मार्ग था और वह भी संकीर्ण था। इस कारण वे लोग सहसा राजपूत-सेना को चारों ओर से न घेर सके। मुसलमानों की सेना, समुद्र की तरङ्ग की तरह, बार बार राजपूतों के पंक्तिबद्ध सैनिकों पर जा जाकर गिरने लगी, किन्तु राजपूतों के अटल सैनिक—समुद्र के तटस्थ पर्वत-प्राचीर की भाँति—बार बार उस तरङ्ग को प्रतिहत करने लगे। वह तरङ्ग, ऊपर जाने में असमर्थ हो, भहरा भहरा कर नीचे की ओर गिरने लगी।

"महाराना का गौरव, हम लोगों का जीवन, हम लोगों की माता बहिन और कलत्र आदि जितनी गृह-कुटुम्बिनी हैं उनका जातिधर्म, सभी हम लोगों की इन कुटिल कराल करवालों के ऊपर निर्भर हैं।" प्रत्येक राठौड़ वीर मन ही मन यही सोचने लगा और यही सोच कर बड़ी वीरता से असंख्य शत्रुओं के साथ युद्ध करने लगा। जब तक स्वाधीनता-प्रिय योद्धा की नाड़ी में इस विचार के साथ साथ रक्त संचरित होगा तब तक उस योद्धा का संसार में पराजय नहीं हो सकता। यवन-सेना की संख्या अधिक है इससे क्या राजपूत लोग यवनों की अधीनता स्वीकार करेंगे?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन में इस प्रश्न का उदय होते ही हर एक राठौड़ वीर का चेहरा लाल हो उठा, भौंहें चढ़ गईं । किन्तु उन लोगों ने चुपचाप केवल खड्ग-प्रहार के द्वारा इस प्रश्न का समाधान किया ।

सारी रात लड़ाई होती रही । राजपूत योद्धा प्रायः दो सौ से कुछ अधिक सम्मुख-युद्ध में कट मरे । पूरब ओर लालिमा दिखाई दी । इधर असंख्य मुसलमानों ने थोड़े से बचे बचाये राजपूतों पर बड़े वेग से हमला किया । राजपूत भी बहादुरी दिखलाने से बाज़ न आये ।

जब चन्दनसिंह ने कुशल न देखी तब लौट कर क़िले में प्रवेश किया । उसके साथ साथ लगभग ५० राजपूत भी क़िले में लौट आये । उन लोगों के वीर-मद से भरे नेत्र, रक्तलिप्त दीर्घ कलेवर और भयङ्कर चेहरा देख कर यही जान पड़ता था जैसे देवगण असुर-संग्राम में परास्त होकर धीरे धीरे अपने घर लौट आये हों ।

मुसलमान सैनिक कोलाहल करते हुए गढ़ पर चढ़ने और क़िले के भीतर प्रवेश करने की चेष्टा करने लगे । बड़ी झनझनाहट के साथ क़िले का दर्वाज़ा बन्द हुआ । वह इसलिए कि बची हुई थोड़ी सी राजपूत-सेना जीते जी मुसलमानों को क़िले के भीतर न आने देगी और आक्रमणकारी मुसलमानों को क्षत्रियों का असामान्य साहस और बल दिखलावेगी ।

इधर मुसलमान सैनिक रात भर लड़ते लड़ते थक गये थे, इससे उन लोगों का जी चाहता था कि कुछ देर विश्राम कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लें। इसी समय क़िले का द्वार रुद्ध हुआ। उन लोगों ने समझा कि फिर सारा दिन युद्ध करते बीतेगा, तब जाकर कहीं विजय प्राप्त होगा। इससे सेनापति ने सैनिकों को थके-माँदे से देख कर कहा—कोई चिन्ता नहीं, अब तो हम लोगों ने एक तरह से भीमगढ़ को ले ही लिया है। आज ही प्रतापसिंह का परिवार बन्दी होगा। तुम लोग थोड़ा सा विश्राम कर लो।

मुसलमानों को निरुद्यम देख चन्दनसिंह गढ़ पर चढ़ गये। उन्होंने देखा कि लगभग एक हज़ार यवन-सेना क़िले के बाहर, दरवाज़े के सामने, विश्राम कर रही है। वे समझ गये कि अभी युद्ध का अन्त नहीं हुआ है। कुछ ही देर के लिए युद्ध रोका गया है। फिर उन्होंने क़िले के भीतर की ओर मुड़ कर देखा कि केवल दो सौ राठौड़ बच रहे हैं। उस नवयुवक की भौंहें सिकुड़ गईं। चेहरा कुछ फीका सा पड़ गया। चिन्ता ने चित्त को आ घेरा। किन्तु थोड़ी ही देर में उन्होंने कर्तव्य को स्थिर कर लिया। वे मुसकुराते हुए तुरन्त गढ़ से नीचे उतर आये।

क़िले के भीतर जितने योद्धा थे सभी को बुलाकर उन्होंने कहा—वीरबन्धुगण! मेरा जो कर्तव्य था उसको जहाँ तक बना किया। मैंने अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर वह काम किया है जो राजपूतों को करना चाहिए। देखो, सूर्य का उदय हो चुका। अब भी हज़ारों मुसलमान क़िले के बाहर लड़ने के लिए मुस्तैद हैं। क़िले के भीतर केवल हम लोग थोड़े से राजपूत बच गये हैं। इस समय आप लोगों की क्या राय होती है?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक राठौड़ ने कहा—राठौड़ सम्मुख-युद्ध में प्राणत्याग के सिवा दूसरा परामर्श नहीं जानता।

चन्दन—इसके बाद ? इसके बाद हम लोगों की माँ, बहन, और बहू-बेटियों की क्या गति होगी ? वे मुसलमानों की दासी होंगी ! राजपूत-रमणी दिल्ली में दिल बहलाने की चीज़ समझी जायँगी ?

क्रोध से सबके चेहरे लाल हो गये। सबने म्यान से आधी तलवार खींच कर बाहर निकाली। परन्तु कोई कुछ बोला नहीं। किसी किसी ने होंठ हिलाये, होंठों से साफ़ यह अश्राव्य ध्वनि निकली "चितारोहण"। फिर सभी ने एक स्वर से कहा—पुरुषों के लिए रणशय्या और स्त्रियों के लिए चितारोहण, यही दो बातें इस समय के लिए उपयुक्त हैं।

राठौड़ योद्धाओं के मुँह से यह बात सुन कर चन्दनसिंह भीतर गये। वहाँ उनकी माता अन्यान्य राठौड़-रमणियों के साथ बैठी थीं। सुपुत्र ने माता के चरण छूकर प्रणाम किया। माता ने युद्ध का समाचार पूछा।

चन्दनसिंह ने कहा—युद्ध का समाचार अच्छा है। कोई राजपूत-योद्धा युद्ध में एक पग भी पीछे नहीं हटा। मुसलमानों की आधी सेना का सत्यानाश कर हम लोगों ने क़िले के भीतर आकर दरवाज़ा बन्द कर दिया है। सूर्योदय हो गया। क़िला अब भी हमारे हाथ में है।

माता ने प्रसन्न होकर पुत्र को आशीर्वाद दिया। अब पुत्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने धीरे धीरे कहा—"माँ, यदि आज्ञा हो तो मैं कुछ निवेदन करूँ। रात की लड़ाई में लगभग तीन सौ राठौड़ योद्धा बड़ी वीरता के साथ लड़ कर खेत रहे। इस समय क़िले के भीतर दो ढाई सौ से अधिक राठौड़ न होंगे। दुश्मनों की संख्या एक सहस्र से कम नहीं है। कुछ ही देर में वे लोग फिर युद्ध आरम्भ करेंगे—अवशिष्ट बात चन्दनसिंह न कह सके। उनकी आँखों में आँसू उमड़ आये, जिन्हें उस वीर बालक ने अलक्षित भाव से पोंछ डाला।

देवीसिंह की गृहिणी कड़क कर बोलीं—क्या ढाई सौ राजपूत एक हज़ार मुसलमानों के साथ लड़ने में डरते हैं?

चन्दनसिंह ने गम्भीर स्वर से कहा—नहीं माँ, राजपूत जब देवता-दानव के साथ युद्ध करने में नहीं डरते थे तब मनुष्यों से क्या डरेंगे? सभी राठौड़-वीर लड़ने को तैयार हैं। किन्तु युद्ध के पहले राजपूत-स्त्रियों की सम्मान-रक्षा नितान्त आवश्यक है।

चन्दनसिंह की माँ ने हँस कर कहा—बेटे, क्या यही बात कहने के लिए तुम डरते थे? राजपूत-वीर मरना जानते हैं, तो क्या राजपूत स्त्रियाँ मरना नहीं जानतीं? जाओ बेटा, तुम युद्ध के लिए तैयार हो, हम लोग भी अपनी मान-रक्षा के लिए प्रस्तुत हैं।

इसके पश्चात् चन्दनसिंह की माँ ने सब क्षत्राणियों को बुला कर प्रसन्नतापूर्वक कहा—बहनो, आज का दिन हम लोगों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के लिए बड़े उत्सव का है। आज हम लोग अपने जीवन को अग्नि में हवन करके सती होंगी; अपने अपने पति की सुहागिनी बनेंगी। राजपूत-ललनाओं के लिए इससे बढ़ कर सुख और क्या हो सकता है? मुसलमान लोग आँखें खोल कर देखें कि राजपूत लड़ने में कैसे वीर होते हैं और उनकी स्त्रियाँ सम्मान के रक्षार्थ अपने प्राणों को कैसा तुच्छ समझती हैं।

प्रातःकाल की प्रभा में सभी स्त्रियों ने स्नानादि क्रिया समाप्त की और देवताओं का दर्शन-पूजन किया। इसके बाद सबकी सब रेशमी वस्त्र पहन, और भूषण सवाँर कर, राजमन्दिर के द्वार पर एकत्रित हुईं। छोटी बालिका से लेकर वृद्धा तक क़िले के भीतर जितनी स्त्रियाँ थीं सभी आईं। सभी आनन्द से भगवत्-स्मरण और उनका नामोच्चारण करने लगीं। इसके अनन्तर क्षत्रियों के पुरातन धर्मानुसार सभी स्त्रियाँ उल्लासपूर्वक चिता पर जा बैठीं। अग्नि-देव ने थोड़ी ही देर में सबका काम तमाम कर दिया। राजपूत महिलाएँ जब पराजय, अपमान और धर्मनाश अनिवार्य देखती थीं तब इसी प्रकार सतीत्व की रक्षा करती थीं।

उस चिता के चारों ओर दो ढाई सौ राठौड़-वीर चुपचाप खड़े थे। सभी ने चिता को प्रज्वलित होते देखा। सभी ने अपने वज्रोपम हृदय पर हाथ रख कर माता, बहन, और बहू-बेटियों को आग में जलते देखा। उन राठौड़-वीरों को अब प्राणों का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ मोह न रहा; संसार में ममता के लिए कोई ठौर न रहा। सबके सब संसार से निर्मोह हो प्रातःकाल के पवित्र जल में स्नान कर, नित्य नियमानुसार अपने अपने इष्ट देव का यजन-ध्यान करके निश्चिन्त हुए। फिर सभी ने कवच धारण किया, और उसके ऊपर केसरिया कपड़े पहने। सिर पर युद्ध-समयोचित सफ़ेद टोपी पहन कर उस पर तुलसीपत्र रक्खा और गले में शालग्राम को बाँध कर सब प्रकार अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हो सभी ने परस्पर प्रेमालिङ्गन किया। मित्र ने मित्र को, भाई ने भाई को, और पिता ने पुत्र को गले से लगाया। प्राण-त्याग के पहले ही सबने अपने अपने जी का हौसला मिटा लिया।

दो तीन घड़ी दिन चढ़ा होगा। इसी समय बड़ी भनभनाहट के साथ क़िले का फाटक खुला। मुसलमान बड़े तअज्जुब में आये। उन्होंने देखा कि उस दर्वाज़े से, समुद्र की तरङ्ग की भाँति बड़े वेग से, थोड़ी सी, राजपूतसेना आकर हज़ारों मुसलमानों पर एकाएक टूट पड़ी। थोड़ी देर तक दोनों दलों में जो भीषण युद्ध हुआ उसका वर्णन नहीं हो सकता। राजपूतों ने कुछ देर के लिए मुसलमानों को चकित कर दिया। अन्त में वे सब राजपूत वीरगति को प्राप्त हुए और जन्यशून्य भीमगढ़ मुसलमानों के क़ब्ज़े में आया।

इस युद्ध में जो मुसलमान बच गये, उन्हें इन दो सौ राठौड़ राजपूतों की वीरता कभी विस्मृत न हुई।

इस युद्ध के पचास वर्ष पीछे भी कोई कोई बूढ़ा मुसलमान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने बेटे-पोते को भीमगढ़ के विजय की बात, कहानी की तरह, सुनाता था और राठौड़ों की वीरता का बखान करता था ।

पच्चीसवाँ परिच्छेद

वीरत्व में कादरता

"पुरःसरा धामवतां यशोधनं सुदुस्सहं प्राप्य निकायमीदृशम् ।
भवादृशाश्चेदधिकुर्वते रतिं निराश्रया हन्त हता मनस्विता ॥"

किरातार्जुनीयम् ।

जिस दिन भीलों की गुफा में महारानी से कुसुम की भेट हुई थी उस दिन प्रतापसिंह ने एकाएक मुग़लसेना पर आक्रमण करके उसे निःशेष कर देना चाहा था, परन्तु मुग़लों की संख्या कहीं अधिक थी। प्रातःकाल से आधी रात तक महाराना परेशान रहे। युक्ति पर युक्ति लड़ाते रहे परन्तु कृतकार्य न हुए। आखिर विफलप्रयास होकर सेना को साथ ले फिर चवन्द को लौट आये। मुग़ल-सेना क्रमशः भीमचन्द की बस्ती की ओर बढ़ने लगी। महारानी अब उस भिल्ल-गह्वर में रहना उचित न समझ कर अपनी सन्तान तथा कुसुम को साथ ले तपस्विनी के बताये हुए गुप्त स्थान में चली गईं। भीमचन्द की बस्ती में राजपरिवार को न पाकर मुग़ल-सेना चली गई। तब महारानी सुरङ्ग की राह से बाहर निकल कर चवन्द-क़िले में स्वामी के पास आईं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चबन्द-क़िले की रक्षा करना भी अत्यन्त कठिन हो पड़ा। सैन्य की खाद्य-सामग्री दिन दिन घटती जाती थी। सैन्य का बल भी दिन पर दिन क्षीण होता जाता था। क़िले के चारों ओर शत्रु-सेना के शिविर, मेघमाला की तरह, देख पड़ते थे। एक दिन सन्ध्या-समय प्रतापसिंह ने सलाह करने के लिए दुर्ग के समस्त प्रधान योद्धाओं को बुलाया।

प्रतापसिंह के चारों ओर प्रधान प्रधान राजपूत बैठे हैं। किन्तु युद्ध होने के पूर्व जितने प्रधान राजपूत योद्धा कमलमीर के सभागृह में प्रतापसिंह को घेर कर बैठे थे उनमें से कै व्यक्ति अब रह गये हैं ? दैलवारा के झाला-कुलपालक नहीं हैं, बिजली के पवार-कुलपति भी अब इस संसार में नहीं हैं, और अन्यान्य कितने ही राजपूत-कुलपालक प्रधान योद्धा मारे जा चुके हैं।

प्रतापसिंह ने अपने चारों ओर देखा। उनके पुराने साथियों में कितने ही नहीं हैं। कितने ही नये नये बालक क्षत्रिय-कुल-पालकों का आसन ग्रहण कर उपस्थित हुए हैं। पिता की मृत्यु के बाद युद्ध करने को पुत्र सन्नद्ध हैं। ये लोग भी महाराना के लिए प्राण देने को प्रस्तुत हैं। महाराना ने फिर किञ्चित् ग्रीवा को कुञ्चित कर पार्श्व की ओर देखा। पुत्र अमरसिंह पिता के निकट बैठे हैं। उन्होंने जंगल-पहाड़ों में रह कर ही युद्ध-विद्या सीखी है। अमरसिंह अपने पिता के समान योद्धा और विपत्ति में पिता के ही तुल्य सहनशील हैं।

बहुत देर में परामर्श का अध्याय आरम्भ हुआ। नौकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भोजन की सामग्री लाये। सभी के आगे सामान्य भोजन की वस्तुएँ परोसी गईं। सभी साथ मिल कर भोजन करने बैठे। उस समय एक अपूर्व ही शोभा दिखाई दी। मेवाड़ के गौरव के दिनों में जो रीति-भाँति राजसभा की थी वह अब भी बनी है, उसमें कुछ भी न्यूनता नहीं हुई।

सभा में जो सबसे धीर, वीर, साहसी और सम्मानास्पद समझे जाते थे उन्हें महाराना अपने थाल में से कुछ खाने की चीज़ देते थे। वह "दोना" कहा जाता था। प्रतापसिंह आज इस क्षत्रिय-मण्डली में किसे दोना देंगे यह निश्चय करने के लिए उन्होंने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। राना के निकट उनके सुयोग्य पुत्र अमरसिंह बैठे हैं। उन्होंने इस अल्प अवस्था में ही सैकड़ों युद्ध में असाधारण वीरता दिखलाई है। प्रतापसिंह ने पुत्र को पुकार कर कहा—अमरसिंह, इस भयङ्कर विपत्काल में तुम अभी वीरता और धीरता का पाठ पढ़ रहे हो, तथा वीरो-चित कार्य भी कर रहे हो। किन्तु आज हमारे भोजन का भाग लेनेवाला दूसरा ही कोई योद्धा है।

कुछ अन्तर पर दुर्जयसिंह और तेजसिंह को बैठे देख कर महाराना ने कहा—चन्दावत और राठौड़ वीर! धन्य तुम दोनों की वीरता है, और धन्य है तुम्हारी भक्ति-परायणता। तुम दोनों हमारे हित के लिए प्राण देने को उद्यत हो; विपत्ति के समय तुम दोनों ने राज-परिवार को आश्रय दिया है। तुम दोनों ने, दो सहोदर भाइयों के सदृश, साथ मिल कर युद्ध में शत्रुओं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को नीचा दिखाया है। तुम दोनों ही अतुल वीर हो और हमारी विपत्ति के सच्चे साथी हो, किन्तु आज हमारे आगे से भोजन का भाग लेनेवाला वीर और ही कोई है।

सामने प्राचीन योद्धा देवीसिंह बैठे थे। महाराना ने उनको पुकार कर कहा—देवीसिंह ! इस सत्यानाशी युद्ध में तुमने मेरे लिए सर्वस्व खो दिया। तुम्हारी वीरता का, तुम्हारी निश्छल भक्ति का मैं क्या पुरस्कार दूँगा ? इस प्रचण्ड युद्ध के कारण तुमने क़िला खोया, वीर पुत्र खोया और अपने समस्त परिवार के लोगों से हाथ धोया। इस पर भी तुम हाथ में तलवार लिये मेरे साथ जङ्गल-जङ्गल पहाड़-पहाड़ घूमते हो। प्रतापसिंह ने कठिन से कठिन क्लेश सहने का अभ्यास किया है। आज तक कितनी विपत्तियाँ झेली हैं इसकी संख्या नहीं, किन्तु तुम्हारे सदृश स्वामी-धर्मावलम्बी योद्धा की यह दशा देख प्रतापसिंह का वज्रहृदय भी फटा जाता है। वीरवंशभूषण ! मनुष्यों की सामर्थ्य क्या जो तुम्हारी वीरता और साहस का पुरस्कार दे सकें ? आज तुम मेरे भोजन का भाग ग्रहण करके मुझे अनुगृहीत करो।

महाराना की यह हृदय-द्रावक बात सुन कर वृद्ध वीर एकाएक कुछ उत्तर न दे सका। उसके नेत्रों में आँसू भर आये। उसने आँखें पोंछ कर कुछ काँपते हुए स्वर में यों कहना प्रारम्भ किया—महाराना, मेरी अधीरता क्षमा की जाय; मेरे बुढ़ापे की इस कातरोक्ति को आप क्षमा करें, मेरे अनिवार्य अश्रुपात को क्षमा करें। मुझे आशा थी कि इस वृद्ध अवस्था में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेटा चन्दन को क़िले का भार सौंप दूँगा और उसे अपने हाथ का पुराना खड्ग देकर मैं निश्चिन्त भाव से ईश्वर का भजन करूँगा। परन्तु विधाता ने और से और ही कर दिया। मन की बात मन ही में रह गई। अब सोचने से क्या होगा? मैं ईश्वर को बार बार वन्दनापूर्वक इसलिए धन्यवाद देता हूँ कि मेरा पुत्र सम्मुख-युद्ध में वीरता दिखा कर काम आया, उसने जीते जी शत्रु को क़िले के भीतर पैर नहीं रखने दिया और अपने राठौड़-वंश को कलङ्क से बचाया। यह वृद्ध भी जब तक जीता रहेगा महाराना का साथ दे वीरता पर ध्यान रक्खेगा। कायरता का काम करके कभी अपने वीरवंश को कलङ्कित न करेगा।

इसके आगे और कुछ बातचीत नहीं हुई; कोई कुछ नहीं बोला। जितने योद्धा थे सभी के मुँह पर उदासी छा गई, सबकी आँखों में आँसू भर आये। सभी ने चुपचाप जेवनार की। महाराना वहाँ से उठे और जहाँ उनके शिशु और रानी थीं वहाँ गये।

रात बिलकुल अँधेरी है। एक पहाड़ की गुफा के पास आग बल रही है। राना के छोटे छोटे बच्चे उस आग के चारों ओर खेल-कूद कर रहे हैं। कोई थक कर पत्थर के ऊपर नींद में पड़े सो रहे हैं। रानी और कुसुमकुमारी रोटी बना रही हैं। बच्चे सोकर उठते ही खाना माँगेंगे। प्रतापसिंह कुछ देर खड़े होकर दूर से यह दृश्य देखने लगे। उनका हृदय आज सोच से भरा हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुर्ग एक एक कर सब शत्रु के हाथ चले गये हैं । सेना की संख्या दिन पर दिन घट रही है । प्रतापसिंह के पास धन नहीं, अन्न नहीं, राज्य नहीं, राजधानी भी नहीं; उस चबन्द की शिलाराशि के अतिरिक्त पैर रखने का जगह भी नहीं, और चिन्तापूर्ण हृदय में पुत्र-कलत्र को स्थान देने का अवकाश भी नहीं । प्रतापसिंह इन सब क्लेशों को मन में नहीं लाते । इन आपदाओं से उनका हृदय अधीर होनेवाला नहीं । तब आज उनके हृदय में चिन्ता किस बात की है ?

प्रतापसिंह के सोच का यह पहला ही अवसर है । आज तक वे एक से एक कठिन दुःसह दारुण दुःख झेल चुके हैं पर ऐसी गहरी चोट उनके हृदय में कभी न लगी थी । कभी ऐसा संयोग हो गया है कि रानी किसी पर्वत की खोह में रसोई बना कर बच्चों को खिलाने बैठी हैं, इतने में शत्रु के आने की ख़बर पाकर तैयार रसोई पानी छोड़ दूर भाग जाना पड़ा । वहाँ जाकर फिर खाने की सामग्री प्रस्तुत करके ज्यों ही बच्चों के हाथ में दी त्योंही शत्रु के आने का संवाद किसीने दिया; हाथ की रोटी हाथ ही में रही, भूख से रोते हुए बालकों को लेकर वहाँ से भी वे फिर भाग चलीं । यहाँ तक कि अन्त में उस मेवाड़ की अधीश्वरी को मेवाड़ में निःशङ्क होकर रहने को एक भी स्थान बच न रहा । तब उसने भीलों का आश्रय ग्रहण किया; भीलों की सुरक्षित गुफा में रह कर समय बिताया और भीलों के दिये हुए अन्न से ही सन्तान की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्षुधा मिटाई। प्रतापसिंह ने अपने देश-रक्षा-व्रत के पीछे इन सब कष्टों को तुच्छ समझा और इन कष्टों से उनका वीर हृदय कभी कातर नहीं हुआ।

कभी रात में मेवाड़ की महारानी पहाड़ के ऊपर विना छप्पर के स्थान में स्वामी के पास सोई हैं, एकाएक घटा घिर आई और मूसलधार पानी बरसने लगा। सबके कपड़े लत्ते भीग गये। सभी को गीले कपड़े पहने पहने रात बितानी पड़ी। रानी बच्चे को गोद में लेकर रात भर खड़ी रहीं। जिस जगह सोई थीं वहाँ घुटनों पानी आ गया था। जिस चटाई पर सोई थीं उसे वृष्टि की अविरल धारा बहा ले गई। इस क्लेश को भी प्रतापसिंह ने क्लेश नहीं समझा। यह दुस्सह दुःख देख कर भी उनका वीर हृदय विचलित नहीं हुआ।

कभी ऐसा संयोग आ पड़ा कि राज-परिवार सारे दिन भूख-प्यास से व्याकुल हो जंगल-जंगल शत्रु के भय से भागता फिरा, अन्त में साँझ को किसी पर्वत की कन्दरा में आश्रय मिला। उस निर्जन स्थान में खाने की और सामग्री तो कुछ मिली नहीं, थोड़ा सा कसेरू का आटा मिल गया। रानी ने अपने हाथ से उसकी रोटी बना कर छोटे बच्चे को खाने के लिए दी। बच्चा उसे तोड़ कर मुँह में देना ही चाहता था कि एक वनबिलाव उस कन्दरा से निकला और बच्चे के हाथ से रोटी झपट कर ले भागा। बच्चा सारी रात भूखा रह गया, और रोते ही रोते वह माँ की गोद में सो गया। प्रतापसिंह ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसे क्लेश को भी चुपचाप सह लिया। इससे भी उनका वीर हृदय अधीर न हुआ।

किन्तु आज उनका वीर हृदय अधीर हो उठा है। उनके चेहरे पर उदासीनता का चिह्न झलक रहा है।

महाराना को आते देख महारानी रोटी बनाने का कार्य कुसुम को सौंप कर आप स्वामी को आगे से ले आने के लिए उठ धाईं। स्वामी के नेत्रों में आँसू देख महारानी का हृदय काँप उठा। उन्होंने विस्मित होकर विनय-पूर्वक पूछा—यह क्या देखती हूँ? आज महाराज इतने दुखी क्यों? महाराना को इस प्रकार अधीर देख मुसलमान यही कहेंगे कि महाराना युद्ध से घबरा गये, अब विपत्ति उनसे नहीं सही जाती।

प्रतापसिंह—ईश्वर जानते हैं कि प्रतापसिंह न युद्ध की परवा करते, और न संकट में अधीर होते हैं।

रानी—तो क्या इन बाल-बच्चों का कष्ट देख कर आप अधीर हुए हैं? यदि मेवाड़ के एक-मात्र अधिप आप कष्ट सह सकते हैं तो हम लोग क्या कष्ट सहने में अशक्त हैं?

प्रतापसिंह—भगवान् की कृपा से मेरे बाल-बच्चे सुख में हैं, और तुम भी सुख में हो। मैं अपने लिए कुछ भी सोच नहीं करता। ईश्वर ने अब तक हम लोगों को बड़े बड़े सङ्कटों से बचाया है। किन्तु इस सत्यानाशी युद्ध में कितने ही वीरों ने अपने कम-उम्र बेटे-बेटियों को खोया है; बेटा अमरसिंह के समान साहसी शूर पुत्रों को खोया है और सती साध्वी स्त्रियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा परिवार के अन्यान्य लोगों को खोया है। इस भीषण संहारकारी युद्ध में अनेकों का बसा हुआ घर उजड़ गया है। उन लोगों के लिए यह संसार शून्य सा हो रहा है।

रानी—ईश्वर उन लोगों को शान्ति दें। मनुष्यों के लिए सचमुच यह शोक असह्य है।

प्रतापसिंह—मेरे कामों के पीछे देवीसिंह नामक एक राठौड़ वीर के सिर के बाल सफ़ेद हुए हैं, राठौड़ योद्धाओं में अभी उनसे बढ़ कर कोई वीर नहीं है। मुसलमानों ने इस समय उनका क़िला ले लिया है। उनके घर में छोटी बड़ी जितनी स्त्रियाँ थीं सब सती हो गईं। उनका एक-मात्र वीर पुत्र युद्ध में यवनों के हाथ मारा गया। देवीसिंह इसी आशा से अब तक जीवित हैं कि स्वामी का धर्म-पालन करते हुए देश-रक्षा के कामों में कब देह त्याग करेंगे।

यह समाचार सुनते ही रानी की आँखों से झर झर कर आँसू गिरने लगे। वे रोते रोते बोलीं—आपने क्या कहा? देवीसिंह के परिवार के सभी लोग लुप्त हो गये? देवीसिंह ने अपने एकलौते वीर पुत्र को भी खो दिया? हा दैव! देवीसिंह को तुमने बड़ी यन्त्रणा दी। पुत्र-शोक से बढ़कर कठिन शोक तुम्हारी सृष्टि में नहीं है। क्या उस वृद्ध के लिए इस संसार में दूसरा शोक न था? विधि का करतब कुछ जाना नहीं जाता!

प्रतापसिंह—उनका वीर पुत्र गया, परिवार गया, धन गया, क़िला गया, वंश का विनाश हुआ, इस पर भी उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वृद्ध ने आज धीरज धर कर मुझसे कहा,—"भगवान् को नमस्कार करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ, जिनकी कृपा से मेरे पुत्र ने वंश को कलङ्क से बचा कर वीर गति पाई है; यह वृद्ध भी महाराना के कामों में कभी अधीरता दिखा कर अपने नाम को कलङ्कित न करेगा।" हाय! इस प्रकार स्वामि-धर्म-पालन का क्या यही पुरस्कार है? वीर अनुगामियों को इस तरह नष्ट करके मेवाड़ की रक्षा का फल ही क्या?

रानी आँसू-भरी आँखों से सन्तान को खिलाने बैठी। प्रतापसिंह मारे चिन्ता के व्यग्र थे। उन्होंने अपने मन को अनेक प्रकार से समझाया बुझाया, पर उन्हें शान्ति न मिली। वे बहुत देर में बोले—यदि राज्य-प्राप्ति का फल यही दुःसह दुरन्त यन्त्रणा है तो प्रतापसिंह ऐसा राज्य नहीं चाहता। राज्य का मैं कभी नाम न लूँगा।

दूसरे दिन महाराना ने अकबरशाह के निकट सन्धि के लिए पत्र भेजा।

छब्बीसवाँ परिच्छेद

अपवित्रों के बीच पवित्रता

"किमपेक्ष्य फलं पयोधरान् ध्वनतः प्रार्थयते मृगाधिपः।
प्रकृतिः खलु सा महीयसः सहते नान्यसमुन्नतिं यथा॥"

किरातार्जुनीयम्।

एक दिन सन्ध्या-समय फिर प्रतापसिंह ने योद्धाओं को एकत्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया। राठौड़, चौहान, पवाँर, झाला, चन्दावत, संगावत और जगावत प्रभृत्ति प्रधान कुलपालक क्षत्रियवीर उपस्थित हुए। इन लोगों ने बाल्यकाल से ही युद्ध करने की शिक्षा पाई है। वे लोग अनेकानेक युद्धों में अपनी अपनी वीरता और अपने अपने वंश का गौरव प्रकट कर चुके हैं, किन्तु आज की सभा में सभी चुप साधे बैठे हैं।

प्रतापसिंह ने अकबर को जो पत्र लिखा था उसकी चर्चा सभास्थित योद्धाओं से की। अकबरशाह अवश्य ही सन्धि स्वीकार करेंगे, किन्तु सिसोदिया क्या अधीनता स्वीकार कर के सन्धि का पालन करेंगे ? प्रतापसिंह ने यही बात उन लोगों से पूछी है। इस क्षत्रिय-मण्डली में ऐसा कोई नहीं जो इस प्रश्न का उत्तर दे सके। सारी सभा निस्तब्ध है।

जितने दिनों तक युद्ध साध्य था, हुआ, किन्तु अब मेवाड़ प्रदेश का कोई पहाड़ या पहाड़ की तराई अथवा कोई क़िला सुरक्षित रखना दुःसाध्य है। शत्रुओं ने अनगिनित नई सेना लाकर मेवाड़ के प्रायः प्रत्येक स्थान को ढक लिया है; हर एक क़िले को हस्तगत कर लिया है। चारों ओर से मेवाड़ को घेर लिया है और जिधर हम लोगों के रहने का पता लगता है उधर ही शत्रुसेना अग्रसर होती है। बचाव का एक-मात्र उपाय है युद्ध, किन्तु प्रतापसिंह अब क्या लेकर युद्ध करें ? मेवाड़ में अब न सेना है और न सेना के खाने के लिए अन्न है। कोष में द्रव्य नहीं, ऐसा क़िला भी नहीं जहाँ जा कर त्राण पावें,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और अब रहने तक को स्थान नहीं । एक चवन्द का क़िला बच रहा है, किन्तु यहाँ रहने से राना अब शीघ्र ही शत्रु के हाथ बन्दी होंगे । वीरगण बन्दी होने का परामर्श दे ही नहीं सकते; अम्बर और मारवाड़ के राजाओं की तरह मुसलमानों की अधीनता स्वीकार करके रहने की सलाह दे ही नहीं सकते, तो फिर अधीनता स्वीकार कर सन्धि-स्थापन करने के सिवा और उपाय ही क्या है ?

जिन्होंने स्वाधीनता के लिए अब तक पर्वत और घाटियों में अनेक बार युद्ध किया है, राजपूतों के शोणित से मेवाड़ की भूमि को रक्त-पङ्किल किया है, और महल-अटारियों को छोड़ गुफा में जाकर निवास किया है; जिन्होंने अपने इष्ट-साधन के पीछे न दिन को दिन गिना है और न रात को रात, जबजो क्लेश सामने आया उसे सह लिया है, विपत्ति पर विपत्ति झेली है, क्या वे स्वाधीनता को त्याग देंगे ? मानसिंह प्रभृति कितने ही राजा म्लेच्छ के जिन चरणों के आश्रित हो कर अपना सौभाग्य मानते हैं, उन्हीं चरणों के निकट क्या महाराना का निष्कलङ्क वंश भी अपना उन्नत मस्तक झुकावेगा ? क्या अब इतने दिनों पीछे बाप्पाराव का वंश मुसलमानों का दासत्व स्वीकार करेगा ?

राजपूत वीरो ! अब क्या करना चाहिए ? अधीनता स्वीकार करने के अतिरिक्त और क्या उपाय है ? सभास्थित सभी वीर-पुङ्गव चुप हैं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"आज दासत्व स्वीकार कर लेने से कल फिर स्वाधीन होना असम्भव नहीं है। मान लीजिए, अकबरशाह बड़ा बहादुर और अक्लमन्द है, किन्तु अकबर के मरने पर क्या उसका उत्तराधिकारी भी वैसा ही बलवान् होगा ? सम्भव है, वैसा न भी हो। उस अवस्था में मेवाड़ फिर स्वाधीन हो सकता है। किन्तु इस समय सिसोदिया-वंश एक-दम नष्ट हो जायगा तो फिर संसार में इसका नाम न रहेगा।" किसी किसी के मन में इस तरह की भावना होने लगी।

इस प्रकार सब लोग सोच विचार कर ही रहे थे, इतने में एक दूत ने पत्र लाकर महाराना के सामने रख दिया। महाराना ने देखा, बीकानेर के राजा के छोटे भाई पृथ्वीराज ने यह चिट्ठी लिखी है। पत्र में और कुछ नहीं, केवल कविता है। उस समय रजवाड़ों में पृथ्वीराज के समान सुकवि कोई दूसरा न था।

बीकानेर दिल्ली के अधीन था। पृथ्वीराय बराबर दिल्ली में रहते थे। फिर भी प्रतापसिंह की वीरता सुन कर वे बहुत प्रसन्न होते थे। मेवाड़ की स्वाधीनता का स्मरण करके वे अपना अपमान भूल जाते थे। वे मन ही मन प्रतापसिंह की पूजा करते थे। उन दिनों क्या हिन्दू क्या मुसलमान सभी मेवाड़पति को पूज्यदृष्टि से देखते थे। सब लोग उनकी वीरता और उद्देश की मन ही मन प्रशंसा करते थे।

प्रतापसिंह का सन्धिविषयक पत्र पाकर अकबरशाह बेहद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

.खुश हुआ। "प्रतापसिंह सा प्रबल शत्रु उनका भारतवर्ष भर में दूसरा न था ! उसी प्रताप ने हार कर आज सन्धि का प्रस्ताव भेजा है। अब वह मेरी अधीनता स्वीकार करेगा, इससे बढ़कर आनन्द का विषय और क्या होगा ?" इस तरह अनेक बातें सोच कर अकबर का दिल मारे .खुशी के फड़क उठा। दिल्ली में बड़ी धूमधाम से इस .खुशखबरी का उत्सव मनाया गया। भाँति भाँति के बाजे बजने लगे। इस तरह उत्सव होते देख पृथ्वीराज को बड़ा क्रोध हुआ। उन्होंने बादशाह से जाकर कहा —यह पत्र प्रताप का लिखा नहीं है। प्रताप के किसी दुश्मन ने उनके गौरव को दूषित करने के लिए इस पत्र की सृष्टि की है। इसे आप जाल समझें। जहाँपनाह ! मैं प्रतापसिंह को भलीभाँति जानता हूँ। वे अपना राज्य पाने के लिए अधीनता स्वीकार करें यह असम्भव सा जान पड़ता है। वे अपनी गौरव-रक्षा के नितान्त पक्षपाती हैं।

फिर पृथ्वीराज ने जो मार्मिक कविता से भरी हुई एक चिट्ठी प्रतापसिंह को लिखी, वही चिट्ठी आज रात की सभा में प्रतापसिंह को मिली और वे बड़े ध्यान से पृथ्वीराज की कविता पढ़ने लगे। कविता का आशय यह था—

"जो सच्चे हिन्दू हैं उन्हीं पर हिन्दुओं का हिन्दुत्व अवलम्बित है। समस्त हिन्दू जाति ने एक राना के ऊपर अपने आशा-भरोसे को छोड़ रक्खा है। क्या प्रतापसिंह हिन्दुओं की आशा को निर्मूल कर देंगे ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"रजवाड़ों में प्रताप का ही सिर ऊँचा है। प्रताप का सिर झुकते ही भारत की भूमि समतल हो जायगी। भारत से राजपूतों का गौरव उठ सा गया है। कारण यह कि हम लोगों की सेना ने साहस खो दिया है और स्त्रियों ने धर्म का विचार उठा दिया है। अकबर हम लोगों के अनमोल जातिधर्म का ग्राहक बन बैठा है।

"नौरोज़ के लिए कौन सच्चा राजपूत अपनी मर्यादा बेंच सकता है? तथापि कितने ही सम्भ्रान्त राजपूतों ने बेची है।

"क्या चित्तौर भी उन्हीं सौदागरों के दल में आ मिलेगा? प्रताप ने अपनी सारी सम्पत्ति गवाँ दी है, किन्तु अब भी उनके पास एक अमूल्य रत्न बच रहा है।

"वंश की प्रतिष्ठा बेच कर आज तक किसीने कुछ नफ़ा नहीं उठाया। नफ़ा कुछ मिला तो अपमान-मात्र।

"हम्मीरदेव के वंशज केवल इस कलङ्क और इस अपमान से अब तक बचे हैं।

"सब लोग चकित होकर पूछते हैं कि प्रतापसिंह छिपे छिपे कहाँ से इतनी सहायता पाते हैं?

"उनकी वीरता और उनका खड्ग ही उनके सहायक हैं। उन्हीं दोनों की सहायता से उन्होंने क्षात्र-धर्म की रक्षा की है।

"संसार में कोई अमर होकर रहने के लिए नहीं आया है, एक दिन हम लोगों के धर्म का गाहक भी संसार से चल बसेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्षत्रिय-धर्म का बीज प्रताप ही रक्खें तो रहे । सब लोगों की आशा ऐसी ही है ।

"अन्तिम निवेदन यही है कि क्षत्रियवंश की पवित्रता निःशेष न होने पावे । वह फिर से देदीप्यमान हो।"

प्रतापसिंह ने एक दो बार नहीं तीन बार यह कविता पढ़ी । आखिर वे गरज कर बोले—वीरगण, चारों ओर अपवित्रता की तेज़ धार बह रही है, जैसे होगा उस अपवित्रता की धार में प्रतापसिंह क्षत्रियवंश को पवित्र रक्खेगा । मेवाड़ में यदि हम लोगों को रहने की जगह न मिलेगी तो मरुभूमि में जा बसेंगे। किसी अन्य देश में जाकर आश्रय लेंगे किन्तु सिसोदिया-वंश को कलुषित न होने देंगे ।

सत्ताईसवाँ परिच्छेद

देवीर का युद्ध

"तेषां निहन्यमानानां सुघुष्टैः कर्णभेदिभिः ।
अभूदभ्यमितत्रासमास्वान्ताशेषदिग् जगत् ॥"

भट्टिकाव्यम् ।

प्रतापसिंह ने जब स्वाधीनता की रक्षा का कोई उपाय न देखा तब देशत्याग करने को प्रस्तुत हुए । मेवाड़ में अब सिसोदिया-वंशधरों के रहने को स्थान नहीं । वे लोग सिन्धु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नद के किनारे जाकर नई सलतनत जमावेंगे परन्तु मुसलमानों की अधीनता क़बूल न करेंगे ।

प्रतापसिंह ने और मेवाड़ के प्रधान प्रधान क्षत्रिय-वंश-पालक वीरों ने कुटुम्बी लोगों और सैन्यों को साथ ले मेवाड़ से प्रस्थान किया । मेवाड़ परित्याग कर सब लोग अर्वली पहाड़ उतर आये । मरुभूमि के एक प्रान्त में पहुँच कर सभी लोग विश्राम कर रहे थे । सामने पच्छिम तरफ़, साँझ के समय, मरुभूमि का बालुकामय मैदान चमचमा रहा था । पीछे की ओर अर्वली पहाड़ और मेवाड़ देश अपनी उदासी दिखला रहे थे । योद्धा लोग उस ओर देख देख कर दुखी हो रहे थे । सूर्यास्त हो गया है, रात भर ये लोग यहाँ विश्राम करेंगे और कल सबेरे जब आगे बढ़ेंगे तब अपना देश इन लोगों की दृष्टि से बाहर हो जायगा,—यह पर्वतमाला फिर दिखाई न देगी । जिस प्रदेश में सिसोदियावंशी राजपूत कई शताब्दियों से रहते आये हैं, जिस देश में समरसिंह और संग्रामसिंह आदि प्रातः-स्मरणीय भूप राज्य कर चुके हैं, वह देश अब सदा के लिए दृष्टिपथ से बाहर होगा ! मेवाड़ का प्रत्येक पहाड़, क़िला, घाटी और अन्यान्य स्थान योद्धाओं की आँखों के सामने नाच रहे थे । मेवाड़ के जिस मैदान में, जिस तराई में, पूर्वजों ने युद्ध करके विजय प्राप्त किया था, जिन पहाड़ों पर प्रतापसिंह ने बार बार युद्ध करके रक्त की धारा बहाई है, वे सब पहाड़ अब योद्धाओं के हृदय में चित्रवत् प्रतिबिम्बित हो रहे हैं । सभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजपूत वीर चुप हैं, शोक से सभी का मन व्याकुल हो रहा है। सभी चुपचाप उसी यशोराशिरञ्जित अर्वली पहाड़ की ओर टकटकी बाँधे देख रहे हैं। हरेक शिविर में राजपूतों की स्त्रियाँ छोटे छोटे बच्चे को अपनी गोद में लेकर अर्वली पहाड़ दिखला रही हैं।

"सिसोदिया-वंश निर्वासित हुआ। मेवाड़ में अब हम लोगों के रहने को जगह नहीं"—प्रतापसिंह बड़ी उदासीनता से यह बात बोले। उनकी यह बात सुन कर समस्त राजपूत-मण्डली चुप हो रही; किन्तु उस मण्डली में सुधा से सना हुआ एक मधुर स्वर सुना गया—"अब मेवाड़ में सिसोदियों के रहने को स्थान है। अब भी युद्ध का बहुत कुछ उपाय है।"

सभी ने विस्मित होकर उस ओर दृष्टि डाली। देखा, यह अमृतमय वाक्य बोलनेवाले वृद्ध राजमन्त्री भामाशाह हैं। ये लोग वंशपरम्परा से मेवाड़ में मन्त्रित्व का काम करते आये हैं।

भामाशाह कई महीनों से प्रतापसिंह के पास न थे। प्रतापसिंह जब युद्ध में उलझे थे तब भामाशाह युद्ध के ख़र्च के लिए धन इकट्ठा कर रहे थे। एकाएक उन्होंने सुना—"प्रतापसिंह और समस्त सिसोदिया राजपूत देशत्यागी हो रहे हैं और अर्वली पहाड़ को लाँघकर मरुभूमि की ओर जा रहे हैं।" तब वृद्ध मन्त्री बड़ी तेज़ी से उन लोगों की खोज में चले। आज वे प्रतापसिंह के शिविर में उपस्थित हुए हैं। सभा में पहुँचते ही उन्होंने काँपते हुए स्वर से यह बात कही—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब भी मेवाड़ में सिसोदियों के रहने को स्थान है । अब भी युद्ध का बहुत कुछ उपाय है ।

प्रतापसिंह चौंक उठे । उन्होंने एक नई आशा और उत्साह के साथ पूछा—दीवान साहब, आपका वचन कभी व्यर्थ नहीं हो सकता, किन्तु युद्ध का और उपाय क्या है यह मुझे नहीं सूझता । आप बता दीजिए ।

वृद्ध मन्त्री ने हाथ जोड़ कर विनयपूर्वक निवेदन किया—इस दास ने बहुत दिनों तक मन्त्रित्व किया है । दास के बाप दादे परदादे सभी वंशानुगत मन्त्रित्व का पद पाते गये और मेवाड़ का राज्य-सम्बन्धी काम करते रहे हैं । उस प्रतिष्ठित पद की बदौलत परम्परा से जो धन सञ्चित हुआ है वह अब भी ज्यों का त्यों अमानत रक्खा है । उस धन से पचीस हज़ार सेना का भरण-पोषण बारह वर्ष तक भली भाँति हो सकता है । हुक्म हो तो दास वह धन श्रीचरणों में अर्पित करे ।

विपत्ति के समय पुराने विश्वस्त कर्मचारी की ऐसी निष्कपट प्रभुभक्ति देख कर प्रतापसिंह की आँखों में जल भर आया । उन्होंने उस जल को धीरे धीरे पोंछ कर कहा—आपकी इस निश्छल भक्ति से मैं परितुष्ट हुआ । किन्तु राज से जो धन दे दिया गया उसे फिर मैं कैसे लूँगा ? प्रतापसिंह के पास आज कुछ नहीं है तो भी वह अपने आश्रितों का धन लेने में असमर्थ है ।

भामाशाह—महाराना, यह दास प्रभु को धन नहीं देता; देश-रक्षा के लिए मेवाड़ को देता है । जन्मभूमि के लिए मेवाड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की एक अयोग्य सन्तान और उपकार कर ही क्या सकती है ? सिसोदियों के धन, जन, प्राण सभी मेवाड़ के लिए ही हैं । महाराना से क्या यह बात छिपी है ? मेवाड़ के लिए जब आप लोग शोणित दे रहे हैं तब मैं तुच्छ धन देने में क्यों कुण्ठित होऊँ ?

प्रतापसिंह—आपकी युक्ति अखण्डनीय है । आपकी यह उदारता और देशभक्ति बड़े महत्त्व की है । आपके वचन को मैंने सिर चढ़ाया । आपका दिया हुआ धन देश के रक्षार्थ मैं लूँगा और उस धन से एक बार और उद्यम करूँगा । देखूँगा, मेवाड़ का उद्धार होता है या नहीं ?

प्रतापसिंह फिर अपनी समस्त राजपूतमण्डली को साथ ले अर्वली पहाड़ को अतिक्रम कर मेवाड़ लौट आये । उस प्रचुर धन की सहायता से उन्होंने फिर मेवाड़ के उद्धार का उद्यम किया ।

उस उद्यम का फल इतिहासों में लिखा है । देवीर के युद्धक्षेत्र में प्रतापसिंह का नाम अब तक अङ्कित है । शहबाज़ख़ाँ सैन्य-सहित देवीर में डेरा डाले पड़ा था । यह जान कर वह निश्चिन्त था कि प्रतापसिंह देश-त्याग कर भाग गये हैं । एकाएक आँधी की तरह प्रतापसिंह की सेना ने चारों ओर से देवीर को आ घेरा । देवीर की रणभूमि में शहबाज़ख़ाँ सेना सहित मारा गया ।

आँधी बड़े वेग से बह चली । अमायत पर्वत का क़िला हस्तगत हुआ । वहाँ का दुर्गरक्षक मुसलमान मारा गया ।

आँधी ने और भयङ्कर रूप धारण किया । कमलमीर-क़िला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर महाराना के अधिकार में आया। उस क़िले का रक्षक अबदुल्ला सेना सहित हत हुआ।

आँधी का ज़ोर यहाँ तक बढ़ा कि चित्तौर, अजमेर और मण्डलगढ़ को छोड़ समस्त मेवाड़ फिर प्रतापसिंह के हाथ आया। भय से भागे हुए यवनदूत ने दिल्ली जाकर अकबर-शाह को ख़बर दी कि दस वर्ष के असाधारण परिश्रम और अर्थव्यय से बादशाह ने मेवाड़ में जो विजय लाभ किया था वह प्रतापसिंह के सिर्फ़ एक वर्ष के उद्यम से जाता रहा।

आँधी का वेग इतना प्रबल हो उठा कि प्रतापसिंह ने मेवाड़ को हस्तगत कर अपने प्रधान शत्रु मानसिंह के अम्बर प्रदेश पर आक्रमण किया। उनके देश को तहस-नहस कर मल्लपुर नामक प्रधान नगर को, जो तिजारत के लिए मशहूर था, लूट लिया।

इतिहास-सम्बन्धी बातों का यहाँ विशेष उल्लेख न कर अब हम उपन्यास से सम्बन्ध रखनेवाली बातों का ही वर्णन करेंगे। राजपूतों ने फिर सूर्यमहल पर आक्रमण किया। उस दुर्ग पर आक्रमण के समय तेजसिंह और दुर्जयसिंह दोनों, दो सहोदर भाइयों के समान, परस्पर मिल कर शत्रुओं से युद्ध करने लगे। चन्दावत और राठौड़ दोनों अपनी वीरता बढ़ कर दिखलाने के लिए उत्तेजनापूर्वक यवनसेना से जूझने लगे। उन चन्दावत और राठौड़ राजपूतों की वीरता के सामने मुसलमान ठहर नहीं सके। मुसलमान सेना क्रमशः पीछे हटने लगी।

शत्रुदल में एक ओर से तेजसिंह और दूसरी ओर से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुर्जयसिंह घुसे । दोनों वीर क़िले में पहले प्रवेश करने की इच्छा से असाधारण वीरता के साथ शत्रुसेना को हटा कर अग्रसर होने लगे । संयोगवश पहले तेजसिंह ही ने क़िले में प्रवेश किया । कुछ ही देर बाद चन्दावत भी तलवार की मार से दुश्मनों को दूर भगा कर क़िले के भीतर आये ।

तब तेजसिंह ने पुराने शत्रु (दुर्जयसिंह) को लक्ष्य करके कहा—क़िलाधीश, हम आपकी अनुमति लिये विना ही आपके क़िले में पहले आ गये, यह हमारा अपराध आप क्षमा करें । केवल महाराना के काम का ख़याल करके हमने ऐसा किया है । अब आप अपने क़िले को अपने अधिकार में लें । हमें आज्ञा दी जाय, हम क़िले से बाहर हो जायँ ।

तेजसिंह की इस बात ने दुर्जयसिंह के हृदय को मथ डाला । वे ग्लानि से अधमरे होकर बोले—राठौड़ तेजसिंह ! संयोग से पहले तुम्हीं ने क़िले में प्रवेश किया है । यही सही, तुम अपने साथी राठौड़ों को लेकर क़िले की रक्षा करो । मैं तुमसे भिक्षा नहीं लेना चाहता । मैं अभी अपनी सेना साथ ले क़िले से बाहर जाता हूँ । तुम क़िले का द्वार बन्द कर दो । यदि चन्दावत की तलवार में शक्ति होगी तो वह लड़ कर क़िले को हस्तगत कर लेगा ।

तेजसिंह ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया—हम महाराना के काम से आपके क़िले में आये हैं, इस अवसर पर यदि हम आपका क़िला ले लें तो विश्वासघात होगा । राठौड़ विश्वास-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घात करना नहीं जानते। अब भी विदेशीय वैरी के साथ युद्ध की समाप्ति नहीं हुई है। अभी हम लोगों को आपस में लड़ना उचित नहीं। जब विदेशीय युद्ध ख़तम होगा तब राठौड़ सूर्यमहल लेने में विलम्ब न करेंगे।

तेजसिंह अपनी राठौड़ सेना को लेकर धीरे धीरे क़िले से चले गये। दुर्जयसिंह की आँखें क्रोध से लाल हो गईं। वे आरक्त नयनों से तेजसिंह की ओर देखते रहे।

इस घटना के कई एक दिनों के अनन्तर भीमगढ़ क़िले का उद्धार हुआ। किन्तु बूढ़े देवीसिंह ने क़िले के भीतर प्रवेश कर क्या देखा? कुछ नहीं। उनके परिवार के जितने प्रिय व्यक्ति थे वे यवन-युद्ध में और चिता की प्रज्वलित अग्नि में पहले ही भस्मसात् हो चुके हैं।

देवीसिंह उस युद्धस्थल में कुछ देर तक खड़े रहे। वे मन ही मन न मालूम क्या सोच रहे थे। भोर का समय है। सूर्य की स्निग्ध किरण उनके मुख-मण्डल पर पड़ रही है। प्रातः-कालिक पवन मानों उनके सफ़ेद बालों के साथ खेल रहा है। समय सुहावना है, किन्तु इस दुःखमय संसार में पुत्र-शोक से बढ़कर और क्या शोक हो सकता है? देवीसिंह वीर हैं, धीर हैं, किन्तु हैं तो फिर मनुष्य ही।

तेजसिंह धीरे धीरे उनके पास आये और बोले—आप मेरे पिता के पुराने दोस्त हैं। आपको मैं क्या समझाऊँगा? मैं आपको सान्त्वना देने योग्य नहीं। मैं आपसे केवल यही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक बात पूछता हूँ कि राजपूत का वीरबालक महाराना के लिए सम्मुख-युद्ध में वीरगति को पहुँचा है, उसके लिए क्या राजपूत पिता अधीर हो सकता है ?

देवीसिंह ने लम्बी साँस लेकर कहा—राजपूत का धन, मान, जीवन, बन्धु, परिवार आदि जितने हैं सब महाराना के हैं। महाराना के कामों में बेटा चन्दनसिंह ने अपना प्राण दे दिया, इसका सोच नहीं है। शोच है इस बात का कि युद्ध में वृद्ध को छोड़ बच्चे को मौत क्यों ले गई ? वृद्ध जीता है, बच्चा चल बसा, केवल यही सोच रहा हूँ। बेटा चन्दन ! तू बूढ़े बाप को क्यों न लेता गया ?

उस बूढ़े के मुँह पर कुछ देर के लिए अधीरता का चिह्न देख पड़ा। शोक ने उसके हृदय को टुकड़े टुकड़े कर डाला। उसकी आँखों से झर झर कर आँसू गिरने लगे।

तेजसिंह ने देखा, देवीसिंह साधारण दुःख से दुखी होने-वाले नहीं हैं। तेजसिंह उस दुःख की भी दवा जानते थे। उन्होंने देवीसिंह का दहना हाथ अपने माथे पर रखकर कहा—आप मेरे धर्म के पिता हैं, आपने एक पुत्र को खोया है, पर एक पुत्र अब भी आपका जीवित है। पिता से तेजसिंह आशीर्वाद की प्रार्थना करता है। पिताजी पुत्र को आशीर्वाद दें।

देवीसिंह—जगदीश्वर तुमको सुखी रक्खें, फिर तुम्हें पिता की राजगद्दी पर बिठावें।

तेजसिंह—देवीसिंह की सहायता बिना तेजसिंह को पिता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का क़िला कैसे मिल सकता है? राठौड़वीर! आपने पिता को सूर्यमहल की राजगद्दी पर बैठते देखा है। क्या आज उनके पुत्र की सहायता न कीजिएगा?

देवीसिंह ने धीरे धीरे अपनी आँखों के आँसू पोंछे। अधीरता उनके मन से जाती रही। उनके हृदय में फिर वीर-रस का संचार हो आया। उन्होंने ज़ोर से तलवार को हाथ में ले कर कहा—देवीसिंह के जीवन का एक और उद्देश रह गया है। देवीसिंह को अपनी प्रतिज्ञा की बात याद है।

अट्ठाईसवाँ परिच्छेद

निर्मल आकाश में काली घटा

"जगज्जीर्णारण्यं कथमसि विधातुं व्यवसितः।"

एक दिन साँझ को तेजसिंह भीलों के सर्दार भीमचन्द को देखने के लिए जा रहे थे। ऐसे समय उन्होंने सरोवर के किनारे उस भील-बालिका को देखा। उसका स्वभाव अब भी वैसा ही चञ्चल है। वह हँसते हँसते तेजसिंह के निकट आकर यह गीत गाने लगी—

"गई थी भोर को उस बाग में क्या देख आई मैं।
कहूँ क्या जो सुना मैंने वहाँ जो देख आई मैं।"

तेजसिंह—तुमने क्या देखा? क्या सुना?

बालिका—यही, सुनो न—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"खिला था फूल बेला का निरन्तर देख आई मैं ।
लुभाया गन्ध से जिसने मधुप को देख आई मैं ॥"

तेजसिंह—यही देखा कि और कुछ ?

बालिका—हाँ, हाँ, और भी—

'मधुप का गान सुन मीठा उमँग कर देख आई मैं ।
कहा उस फूल ने 'तुम हो हमारे' देख आई मैं ॥"

तेजसिंह ने हँसेते हँसते कहा—तू बड़ी दुष्टा है । तेरे गीत का मतलब मैं समझ गया । अच्छा, बतला तो उस फूल का नाम क्या है ?

"क्या मैं फूल का नाम नहीं जानती ? फूल का नाम है 'कुसुम'—"यह कह कर बालिका फिर गाने लगी ।—

"भ्रमर जित तित फिरा करता पवन-रस फूल का लेता ।
फँसा कर फूल अन्धे को वृथा परिताप क्यों देता ॥
गई थी भोर को उपवन चकित हो देख आई मैं ।
कहूँ क्या जो सुना मैंने वहाँ जो देख आई मैं ॥

तेजसिंह का चेहरा उतर गया । उन्होंने क्रोध से बालिका का हाथ पकड़ कर कहा—तू यदि मर्द होती तो मैं तेरी इस चपलता का पूरा दण्ड देता ।

बालिका—मैंने क्या अपराध किया है ? मुझे छोड़ दो, अब मैं यह गीत न गाऊँगी । मुझे क्या मालूम था कि मेरा गीत सुन कर तुम क्रोध करोगे ?

तेजसिंह—तू बड़ी पापात्मा है ! तूने किस मतलब से यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गीत गाया है ? यदि तू कुसुम की झूठ निन्दा करेगी तो अपने हाथ से मैं तुझे सज़ा दूँगा ।

बालिका—मैं कुसुम के विषय में कुछ नहीं जानती । मुझे क्या मालूम कुसुम कौन है ? मैं दरिद्र भील की बेटी हूँ । मैं वन में फिरती हूँ । फूल तोड़ती हूँ, फूल का गीत गाती हूँ । मैं दूसरे फूल का हाल क्या जानूँ ? मुझे छोड़ दो ।

बालिका क्या यथार्थ ही में बालिका है ? क्या सचमुच वह प्राकृत फूल का ही गीत गाती थी ? तेजसिंह कुछ निश्चय न कर सके । उन्होंने धीरे धीरे मस्तक का पसीना पोंछ कर सोचा—मैंने वृथा इस पर क्रोध किया है । उन्होंने बालिका का हाथ छोड़ कर कहा—नहीं नहीं, मैं अब तुझ पर क्रोध न करूँगा । तू एक गीत और गा ।

बालिका ने इस बार हँसते हुए ताली बजाकर गाया—

"कहूँ इक बात मैं तुमसे नई सुन ख़ुश न होगे क्या ?
बनेगा व्याह किससे फूल का सो जान लोगे क्या ।।

तेजसिंह—किसके साथ व्याह होगा ?

बालिका—फूल का व्याह और किस के साथ होगा ? भ्रमर के साथ, और किसके साथ ?

तेजसिंह—तेरी बुद्धि शरारत से भरी है । कुसुमकुमारी के साथ किसका व्याह होगा, तूने कुछ सुना है ?

बालिका—मैंने तो कुछ नहीं सुना है, तुमने सुना हो तो बताओ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेजसिंह—कुसुमकुमारी के साथ दुर्जयसिंह के व्याह की बात एक बार पक्की हुई थी। परन्तु कन्या को यह सम्बन्ध पसन्द न आया। वह उस व्याह की अपेक्षा मृत्यु को श्रेष्ठ मान बैठी थी।

बालिका—यह मैंने नहीं सुना था।

तेजसिंह—क्या नहीं सुना था?

बालिका—मैंने न सुना था कि उस सम्बन्ध की बात स्थिर नहीं रही।

तेजसिंह—तो क्या सुना था?

बालिका—दुर्जयसिंह के साथ किसी बालिका का व्याह स्थिर हुआ था, इतने में मुसलमानों ने सूर्यमहल पर आक्रमण कर क़िले को अपने अधिकार में कर लिया, और—

तेजसिंह—और क्या?

बालिका—कुछ नहीं।

तेजसिंह—बोलो, नहीं तो मारूँगा।

बालिका—और उस लड़की ने क़िले से भागने के पहले ही शायद वर को प्रेमोपहार-स्वरूप अँगूठी दी थी।

यह सुन कर तेजसिंह की आँखों से मारे क्रोध के चिनगारियाँ झड़ने लगीं। किन्तु उन्होंने क्रोध को रोक कर कहा—"तू जङ्गल की रहनेवाली, असभ्य भील-जाति की बेटी है। तुझ पर क्रोध करके क्या करूँगा। सामने से हट जा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेजसिंह ने बालिका को उठा कर ज़ोर से सरोवर के पानी में फेंक दिया।

बालिका खिलखिला कर हँसती हुई तैरकर सरोवर के दूसरे किनारे जा लगी। उसके केश, और वस्त्र भीग गये। वह उसी दशा में एक ऊँचे पत्थर पर खड़ी होकर उच्चस्वर से गाने लगी।

"सुनो इक बात फिर तुमसे नई कह कर सुनाती हूँ।
कुसुम को कौन व्याहेगा वही तुमसे सुनाती हूँ॥
पवन को दिल दिया उसने उसी से व्याह होवेगा।
सुनेगा भौंर जब सिर धुन दुखी हो हाय! रोवेगा॥"

तेजसिंह उठ खड़े हुए। उस बालिका की अलीक बातों से उनका हृदय उलझन में पड़ गया था। उसका कारण यह कि उन्होंने कई जगह लोगों को यह कहते सुना था कि कुसुमकुमारी का व्याह दुर्जयसिंह से होगा। वह उन्हें वर चुकी है। किन्तु यह अफ़वाह उसी भील-बालिका ने फैलाई थी—तेजसिंह को यह बात मालूम न थी। इस अफ़वाह पर वे अब तक विश्वास न करते थे। कुसुमकुमारी के सत्य में उन्हें रत्ती भर भी सन्देह न था। युद्ध के समय उन्हें कुसुम से कुछ पूछने का अवसर न मिला। इस कारण आज भील-कन्या की बात से कुसुम पर सन्देह का उदय हुआ और वह सन्देह क्रमशः उनके हृदय में बढ़ने लगा।

अँधेरे में वे उस पहाड़ी रास्ते से धीरे धीरे जाने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भिल्लबालिका का गीत अब भी उनके कानों में कुछ कुछ प्रवेश कर रहा था । उनका जी ठिकाने न था । वे यही सोचते जा रहे थे कि बालिका झूँठ क्यों बोलेगी !

तो क्या कुसुम सचमुच दुर्जयसिंह को हृदय से चाहती है ? क्या उसने सचमुच ही दुर्जयसिंह को अँगूठी दी है ? क्या वह तेजसिंह को भूल गई ?—तेजसिंह का कलेजा काँप उठा ।

उनके कम्पित हृदय में कुसुम के पुष्पविनिन्दक मुख का स्मरण हो आया । वे मन ही मन कुसुम के रूप-लावण्य का चित्र खींचने लगे । जब कुसुम के प्रेम की ओर उनका ध्यान गया तब तो उनके मन का सारा सन्देह जाता रहा । वे अपने मन को धैर्य देने लगे,—कुसुम कभी सत्य का उल्लङ्घन न करेगी । तेजसिंह, तुम क्यों व्यर्थ सन्देह कर रहे हो ?

फिर उनके मन में भाँति भाँति की चिन्तायें होने लगीं । फिर हृदय काँपने लगा ।

पहाड़ पर जिस तरह कुहरा धीर धीरे ऊपर को उठता और चारों ओर फैलता है, एवं फिर धीरे धीरे बृहत् आकार धारण कर ऊँचे से ऊँचे पहाड़ को ढक लेता है तथा आकाश-स्थित सूर्य के प्रकाश तथा प्रकृति की मुखच्छवि को छिपा देता है, और फिर वही कुहरा जैसे गगनविलम्बी घनघोर घटा का रूप धारण कर संसार को अन्धकार के समुद्र में डुबो देता है, उसी तरह सन्देहरूपी बादल ने धीरे धीरे अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेजसिंह ने बालिका को उठा कर ज़ोर से सरोवर के पानी में फेंक दिया।

बालिका खिलखिला कर हँसती हुई तैरकर सरोवर के दूसरे किनारे जा लगी। उसके केश, और वस्त्र भीग गये। वह उसी दशा में एक ऊँचे पत्थर पर खड़ी होकर उच्चस्वर से गाने लगी।

"सुनो इक बात फिर तुमसे नई कह कर सुनाती हूँ।
कुसुम को कौन व्याहेगा वही तुमसे सुनाती हूँ॥
पवन को दिल दिया उसने उसी से व्याह होवेगा।
सुनेगा और जब सिर धुन दुखी हो हाय! रोवेगा॥"

तेजसिंह उठ खड़े हुए। उस बालिका की अलीक बातों से उनका हृदय उलझन में पड़ गया था। उसका कारण यह कि उन्होंने कई जगह लोगों को यह कहते सुना था कि कुसुमकुमारी का व्याह दुर्जयसिंह से होगा। वह उन्हें वर चुकी है। किन्तु यह अफ़वाह उसी भील-बालिका ने फैलाई थी—तेजसिंह को यह बात मालूम न थी। इस अफ़वाह पर वे अब तक विश्वास न करते थे। कुसुमकुमारी के सत्य में उन्हें रत्ती भर भी सन्देह न था। युद्ध के समय उन्हें कुसुम से कुछ पूछने का अवसर न मिला। इस कारण आज भील-कन्या की बात से कुसुम पर सन्देह का उदय हुआ और वह सन्देह क्रमशः उनके हृदय में बढ़ने लगा।

अँधेरे में वे उस पहाड़ी रास्ते से धीरे धीरे जाने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भिल्लबालिका का गीत अब भी उनके कानों में कुछ कुछ प्रवेश कर रहा था। उनका जी ठिकाने न था। वे यही सोचते जा रहे थे कि बालिका झूँठ क्यों बोलेगी!

तो क्या कुसुम सचमुच दुर्जयसिंह को हृदय से चाहती है? क्या उसने सचमुच ही दुर्जयसिंह को अँगूठी दी है? क्या वह तेजसिंह को भूल गई?—तेजसिंह का कलेजा काँप उठा।

उनके कम्पित हृदय में कुसुम के पुष्पविनिन्दक मुख का स्मरण हो आया। वे मन ही मन कुसुम के रूप-लावण्य का चित्र खींचने लगे। जब कुसुम के प्रेम की ओर उनका ध्यान गया तब तो उनके मन का सारा सन्देह जाता रहा। वे अपने मन को धैर्य देने लगे,—कुसुम कभी सत्य का उल्लङ्घन न करेगी। तेजसिंह, तुम क्यों व्यर्थ सन्देह कर रहे हो?

फिर उनके मन में भाँति भाँति की चिन्तायें होने लगीं। फिर हृदय काँपने लगा।

पहाड़ पर जिस तरह कुहरा धीर धीरे ऊपर को उठता और चारों ओर फैलता है, एवं फिर धीरे धीरे बृहत् आकार धारण कर ऊँचे से ऊँचे पहाड़ को ढक लेता है तथा आकाश-स्थित सूर्य के प्रकाश तथा प्रकृति की मुखच्छवि को छिपा देता है, और फिर वही कुहरा जैसे गगनविलम्बी घनघोर घटा का रूप धारण कर संसार को अन्धकार के समुद्र में डुबो देता है, उसी तरह सन्देहरूपी बादल ने धीरे धीरे अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आकार को विस्तृत करके तेजसिंह के उदार हृदय को ढक लिया। उस सन्देह-रूपी घटा के गाढ़तम अन्धकार ने उनके हृदय की विशद बुद्धि के प्रकाश को म्लान कर दिया।

उनतीसवाँ परिच्छेद

सत्यपालन

"सा सन्न्यस्ताभरणमबला पेशलं धारयन्ती ।
शय्योत्सङ्गे निहितमसकृद्दुःखदुःखेन गात्रम् ॥

मेघदूतम् ।

पाठकगण, आप लोग आधी रात के समय चाँदनी के उजाले में पुष्पवाटिका के भीतर एक बार कुसुमकुमारी को देख चुके हैं। किन्तु उस दिन चारण देव वहाँ उपस्थित थे, इसलिए हम कुसुम का परिचय आप लोगों को नहीं दे सके। यदि आप लोग उसका परिचय जानने के लिए उत्सुक हों तो चुपचाप हमारे साथ चलने की कृपा कीजिए, आज उस लावण्यमयी के साथ हम एकान्त में बातें करेंगे। अभी वह महारानी की सहचरी बन कर राजपरिवार के साथ रहती है।

कुसुमकुमारी राजपूत की बालिका थी। कुसुम के पिता के साथ तिलकसिंह की बड़ी घनिष्ठता थी। उसके पिता को वे बहुत मानते थे, इसीसे तिलकसिंह अपने पुत्र का ब्याह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुसुम के साथ कर देना चाहते थे। अकस्मात् एक दिन तिलकसिंह के दस वर्ष के बालक से सात वर्ष की बालिका की परस्पर भेंट हुई। एक ने दूसरे को मन ही मन स्वीकार किया। फिर उन दोनों के माता-पिता ने विवाह की बात स्थिर की। ब्याह की सामग्रियाँ प्रस्तुत होने लगीं। ब्याह का दिन भी नियत हो गया। इसी समय दिल्ली के बादशाह अकबर ने चित्तौर नगर पर आक्रमण किया। उस नगर के रक्षार्थ कुसुम के पिता ने और तिलकसिंह ने युद्ध में बड़ी बहादुरी दिखलाई। अन्त में वे दोनों उसी युद्ध में हत हुए। पिता की मृत्यु के कुछ ही दिन बाद तेजसिंह ने पैत्रिक दुर्ग से बेदख़ल होकर भीलों का आश्रय लिया।

सात वर्ष की बालिका और दस वर्ष का बालक प्रणय के मर्म को क्या जाने? किन्तु राजपूत लोग बाल्यकाल से ही सत्य-पालन करना सीखते हैं। यही कारण है कि राजपूत की बालिका अपने सत्य को न भूल सकी। एक दिन के देखे हुए बालक के स्वरूप को वह कई दिनों में भूल गई, किन्तु सातवें वर्ष में उसने जो संकल्प किया था उसे वह आजीवन नहीं भूली।

तिलकसिंह के वंश को नीचा दिखलाने के लिए दुर्जयसिंह ने तेजसिंह की वाग्दत्ता-वधू से बलात् ब्याह करना चाहा। पिता की मृत्यु के अनन्तर कुसुमकुमारी का कोई रक्षक न रहा। जो लोग थे भी वे दुर्जयसिंह के पक्षपाती और उन्हीं के आश्रित थे। वे लोग भी दुर्जयसिंह के साथ ब्याह करने के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हेतु बालिका को बाध्य करने लगे । बालिका ने सङ्कोच त्याग कर दुर्जयसिंह को कहला भेजा—"मेरे स्वामी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए हैं । मैं विधवा हूँ । अब व्याह कैसा ? राजपूत की बेटी का व्याह एक ही वार होता है ।" उस समय कुसुम की अवस्था बारह वर्ष की थी ।

यौवन का आगम होते ही शरीर की चेष्टा और की और ही हो जाती है । स्वभाव में भी परिवर्तन हो जाता है । युवावस्था के आरम्भ में कुछ कुछ क्लेश, चिन्ता और शोक से हम लोगों की मानसिक प्रवृत्ति गठित होती है, प्रतिज्ञा दृढ़ होती है और संकल्प अटल होता है । चिन्ता और क्लेश से बढ़ कर मन का उत्कृष्ट शिक्षक कोई नहीं है, और न उसके समान मानसिक दौर्बल्य का निपुण वैद्य ही है । लुहार की तरह चिन्ता बार बार निर्दयतापूर्वक सबल आघात से हृदय को गठित करती है । उस आघात से हम लोग अधीर होते हैं, रोते हैं, चिल्लाते हैं, किन्तु निर्दय कर्मकारिणी चिन्ता अपना काम किये ही जाती है । चोट पर चोट सहते सहते हम लोगों का मन गठित होता है, मन की प्रवृत्ति स्थिर होती है और प्रतिज्ञा लोहे के सदृश दृढ़ हो जाती है । जो बाल्यकाल से दूसरों के द्वार-पालित होते हैं, दूसरों ही के ऊपर जिनका भरण-पोषण निर्भर रहता है, और जिनको कभी सोचने विचारने का अवसर नहीं मिलता उनका मन युवा होने पर भी गठित नहीं होता, उनकी प्रतिज्ञा दृढ़ नहीं होती । हम उनके सुख और स्वच्छन्दता से कुछ द्वेष नहीं करते ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाल्यकाल में चिन्ताग्रस्त होने और विपत्ति पर विपत्ति आ पड़ने के कारण कोमल बालिका का मन गठित हुआ और हृदय लोहे के समान कठोर होगया। आत्मीय लोगों की भर्त्सना और भयप्रदर्शन से, तथा परिचारिकाओं के अनुनय से और दुर्जयसिंह की दूतियों की प्रतारणा से बालिका का हृदय विचलित न हुआ। बाल्यकाल की प्रतिज्ञा और भी दिन दिन दृढ़ होने लगी। दुर्जयसिंह के साथ ब्याह करने के लिए जितना ही लोग उसको मनाने लगे उतना ही वह अधिक भक्ति-भाव से उस अज्ञात अपरिचित वीर पुरुष का नाम जपने लगी; उसी को आराध्य मान दिन-रात उसकी पूजा करने लगी। बालिका ने अपने बन्धु-बान्धवों के दुर्वाक्यों को चुपचाप सहना सीखा, सूने घर में रहने का क्लेश सहन करना सीखा और अपनी प्रतिज्ञा को अपने हृदय में छिपा रखना सीखा। यद्यपि कहने के लिए बालिका को परिजनों की कमी न थी किन्तु बहुत परिजनों के रहते भी वह अकेली घूमती थी; अकेली बैठ कर सोच विचार करती थी, अकेली फूल चुनती और हृदय के भाव को हृदय में ही धारण करती थी। कौन ऐसा क्लेश है जिसको अभ्यास से हम लोग नहीं सह सकते? कुसुमकुमारी किसी से स्नेह करना नहीं चाहती और न वह किसी से मीठी बातें सुनने की इच्छा करती है। दूसरों के नाक-भौं सिकोड़ने या मर्म-भेदी वाक्य कहने से उसके पत्थर से कठोर हृदय में तनिक भी क्लेश नहीं होता। वह नववयस्क राजपूत-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बालिका, विधवा का वेष धारण कर, इसी प्रकार अपने बाल्य-काल के सत्य का पालन करती थी। अन्धकार जितना गाढ़ा होता है, चिराग़ की रोशनी उतनी ही तेज़ होती है। उतने विरोधियों के बीच उस मातृ-पितृ-हीना अनाथिनी बालिका की प्रतिज्ञा ज्यों की त्यों दृढ़तर बनी रही।

दुर्जयसिंह ने फिर भाँति भाँति का प्रलोभन दिखा कर उस सती राजपूत-बालिका का सत्य डिगाना चाहा। दूतियों ने हज़ार हज़ार दुर्जयसिंह के यश, प्रताप, साहस और विपुल ऐश्वर्य का वर्णन किया किन्तु कुसुमकुमारी ने चुपचाप सब सुन कर धीरे से उत्तर दिया—मैं विधवा हूँ। तुम लोग एक अनाथिनी विधवा को इस तरह क्यों सता रही हो?

कुसुमकुमारी के आत्मीय-गण यह बात सुन कर अत्यन्त क्रुद्ध हुए। उन लोगों ने मीठी एवं कड़वी बातों से बहुत समझाया-बुझाया और अन्त में यह भी कहा कि कन्या का ब्याह—जहाँ तक हो—युवावस्था के पूर्व ही हो जाना ठीक है। बेटी बहुत दिनों तक कुमारी रहे तो निष्कलङ्क कुल में कलङ्क लग जाने का भय बना रहता है।

कुसुमकुमारी ने सब सुन लिया, और कहा—मैं विधवा हूँ, राजपूत की विधवा-बालिका पुनर्विवाह कर वंश को कलङ्कित करना नहीं चाहती।

जब कुसुम किसी तरह ब्याह कराने को राज़ी न हुई तब दुर्जयसिंह उसके आत्मीय लोगों के साथ षड्यन्त्र रच कर उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूर्यमहल में लिवा लाये । कुसुमकुमारी ने दुर्जयसिंह का दुरभिप्राय समझ कर कहला भेजा—चन्दावतवीर, सुना है कि आप बड़े प्रतापी हैं, जो चाहें कर सकते हैं, किन्तु कुसुम आपके कर-स्पर्श के पहले ही आत्मघात करेगी । क्या आप इसे भी रोक सकेंगे ? सुना है कि आपके हाथ से एक विधवा की हत्या पहले हो चुकी है,—तिलकसिंह की विधवा के मारनेवाले आप ही हैं; क्या एक और स्त्री-हत्या का पाप आप अपने सिर लेना चाहते हैं ?

तीसवाँ परिच्छेद

मेघ गरज उठा

"हृदय क्यों काँपता है तू गरजना मेघ का सुन कर ?"

कुसुमकुमारी को इसी प्रकार सोचते-विचारते, विपद् का सामना करते हुए, कई वर्ष बीत गये । सहसा एक दिन आधी रात को एक चारण ने स्वप्न की तरह उसको दर्शन देकर कहा—बाल्यावस्था में जिसे तुमने एक बार देखा था, जो अज्ञात अपरिचित हो कर भी तुम्हारे हृदय में रहता है, वह राठौड़-वीर जीवित है । वह देशोद्धार के लिए विदेशीय शत्रु से जूझ रहा है । उसने लड़कपन में जो प्रतिज्ञा की थी उसका वह पालन करेगा ।

इतना कह कर चारण चुप हो रहा, किन्तु कुसुम के हृदय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में चारण की यह बात बार बार गूँजने लगी। विधवा-व्रत-धारिणी के आशा-हीन हृदय में फिर से नई उमङ्ग का उदय हुआ, फिर से वह मुरझाई हुई लालसा-लता लहलहा उठी। प्रातःकाल की प्रभा में शीतल वायु के स्पर्श से जैसे फूलों की कलियाँ खिलती हैं उसी तरह उस चारण के मिष्ट भाषण से कुसुम का मन एकाएक खिल उठा।

बाल्यकाल के जिस अज्ञात वर का नाम जप कर कुसुम ने इतने दिन सत्य का पालन किया है वह अब तक जीता-जागता है; उसने अपना स्मारक अँगूठी देकर अपने सत्य की सुध दिलाई है;—कुसुम को इससे बढ़ कर हर्ष का विषय और क्या हो सकता है? वह लड़कपन की बात याद करने की चेष्टा करती है, वह अपने बाल्यसखा के मुखड़े को स्मरण करने की चेष्टा करती है, मन ही मन उस राठौड़-योद्धा के युवापन के सुन्दर सुडौल शरीर का चित्र खींचती है और बाल्य-काल के देखे हुए स्वरूप का देर तक स्मरण करती है। मग्न होकर सोचती है तब उस स्वरूप का प्रतिबिम्ब कुछ कुछ उसके हृदय में झलक जाता है। कभी कभी उसके मन में यों भावना होने लगती है जैसे वह राठौड़ चाँदनी रात में कुसुम का हाथ पकड़े खड़ा है। कुसुम ने सङ्कोच से सिमट कर आँखें मूँद ली हैं। उस वीर के गरम निश्वास और होठों ने मानो उसके कोमल कर-पल्लव का स्पर्श किया। कुसुम ने धीरे से आँखें खोलीं, देखा तो सामने वही चारणदेव खड़ा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुसुम विश्वासघातिनी नहीं है। उसने चारण के द्वारा फूल भेज कर जो अपने सत्य का विश्वास दिलाया है उस विश्वास को वह कदापि भङ्ग नहीं करेगी। कुसुम के मन में उस कन्दरा-निवासी राठौड़-वीर के सिवा और किसी की चिन्ता न थी। कल्पना की क्या ही विचित्र गति है। उसे यदि मायाविनी कहें तो कदाचित् अत्युक्ति न होगी। जिस स्थान को कभी नहीं देखा है वहाँ का वर्णन बार बार सुनने से उस स्थान का, कल्पना-शक्ति के द्वारा, हृदय में एक चित्र खिंच जाता है। जिस पुरुष के कभी दर्शन नहीं हुए हैं उसके चरित्रमात्र का परिचय होने से हृदय में उसका एक काल्पनिक चित्र उद्भासित हो जाता है। लोग उसके गुणों के अनुरूप ही उसके स्वरूप की कल्पना कर लेते हैं। कुसुम जब अपने बाल्यकाल के स्वीकृत पति की बात को याद करती है तब उसी चारण के मुख की शोभा उसके हृदय में झलकने लगती है। जब वह तेजसिंह की असाधारण वीरता की बात सुनती है तब उसे चारण का छरहरा डील, विशाल वक्षःस्थल और लम्बी बाँहें स्मरण हो आती हैं। जब वह तेजसिंह के कण्ठस्वर की कल्पना करना चाहती है तब उसी चारण का वीणा-विनिन्दक मधुर स्वर उसके कानों में गूँजने लगता है। सत्य-पालन के लिए कुसुम संसार को त्याग बैठी थी, किन्तु मायाविनी कल्पना न मालूम क्यों उसके ध्यान में बाधा डालती है। हृदयेश्वर के ध्यान के समय क्यों चारणदेव को सामने ला खड़ा कर देती है?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कल्पना के साथ साथ क्या कुसुम का मन भी उसी चारण की मधुर मूर्ति की ओर दौड़ता है ? कुसुम बेचारी यह क्या जानती ?

पपीहा जिस तरह मेघ की ओर टकटकी बाँध कर हमेशा ताकते रहने पर भी नहीं थकता उसी तरह कुसुमकुमारी भी उस पहाड़ी रास्ते की ओर देखते देखते नहीं थकती और उस नवीन चारण के आने की प्रतीक्षा करती थी। कुसुम चाँदनी रात में उपवाटिका में घूमती और सारी रात चुपचाप जाग कर बिताती थी। दिन पर दिन बीतने लगा। यों ही कई महीने बीत गये। चन्द्रमा के प्रकाश में वह नवीनमूर्ति फिर कभी दृष्ट न हुई। निःशब्द रात में वह हृदयहारी संगीत फिर कभी न सुन पड़ा।

आकाश में काली घटा के साथ जिस तरह विद्युत् क्रीड़ा करती है उसी तरह कुसुम के हृदय में नैराश्य के साथ आशा खेल रही थी। किन्तु कुसुम की इस प्रकार की चिन्ता का हाल किसी को विदित न था। उस कुमारिका के निर्मल, उदास मुखमण्डल से कोई भाव लक्षित नहीं होता था।

एकाएक मुसलमानों ने सूर्यमहल पर आक्रमण किया। आधी रात को एक अपरिचित भील-योद्धा के द्वारा कुसुमकुमारी दूसरी ठौर पहुँचाई गई। तदनन्तर वह राजपरिवार के साथ साथ घूमने लगी। भीमचन्द की गुफा से निकल कर महारानी के साथ कई जगहों से घूम-फिर कर वह चवन्द के क़िले में रहने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगी। इस समय युद्ध ठण्डा पड़ गया है। परन्तु महाराना प्रतापसिंह राजमन्दिर को छोड़ अब भी पर्ण-कुटीर में रहते हैं, अब भी तपस्वी की भाँति क्लेश सह कर दिन बिताते हैं। महारानी और उनकी पतोहू भी उसी पर्णकुटी में रहती हैं। महाराना के बाल-बच्चे उस कुटीर के चारों ओर खेलते हैं। जब तक चित्तौर का उद्धार न होगा तब तक प्रतापसिंह राजभवन में पैर न देंगे। प्रतापसिंह की ज़िन्दगी में चित्तौर का उद्धार नहीं हुआ। इतिहास में यह बात लिखी है कि प्रतापसिंह ने उसी पर्णशाला में प्राण त्याग किया।

पर्णशाला के पास ही एक छोटी सी नदी बह रही थी। कुसुमकुमारी वहाँ जल लाने के लिए बराबर जाया करती थी। आज रात में वह उस नदी के तट पर पानी लाने गई। कलसी को नीचे रख कर वह काली घटा से ढके हुए आकाश की ओर देखने लगी। बड़ी देर तक वह उसी ओर देखती रही। वह मन ही मन क्या सोच रही थी, यह हम लोग कैसे जान सकते हैं?

मेघ गरज उठा। साथ ही कुसुमकुमारी का हृदय भी काँप उठा। क्यों काँप उठा? कौन कह सकता है, किसलिए?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इकतीसवाँ परिच्छेद

वज्राघात

हद्दी हद्दी अङ्गुली अशून्या में अङ्गुली ।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् ।

कुसुमकुमारी को एकाएक दूर से किसी के गाने का शब्द सुन पड़ा। वह शब्द कुसुम के हृदय को मथने लगा। उस शब्द ने बहुत दिनों की भूली हुई बात फिर से नई कर दी। उसकी मुरझाई हुई आशा-लता फिर लहलहा उठी। उसके हृदय में आनन्द की तरङ्ग लहराने लगी। कुसुमकुमारी जिस गीत को सुन कर इस तरह पुलकित हुई, उस गीत का यहाँ उल्लेख न कर उसका भावमात्र लिख देना ही ठीक होगा।

गीत का भावार्थ—"बरसात के समय आकाश में इन्द्रधनुष देख पड़ता है। देखने में वह कैसा सुन्दर और सुहावना होता है, उसकी शोभा कैसी विलक्षण होती है। उस क्षणिक इन्द्र-धनुष की स्थिरता का विश्वास करो, किन्तु चपलनयना स्त्री के सत्य का विश्वास न करो।

"कुटिल काले नाग का फन देखने में बड़ा अच्छा होता है। उस प्राणापहारी दुष्ट साँप की साधुता का विश्वास करो, किन्तु सुवेषधारिणी वामलोचना के सत्य का विश्वास न करो।

"संसार के अनित्य पदार्थों की नित्यता का विश्वास करो, विद्युत् के प्रकाश की स्थिरता का विश्वास करो और पानी में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिखी हुई लकीर की स्थिरता का भी विश्वास करो, किन्तु नारी के सत्य का विश्वास न करो।

"संसार में जितने मायावी, चञ्चल, निःसार और नश्वर पदार्थ हैं सबको श्रेणीबद्ध करके सबके ऊपर लिखो 'स्त्री का सत्यपालन'।"

चारण का उग्रस्वर सुन कर कुसुमकुमारी ठिठक गई। चारण ने धीरे धीरे कुसुम के पास आकर पूछा—यह गीत तुम्हें पसन्द है?

कुसुम चकित सी होकर खड़ी रही, बहुत देर पीछे बोली—इस गीत का अर्थ मेरी समझ में न आया, उस दिन तो आपने ऐसा गीत नहीं गाया था।

कुसुमकुमारी ने जिस करुणाभरे कोमल स्वर से यह बात कही थी, उसे सुन कर पत्थर भी पिघल जाता किन्तु चारण का हृदय ज़रा भी न पसीजा। उसने कहा—यह गीत मेरा बनाया नहीं है, जैसा सुना वैसा गाया।

कुसुम—जिनसे आपने यह गीत सीखा है, वे कुशल से तो हैं?

चारण—नहीं, वे भाँति भाँति के बुरे सपने देख कर अत्यन्त शोच में पड़े हैं। उन्होंने अपनी पहचान के लिए तुम्हें जो अँगूठी दी थी वे उसे एक बार देखना चाहते हैं।

इस बार कुसुम सचमुच डर गई। वह चारण की दी हुई अँगूठी को छाती से लगा कर रखती थी, उसे बार बार उँगली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से निकाल कर देखती और फिर पहनती थी। किन्तु जिस दिन वह भीमचन्द की गुफा में लाई गई उस दिन से उसकी अँगूठी हज़ार खोजने पर भी नहीं मिलती। न मालूम वह कहाँ और कैसे ग़ायब हो गई।

चारण—(कम्पित स्वर में) वह अँगूठी कहाँ है ?

कुसुम चुप हो रही। डर के मारे उसने कुछ उत्तर न दिया।

इस दफ़े चारण ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर पूछा—"अँगूठी कहाँ है ?" कुसुम लड़खड़ाती हुई ज़बान से बोली—"मेरे अपराध को, मेरी असावधानी को, क्षमा करें। आप उनसे कहिएगा कि—" चारण ने बीच ही में फिर तीसरी बार यही बात कड़क कर पूछी—वह अँगूठी क्या हुई ?

कुसुम ने अब की बार साफ़ साफ़ कह दिया कि, वह अँगूठी मैंने खो दी, मुझ अभागिनी से यह भारी अपराध हुआ।

चारण—तू यथार्थ में अभागिनी है। तूने केवल उस अँगूठी को ही नहीं खोया, वरन उसके साथ साथ तूने तेजसिंह के प्रेम को भी खो दिया।

छद्मवेषधारी तेजसिंह देखते ही देखते कुसुम की आँखों से ग़ायब हो गये।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बत्तीसवाँ परिच्छेद

पिता के क़िले में प्रवेश

"ततो भेरीमृदङ्गानां पणवानां च निःस्वनः ।
शङ्खनेमिस्वनोन्मिश्रः स बभूवाद्भुतोपमः ॥"

रामायणम् ।

तेजसिंह आधी रात को भीमगढ़ लौट आये । उन्होंने अपने मन में कहा—मैंने एक अविश्वासिनी स्त्री के फन्दे में व्यर्थ अपने को इतने दिन तक उलझा रक्खा था । अच्छा हुआ कि मैं उस झमेले से निकल गया । अब आज ही मैं अपने कामों में प्रवृत्त होऊँगा ।

तेजसिंह उसी समय वहाँ गये जहाँ उनकी सेना चारों ओर से आकर इकट्ठी हुई थी । तेजसिंह को आते देख सभी लोग सावधान हो गये । तेजसिंह ने उच्चस्वर से कहा—बन्धु-गण, वैरी से बदला लेने का यही समय है, मेरे साथ अभी चलो ।

जिन लोगों ने तेजसिंह का यह वीर-रस-भरा वचन सुना उन लोगों ने चन्द्रमा के प्रकाश में उनका उन्नत ललाट और चढ़ी हुई भौंहें देखीं । तुरन्त उन लोगों को तिलकसिंह की वीरता याद हो आई । सभी चुपचाप सूर्यमहल की ओर बिदा हुए ।

तेजसिंह की सेना पहाड़, जङ्गल और अँधेरी तराई के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रास्ते से जाने लगी। जब तक सेना चलती रही तब तक तेजसिंह के मुँह से एक भी शब्द न निकला। सैनिक समझ गये कि तेजसिंह का हृदय रोषानल से प्रज्ज्वलित हो रहा है; आज दुर्जयसिंह की रक्षा नहीं।

अनेक जङ्गल-पहाड़ों को पार कर आख़िर सेना सूर्यमहल के सामने आ पहुँची। क़िला दूर से धुँधला सा देख पड़ता है। रात थोड़ी सी बच रही है। सर्वत्र सन्नाटा छाया है। सूर्यमहल निस्तब्ध है। एक भी शब्द कहीं सुनाई नहीं पड़ता। तेजसिंह ने ज़रा ठहर कर पिता के उस दुर्ग की ओर देखा और मन में कहा—मेरे स्वर्गीय पिताजी! आप आशीर्वाद दें, आज अठारह वर्ष निर्वासन के पीछे आपका पुत्र दुर्ग में प्रवेश करेगा।

सैनिक चुपचाप सूर्यमहल के पास जा पहुँचे। किसी किसी ने इस सुनसान रात में असावधान शत्रु के ऊपर आक्रमण करने की सलाह दी। तेजसिंह ने भौंहें टेढ़ी करके कहा,—पिता के क़िले में पुत्र चोर की तरह प्रवेश करना नहीं चाहता। तेजसिंह राठौड़ राजपूत है। राठौड़ सोये हुए शत्रु पर प्रहार नहीं करते। वे असावधान शत्रुओं के साथ युद्ध नहीं करते।

तेजसिंह की आज्ञा से युद्ध के बाजे बजने लगे। उन शब्दों ने पहाड़ और पहाड़ की तराई में बार बार प्रतिध्वनित होकर लोगों को अचम्भे में डाल दिया। अब तेजसिंह ने गरज कर कहा—आज तिलकसिंह का पुत्र तेजसिंह क़िले में प्रवेश करेगा, जिसका सामर्थ्य हो रोके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिन लोगों ने युद्ध-सूचक बाजे सुने और तेजसिंह का वह गर्वित वचन सुना उन्होंने मन ही मन कहा—"आज तेजसिंह की गति को रोकना मनुष्यों की शक्ति से बाहर की बात है।" क़िले के पहरेदारों ने यह शब्द सुन लिया। नीचे की ओर दृष्टि जमा कर देखा कि झुण्ड की झुण्ड सेना, श्रेणीबद्ध होकर, चींटियों की पंक्ति की तरह पहाड़ पर चढ़ती आ रही है।

पहरेदारों ने तुरन्त दुर्जयसिंह को ख़बर दी। वे सो रहे थे। यह संवाद सुनते ही जाग उठे और क़िले के ऊपर जा खड़े हुए। थोड़ी देर में उन्होंने समझ लिया कि कुछ दिन पूर्व राठौड़ ने जो प्रतिज्ञा की थी आज वे उसी का पालन करने आये हैं। उन्होंने क्रोध में आकर मन ही मन कहा—तिलकसिंह के बेटे, मैं भी चिरकाल से इस सुअवसर की खोज में था। आज मेरा हृदय शान्त होगा। आज या तो तुम नहीं, या मैं नहीं। दो सिंह एक जङ्गल में नहीं रह सकते।

दुर्जयसिंह की आज्ञा के अनुसार दो सौ योद्धा हर्बे-हथियारों से लैस हो क़िले के बाहर आये और कितने ही योद्धा क़िले के भीतर रहे। क़िले के ऊपर चारों ओर मशालें जलाई गईं। गगनस्पर्शी क़िले के ऊपर की रोशनी से दूर दूर तक चारों ओर का स्थान प्रदीप्त हो उठा। मशाल की रोशनी ने आकाश-मण्डल को उजाला कर दिया।

तेजसिंह ने दुर्जयसिंह के सैन्य को आते देख मेघ की तरह गरज कर अपने योद्धाओं को लड़ने की आज्ञा दी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आप (तेजसिंह) सबके आगे जा तलवार के हाथ शत्रु-सेना पर टूट पड़े ।

वहाँ एक ऐसी जगह थी जहाँ ऊपर की अल्प सेना नीचे की बहुसंख्यक सेना की गति को रोक सकती थी किन्तु तेजसिंह को ऊपर जाने से कोई न रोक सका । राठौड़ सैनिकों का असाधारण साहस और बहादुरी देख कर क़िले के निवासी वीरगण विस्मित हुए । थोड़ी ही देर में दो सौ चन्दावत वीर वायुविताड़ित पत्तों की तरह छिन्नभिन्न हो पड़े । कितने ही मारे गये और कितने ही प्रस्तर-खण्ड की तरह लुढ़क कर नीचे जा गिरे । जो थोड़े से बचे उन्होंने पीठ दिखादी । ढेर के ढेर मुर्दों के ऊपर पाँव रखते हुए, तेजसिंह के दुर्दमनीय राठौड़-सैनिक आगे बढ़ चले । दुर्जयसिंह ने ऊपर से यह सब हाल देखा । वे चुपचाप सेना साथ लेकर, क़िले के ऊपर खड़े रहे । मारे क्रोध के उनके होंठ काँप रहे थे । आँखों से चिनगारियाँ झड़ रही थीं । उन्होंने गरज कर कहा—तिलकसिंह के पुत्र ने पिता की भाँति युद्ध करना सीखा है, इससे क्या हुआ ? दुर्जयसिंह भी युद्ध करने में इतना डरपोक नहीं हैं । तेजसिंह ! आओ, आज तुम्हें युद्ध का मज़ा चखावेंगे । दुर्जयसिंह की बाँह में कितना बल है, वह आज तुम्हें भली भाँति मालूम हो जायगा ।

कुछ ही देर में तेजसिंह की सेना बड़े वेग से क़िले की दीवार के पास जा पहुँची । तब तो युद्ध ने भयङ्कर रूप धारण किया । राठौड़ योद्धा दीवार पार कर भीतर जाने की चेष्टा करने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगे और बर्छी के द्वारा चन्दावत उनको रोकने लगे। परन्तु वे बहादुर राठौड़-सेना को कहाँ तक रोक सकते थे। कितने ही राठौड़ वीर क़िले के ऊपर चढ़ ही तो गये। यह देख दुर्जयसिंह के कितने ही वीर योद्धा क़िले की दीवार पर से नीचे कूद कर राठौड़-सेना से भिड़ गये। दोनों दलों में घनघोर युद्ध होने लगा। रणमद में उन्मत्त हो कर वीरगण इस प्रकार लड़ने लगे कि उन्हें अपने-पराये की सुधि न रही। रुधिर की धारा इस प्रकार बह चली जैसे गेरू के पहाड़ से बरसात का पानी बह चलता है। सिपाहियों के धड़ से सिर कट कर ताल-फल की तरह लुढ़क लुढ़क कर नीचे की ओर गिरने लगे, रुण्ड वहीं के वहीं पड़े रहे। कितने ही योद्धा घायल हो जहाँ तहाँ कराहने लगे। कितने ही उस अवस्था में भी शत्रु पर प्रहार करने में नहीं चूकते थे। दोनों दलों में इस प्रकार लोमहर्षण युद्ध होने लगा जिसका वर्णन नहीं हो सकता; मानो सौ वर्ष का पुराना वैर-भाव आज दोनों दलों के हृदय में जाग उठा हो। क़िले के आसपास के रहनेवाले लोग इस भड़कती हुई युद्ध की आग को देख चकित हो रहे। सभी ने निश्चय किया कि तेजसिंह आज अपने पिता के क़िले में बिना प्रवेश किये न रहेंगे।

क़िले के पास युद्ध की तरङ्ग लहराने लगी। युद्ध के तुमुल शब्दों से आकाश भर गया। तेजसिंह उस युद्ध में शरीक न हो कर बड़ी तेज़ी से क़िले के सदर फाटक के तोड़ने में लगे थे। फाटक यद्यपि कठिन लकड़ी का था तथापि आज उसकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रक्षा नहीं। आज वह बिना टूटे न रहेगा। तेजसिंह अपने हाथ से बलपूर्वक कुल्हाड़ी मार मार कर फाटक तोड़ रहे थे। उनके कुठाराघात से क़िले का द्वार बार बार काँपने लगा। तेजसिंह के कुठार का वह शब्द चन्दावत वीरों के हृदय को फाड़ने लगा। कुछ ही देर में बड़े प्रचण्ड शब्द के साथ क़िले का फाटक टूट गया। राठौड़-सैनिक बड़े ज़ोर से गरज उठे।

फाटक टूटने पर दोनों दलों में जो मुठभेड़ हुई, दोनों दलों में जो गुत्थम-गुत्था युद्ध मचा, उसका वर्णन नहीं हो सकता। दुर्जयसिंह ने सोचा कि इस द्वार की रक्षा न होने से क़िले की रक्षा न होगी। इसलिए उन्होंने स्वयं उस भग्न-द्वार के पास आ कर शत्रुओं को भीतर न घुसने देने की चेष्टा की। क़िले के भीतर जितने साहसी बलवान् वीर चन्दावत थे वे सब दुर्जयसिंह का साथ देने के लिए इकट्ठे हुए। तेजसिंह भी टूटे हुए द्वार पर खड़े होकर भीतर प्रवेश करने का रास्ता साफ़ कर रहे थे। उनके साथी राठौड़ योद्धा उनकी सहायता में दत्त-चित्त थे।

कुछ ही देर में देख पड़ा जैसे दो ओर से समुद्र की दो ऊँची तरङ्गें आ कर आपस में बड़े वेग से टकरा गई हों। कुछ देर तो दोनों दल परस्पर के तीव्र वेग से आहत होकर जहाँ के तहाँ खड़े रह गये। कोई किसी को एक पग भी पीछे न हटा सका। बस, फिर क्या था, दोनों ओर से बर्छी और तलवार की मार होने लगी। द्वार के निकट दोनों दलों की सेना कट कट कर गिरने लगी। कुछ ही देर में वह स्थान रुण्ड-मुण्डों से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भर गया। लासों के ऊपर खड़े हो होकर राठोड़ और चन्दावत लड़ने लगे। दुर्जयसिंह ने उस दिन यथार्थ में योद्धा का नाम रख लिया। उनका सारा शरीर लोहू से भीग गया था, दोनों आँखें अँगारे की तरह बल रही थीं। वे बड़ी मुस्तैदी और बहादुरी के साथ द्वार की रक्षा कर रहे थे; असुर-बल से शत्रुओं का संहार कर रहे थे और वज्र की भाँति गरज कर अपने सैन्य को उत्साहित कर रहे थे। किन्तु तेजसिंह की वीरता की तो बात ही न्यारी थी, आज वे मानो देवप्रदत्त शक्ति से लड़ रहे थे। मनुष्यों में किसकी सामर्थ्य जो आज उनकी गति को रोक सके। उन्होंने अमानुषिक बल से शत्रु-सेना को विनाड़ित करके क़िले के भीतर प्रवेश किया। उनकी ढाल देख मानो शत्रु-सेना की शक्ति स्तम्भित हो गई।

राठौड़-सेना के कोलाहल से धरती और आकाश एक साथ काँप उठे। राठौड योद्धाओं ने आज अठारह वर्ष पीछे सूर्यमहल क़िले में प्रवेश किया।

तेतीसवाँ परिच्छेद

शोक-शान्ति

"गदानां मुशलानां च परिघानाञ्च निःस्वनः।
शराणां शङ्खवातैश्च क्षुभिताः सप्तसागराः॥"

रामायणम्।

जब क़िले का फाटक टूटा, जब राठौड़ों ने हल्ला मचाते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुए क़िले के भीतर प्रवेश किया, तब दुर्जयसिंह ने गम्भीर भाव धारण कर कुछ देर तक चिन्ता की। उन्होंने धीरे धीरे मस्तक के रक्त से मिले हुए पसीने को पोंछते और दोनों दलों को परस्पर घमासान युद्ध करते हुए देखा।

तेजसिंह की वीरता से प्रसन्न होकर दुर्जयसिंह ने गम्भीरतापूर्वक कहा—"राठौड़वीर, तुम्हारा युद्ध-कौशल देख मैं परितुष्ट हुआ। तुम अपने पिता के सदृश बलिष्ठ हो" फिर चन्दावतसेना को पुकार कर कहा—देखो, ख़ूब सावधानी से लड़ो, हम लोगों का क़िला गया ते गया, पर ऐसा करो जिसमें मान न जाने पावे। राजपूतों का गौरव रक्खो; चन्दावतवंश की मर्यादा तुम्हीं लोगों के हाथ है।

यह सुन कर सभी चन्दावत वीर मेघ की तरह गरज उठे। उस शब्द से धरती और आकाश काँप गया। अब भी राठौड़ों के विजय में सन्देह है। चन्दावत लड़ मरेंगे, किन्तु युद्ध में पराजय स्वीकार न करेंगे।

चन्दावत इस बार अपने प्राणों का मोह छोड़ कर बड़े वेग से राठौड़-सेना पर टूट पड़े। राठौड़ इस बार गहरी चोट खाकर आगे नहीं बढ़ सके। चन्दावत-सेना की तीक्ष्ण तरङ्ग के सामने राठौड़-सेना न ठहर सकी, क्रमशः पीछे की ओर हटने लगी।

तेजसिंह अपने सैन्य को पीछे हटते देख कर क्रोध से गरजने और अपनी बर्छी को बड़े वेग से घुमाने लगे। उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिंहनाद से पत्थर का सारा क़िला काँप उठा किन्तु मृत्यु से न डरनेवाले चन्दावत-वीरों का हृदय कम्पित न हुआ। चन्दावतों की मार से व्याकुल हो राठौड़ पीछे हटने लगे।

तेजसिंह से प्रोत्साहित होकर राठौड़वीर राक्षसों की भाँति, बेपीर हो जूझने लगे। उन्होंने बार बार चन्दावत-सेना पर आक्रमण किया और चन्दावतों ने बार बार उस आक्रमण को रोका। थोड़ी सी चन्दावत सेना के सामने राठौड़ नहीं ठहर सके, क्रमशः पीछे हटने लगे।

राठौड़-सेना को पीछे हटते देख देवीसिंह ने ललकार कर कहा—"तिलकसिंह के क़िले में आज उनके पुत्र तेजसिंह प्रवेश करेंगे और अपने पिता की गद्दी पर विराजमान होंगे। तुम लोग पीछे की ओर कहाँ हटे जा रहे हो?" यह कह कर वृद्ध राठौर देवीसिंह तलवार ले बाघ की तरह कूद कर शत्रु-सेना पर टूट पड़े। उनको शत्रु-मण्डली के बीच धँसते देख राठौड़गण उनकी रक्षा के लिए आगे बढ़े। देवीसिंह का असाधारण साहस देख रठौड़ों के हृदय में फिर से नया जोश हो आया। उन्होंने बात की बात में थोड़ी सी चन्दावत सेना को मार गिराया। अब की वार युद्ध का अन्त हो गया।

लोहू से सने हुए वृद्ध देवीसिंह ने तेजसिंह का हाथ पकड़ कर कहा!—तेजसिंह. मेरा संकल्प पूरा होगया। अब मुझे बिदाई दो। तुम अपने पिता के समान यशस्वी हो। और आशीर्वाद मैं क्या दूँ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देवीसिंह का प्राण-विहीन कलेवर धरती पर गिर पड़ा। दुर्जयसिंह की अमोघ बर्छी की चोट उनके हृदय में लगी थी।

युद्ध समाप्त हुआ। एक एक कर प्रायः सभी चन्दावत मारे गये। दुर्जयसिंह और उनके कुछ साथी योद्धा अब तक जीवित हैं। दुर्जयसिंह की तलवार टूट गई है, उनका सर्वाङ्ग लोहू से भीगा हुआ है। आँखों से आग के कण झड़ रहे हैं।

चन्दावत वीर तब भी जूझने को तैयार हैं। उनकी युद्ध की पिपासा अब तक नहीं मिटी है। जब तक यह वीर जीता रहेगा तब तक मिटेगी भी नहीं।

तेजसिंह ने पहले ही आज्ञा दे रक्खी थी कि पराजित दुर्जयसिंह को कोई जान से न मार डाले। इस समय दुर्जयसिंह को मार डालने के लिए राठौड़ों को उद्यत देख तेजसिंह ने फिर गरज कर कहा—दुर्जयसिंह के शरीर पर जो शस्त्र-प्रहार करेगा वह अपने को तेजसिंह का शत्रु समझे।

राठौड़ों ने अपना हाथ रोक लिया। सभी राठौड़ चुपचाप खड़े हो रहे, किन्तु उस निस्तब्धता में एक वृद्ध का काँपता हुआ स्वर सुना गया—स्वामी का आदेश शिरोधार्य है, किन्तु धधकती हुई आग की तरह अब भी पुत्र का शोक हृदय में प्रज्वलित हो रहा है। यही मेरे पुत्र का हत्यारा है।

शोकाकुल वृद्ध गोकुलदास ने पुत्र-वध का बदला चुकाने का अच्छा अवसर जान झट कूद कर दुर्जयसिह की छाती में कटार भोंक ही तो दी। दुर्जयसिंह ने भी वह टूटी तलवार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खींच कर एक हाथ गोकुलदास के सिर पर जमा दिया। दोनों के निर्जीव शरीर एक साथ धरती पर गिर पड़े। इतने दिनों बाद गोकुलदास के पुत्र-शोक की शान्ति हुई।

चौंतीसवाँ परिच्छेद

खोई हुई अँगूठी और रत्न की पुनःप्राप्ति

"अद्यप्रभृत्यवनताङ्गि तवास्मि दासः।

कुमारसम्भवम्॥

पाठकगण, इस युद्ध का झमेला छोड़ कर चलिए। अब एक बार हम लोग महाराना की पर्णशाला में चलें। देखें तो बेचारी कुसुम वहाँ किस अवस्था में है।

साँझ के समय कुसुम उसी नदी के किनारे जल लेने के लिए अकेली आ रही थी। कुसुम यद्यपि बड़ी बड़ी यन्त्रणायें भोग चुकी है, बार बार उसे विपत्ति से सामना करना पड़ा है, तथापि आज तक किसी ने उसको आँसू बहाते नहीं देखा; किसी के आगे अपने स्नेह की बातें कहते किसी ने नहीं सुना। इस युवावस्था में सिर्फ़ एक दिन उसने सुख का सपना देखा था। अब उस स्वप्न का स्मरण भी जाता रहा, जीवन की आशा भी लुप्त हो चली है, और संसार उसके लिए अँधेरा सा हो रहा है। अब उसका हृदय नैराश्य के बोझ से दबा जा रहा है। न वह किसी से कुछ स्नेह का परितोष चाहती, और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न किसी से अपनी असह्य यन्त्रणा में सहानुभूति ही चाहती है।

कुसुम मन ही मन कुछ सोचती हुई धीरे धीरे नदी के किनारे आ रही थी। एक बार उसने पीछे की ओर घूम कर देखा। पीछे पीछे भील की कन्या आ रही थी। कुसुम ने कहा—भीलबाला, तुम्हारे पिता ने महारानी की विपत्ति के समय हम लोगों को आश्रय दिया था, यह उपकार महाराना कभी न भूलेंगे। तुम क्या रानी साहिबा को देखने आई हो?

भीलकन्या—नहीं बहन, इस नदी के किनारे एक चम्पा का फूल लेने आई हूँ। मुझको एक फूल दोगी?

कुसुम—क्यों नहीं, जितने चाहो, ले लो।

भीलकन्या—तुम्हारा चेहरा ऐसा उदास क्यों है?

कुसुम—नहीं तो, उदास कब है?

भीलकन्या—मैं सब जानती हूँ।

कुसुम—क्या जानती हो?

भीलकन्या—तुम्हारा चेहरा क्यों फीका है, मैं जानती हूँ।

कुसुम—कुछ कहो भी तो।

भीलकन्या—तुम्हारी कोई चीज़ खो गई है।

कुसुम—कौन चीज़?

भीलकन्या—सोने का कोई गहना—हार, कड़ा, या अँगूठी।

अँगूठी का नाम सुनते ही कुसुम काँप उठी। वह धीरे धीरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोली—हाँ बहन, सचमुच, मेरी एक अँगूठी खो गई है, और उसके साथ साथ एक अनमोल रत्न भी खो गया है।

भीलकन्या—उसके लिए इतना खेद क्यों? एक गई है तो दूसरी मिल जायगी।

कुसुम—अँगूठी फिर मिल भी सकती है किन्तु जो रत्न गुम गया है वह इस ज़िन्दगी में फिर न मिलेगा।

भीलकन्या—कैसा रत्न कुसुम? मोती की माला या और ही कुछ हृदय में धारण करने की चीज़?

कुसुम—हाँ, वह हृदय में धारण करने ही की चीज़ थी, किन्तु वह मोती से कहीं बढ़ कर आबदार और बहुमूल्य थी।

भीलकन्या—तो फिर क्या करोगी?

कुसुम—करूँगी क्या? जैसे इस जीवन में अनेक दुःखों को सहन किया है वैसे ही इस क्षति को भी सहन करूँगी।

भीलबालिका बड़े ध्यान से कुसुम के मुँह की ओर देख रही थी। उसने कुसुम की आँखों से दो बूँद आँसू गिरते देखे। भीलबालिका ने ऊपर की ओर देखा, मानों वह चम्पा के फूल को देखने लगी हो, किन्तु छिप कर उसने भी अपनी आँखें पोंछ डालीं।

बड़ी देर तक आकाश की ओर देख कर भील की बालिका ने कहा—बहन, मुझे यह चम्पा का फूल तोड़ दो। मैं इसके बदले में तुम्हारे खोये हुए रत्न को खोजूँगी। मैं दिन-रात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जंगल-पहाड़ों में घूमा करती हूँ । कुछ आश्चर्य नहीं कि वह रत्न मुझे मिल जाय ।

भिल्लबालिका का भोलापन देख कर कुसुम ने कुछ उत्तर न दिया । उसने धीरे धीरे फूल तोड़ कर बालिका के हाथ में दे दिया । भील-कन्या ने अपनी चपलता को त्यागकर गम्भीरता-पूर्वक कहा—कुसुमकुमारी, तुम्हें कल तुम्हारा रत्न मिल जायगा ।

दूसरे दिन बड़े तड़के कुसुमकुमारी को वह अमूल्य रत्न मिल गया ! सूर्यमहल के अधीश तेजसिंह, डबडबाई हुई आँखों से, कुसुम के मुँह की ओर देख कर क्षमा की प्रार्थना कर रहे हैं; कुसुम के हाथ को अपने हाथों में लेकर आँसुओं की झरी से उसे भिगाते हुए क्षमा की प्रार्थना कर रहे हैं ।

कुसुमकुमारी आश्चर्य-भरी दृष्टि से उनकी ओर देखने लगी । सूर्यमहल क़िले का स्वामी दूसरा कोई नहीं; वही दिव्य-मूर्ति दीर्घकार्य सङ्गीत विद्याविशारद चारण है ! कुसुमकुमारी मारे ख़ुशी और उल्लास के बेहोश हो गई । तेजसिंह ने उसके संज्ञाशून्य शरीर को कुछ देर अपनी छाती से लगा रक्खा, फिर शीघ्र ही उसको होश में लाने का प्रयत्न किया और उसे ढाढ़स दिया ।

निदान बड़ी धूमधाम से कुसुमकुमारी का ब्याह तेजसिंह के साथ हुआ । स्वयं महाराना उस विवाह-मण्डप में उपस्थित थे । महारानी ने कुसुम को गले से लगाकर अपने हाथों से उसके गले में अपनी मोती माला पहना दी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिस विवाहोत्सव में स्वयं महाराना सम्मिलित हुए थे, और बड़े बड़े धनी मानी राठौड़ आये थे उस व्याह की रात के महोत्सव का वर्णन कौन कर सकता है? तेजसिंह ने सबका यथोचित सम्मान किया। सब लोग ख़ुशी ख़ुशी अपने अपने घर गये।

पाठकगण, सूर्यमहल के अन्तःपुर की तैयारियाँ भी आज देखने ही योग्य हैं। चलिए, हम लोग भी नवविवाहित बधू-वर को देख कर अपने नयनों को तृप्त करें।

कुसुमकुमारी और तेजसिंह दोनों मणिमन्दिर में एक रत्नजटित सिंहासन पर बैठे हैं, दोनों के हृदय में आज एक अनिर्वचनीय आनन्द की तरङ्गें लहरा रही हैं, विशेष कर कुसुम की अवस्था कुछ विचित्र सी दीखती है। इस अपूर्व सम्मिलन के समय, इस प्रथम सुख के अवसर पर, कुसुम-कुमारी का कलेजा न मालूम क्या सोचकर बार बार धड़कने लगा है। वह अपने को बार बार सँभालती है तो भी उसका शरीर इस तरह क्यों काँप रहा है? जिस तेजसिंह के लिए वह दिन-रात सोच में पड़ी रहती थी, जिसके लिए वैधव्यव्रत धारण कर उसने बाल्यकाल के सत्य संकल्प का पालन किया था और जिसको आत्म-समर्पण करने के लिए वह अब तक जीवन धारण किये हुए थी, उस जीवनाधार की ओर एक बार पलक उठाकर देखने में आज वह इस प्रकार क्यों सशङ्कित हो रही है? यह कुसुम जाने या कुसुम के प्रेमी मधुप तेजसिंह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जानें । दूसरे को जानने का अधिकार नहीं । तेजसिंह ने कुसुम को इस प्रकार अधीर होते देख उसे छाती से लगा लिया और बार बार उसके सुधा से भी अधिक मधुर अधरों को चूमकर कहा—प्यारी कुसुम, एक दिन मैंने तुम पर व्यर्थ अनुचित सन्देह करके तुम्हें कष्ट दिया था, क्या तुम मेरे उस अपराध को क्षमा न करोगी ?

कुसुम ने आँखों में आँसू भर कर गद्गद कण्ठ से कहा—नाथ, जिस दिन यह दासी आपको दोषी समझेगी उस दिन आप समझ लें कि कुसुम जीती नहीं है। वह कष्ट मेरे अपने किये अपराध का ही फल था ! आपकी दी हुई प्रिय अँगूठी को मैंने क्यों खो दिया ?

तेजसिंह ने फिर उसके गालों को चूमकर मुसकुराते हुए कहा—प्यारी, तुम अब ज़रा भी मन में क्षोभ न करो। तुम्हारा कोई दोष नहीं। वह अँगूठी तुमने नहीं खोई।

कुसुम—मैंने नहीं खोई तो किसने खोई ? यदि मैं उस अँगूठी को एक बार भी देख पाती तो उसे अपनी छाती से लगा रखती, तब फिर उसके खो जाने का दुःख मेरे मन में न रहता।

"भगवान् ने तुम्हारा मनोरथ पूरा किया है।"—यह कह कर तेजसिंह ने अँगूठी निकाल कर कुसुम के हाथ में दे दी। अँगूठी देख कर कुसुम चकित हुई। उसकी आँखों में प्रेम के आँसू भर आये। उसने बार बार उस अँगूठी को चूम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर छाती से लगा लिया। फिर उसने डबडबाई हुई आँखों से स्वामी की ओर देखा, पर वह कुछ बोल न सकी।

तेजसिंह ने फिर उसके होठों को चूमकर अपने हाथ से उसके आँसू पोंछ दिये और धीरे धीरे एक पत्र निकाल कर उसके हाथ में रख दिया। कुसुम ने पत्र पढ़ा, वह भील-कन्या का भेजा हुआ था। उस पत्र की नक़ल हम पाठकों के मनोरञ्जनार्थ नीचे लिखते हैं।

"तेजसिंह !

तुम्हारी अँगूठी एक दिन कहीं खो गई थी। तुम्हें स्मरण होगा, उस दिन तुमने मुझसे कहा था कि जो अँगूठी खोज निकाले वह उसी की हो। याद है न? कुसुमकुमारी और महारानी को तुम किसी दिन मेरे घर ले आये थे। अपनी छाती पर अँगूठी रक्खे कुसुमकुमारी नींद में सो रही थी। मैंने चुपचाप उसकी छाती पर से वह अँगूठी उठा ली।

"मैंने समझा कि कुसुम के हाथ में पाँच उँगलियाँ हैं, और मेरे हाथ में भी उतनी ही हैं। यदि कुसुम अँगूठी पहन सकती है तो मैं क्यों नहीं पहन सकती। जिस ईश्वर ने भील को सिरजा है उसी ने राजपूत को भी बनाया है; भील और राजपूत दोनों ही मनुष्य हैं, तब कुसुम जो पावेगी वह भिल्लबालिका क्यों नहीं पा सकती ?

'किन्तु मैं अभी बालिका हूँ। मेरी समझ में भूल हुई। तेजसिंह बाग़ का फूल चाहते हैं, जङ्गली फूल नहीं चाहते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस दिन बाग़ के फूलों के बदले, मालूम होता है, तुमने कुसुम को अँगूठी दी थी । मैं तुम्हें जङ्गली फूल देती हूँ इसी से, जान पड़ता है, तुम मुझे कुछ नहीं देते । मैं छोटी सी लड़की कैसे समझ सकती हूँ कि तुम किस अभिप्राय से कौन काम करते हो ?

"मैं आज शाम के समय कुसुम को देखने गई थी । जी में था कि उससे वाटिका के दो फूल माँग लूँगी । कुसुम ने कहा—अँगूठी के साथ रत्न भी खो गया । अँगूठी मैंने ली है, पर रत्न तो मैंने आँख से भी नहीं देखा ।

"कुसुम ने कहा—अँगूठी से रत्न कहीं बढ़ कर सुन्दर और बहुमूल्य था; अँगूठी फिर मिल सकती है, पर वह रत्न अब नहीं मिल सकता । यह अँगूठी लेकर मैं क्या करूँगी ? जिसके हाथ यह पत्र भेजती हूँ, उसी के मार्फ़त अँगूठी भी भेजती हूँ । कुसुम की चीज़ उसको लौटा देना ।

"कुसुम से मैंने कहा था कि हो सकेगा तो रत्न भी खोज कर तुम्हारे हवाले करूँगी, परन्तु बहुत खोजने पर भी वह नहीं मिला । यह उलहना मुझ पर बना रहा । यदि तुम्हें कहीं वह रत्न मिल गया हो तो कुसुम को दे दो, वह उसके लिए बहुत बेचैन है ।"

कुसुम ने दो तीन बार इस पत्र को पढ़ा, फिर मुसकुरा कर कहा—"अज्ञान बालिका ने सुन्दर अँगूठी देख कर चुरा ली थी ।" इसके अनन्तर दोनों पलँग पर जा लेटे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भीलबालिका अपने पिता के घर रहने लगी, किन्तु वह घर का काम-काज करना नहीं जानती थी, इससे बराबर जंगल और पहाड़ की तराई में फिरा करती और जब तब सरोवर के किनारे बैठ कर गीत गाती थी। गाँव की दूसरी दूसरी भील-स्त्रियाँ उसे गाली देतीं और फटकारती थीं। उसका ऐसा उद्दण्ड स्वभाव देख किसी ने उससे ब्याह न किया।

कभी कभी आधी रात को निर्जन कन्दरा और पहाड़ की चोटी पर किसी स्त्री के गाने का शब्द सुन पड़ता था। कभी कभी रात के पिछले पहर सरोवर के किनारे लोगों को एक स्त्री की छाया देख पड़ती थी। लोग कहा करते थे, कोई चुड़ैल होगी।

पतीसवाँ परिच्छेद

"प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहुसाधनता।
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि।"

१५९७ ई० में प्रतापसिंह परलोक सिधारे*। उनकी मृत्यु के पीछे प्राय: आठ वर्ष तक अकबरशाह ने बादशाहत की। किन्तु बादशाह ने मेवाड़-विजय के लिए फिर कोई उद्योग नहीं किया।

---

*जिस इतिहास के आधार पर यह उपन्यास बना है उस इतिहास से प्रतापसिंह के सम्बन्ध में कुछ बातें यहाँ उद्धृत की गई हैं।—ग्रन्थकार।

Pratap succeeded to the titles and renown of an illustrious house, but without a capital, without re-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जहाँगीर जब बादशाही तख़्त पर बैठे तब वे मेवाड़-विजय की चेष्टा करने लगे। प्रतापसिंह की सत्रह सन्तानों में जेठे

---

sources, his kindred and clans dispirited by reverses; yet, possessed of the noble spirit of his race, he meditated the recovery of Chitore, the vindication of the honour of his house, and the restoration of its power. Elevated with his design, he hnrried into conflict with his powerful antagonist, nor stooped to calculate the means which were opposed to him. Accustomed to read in his country's annals the splendid deeds of his forefathers, and that Chitore had more than once been the prison of their foes, he trusted that the revolution of fortune might co-operate with his own efforts to overturn the unstable throne of Delhi. The reasoning was as just as it was noble; but whilst he gave a loose to those lofty aspirations which meditated liberty to Mewar, his crafty opponent was counteracting his views by a scheme of policy which, when disclosed, filled his heart with anguish. The wily Mogal arrayed against Pratap his kindred in faith as well as blood. The princes of Marwar, Ambar, Bikaneer and even Bundi, late his firm ally, took part with Akbar and upheld despotism. Nay, even his own brother Sagarji, deserted him and received, as the price of his treachery, the ancient capital of his race, and the title which that possession conferred.

But the magnitude of the peril confirmed the fortitude of Pratap who vowed, in the words of the bard 'to make his mother's milk resplendent;' and he amply redeemed his pledge. Single-handed, for a quarter of a century, did he withstand the combined efforts of the empire; at one time carrying destruction

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अमरसिंह, प्रतापसिंह के अनन्तर, मेवाड़ की राजगद्दी पर बैठे।
मरने के समय प्रतापसिंह अपने पुत्र अमरसिंह को स्वदेशरक्षा

---

into the plains, at another flying from rock to rock, feeding his family from fruits of his native hills, and rearing the nursling hero, Umra, amid savage beasts and scarce less savage men, a fit heir to his prowess and revenge. The bare idea that 'the son of Bappa Rawul should bow the head to mortal man, was inuspportable; and he spurned every overture which had submission for its basis, or the degradation of unting his family by marriage with the Tartar, thoughi lord of countless multitudes.

The brilliant acts he achieved during that period live in every valley; they are enshrined in the heart of every true Rajput, and many are recorded in the annals of the conquerors, To recount them all or relate the hardships be sustained, would be to pen what they would pronounce who had not traversed the country where tradition is ye teloquent with his exploits, or conversed with the dscendants of his chiefs who cherish a recollection of the deeds of their forefathers, and melt, as they recitee them, into manly tears.

"It is worthy the attention of thoese who influence the destinies of states in more favoured climes to estimate the intensity of feeling which could arm his prince to oppose the resources of a small principality against the then most powerful empire of the world, whose armieṣ were more numerous and for more efficient than any ever led by the Persian against the liberties of Greece. Had Mewar possessed her Thucydides, or her Xenophon, neither the wars of the Peloponnesus nor the retreat of the "Ten Thousand" would have yielded more diversified incidents

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के लिए दिल्लीपति के साथ युद्ध करने का आदेश दे गये थे। अमरसिंह ने पिता की आज्ञा का पालन करने की प्रतिज्ञा की और यथासाध्य उसका पालन भी किया। जहाँगीर की असंख्य सेना के साथ उन्होंने सोलह वर्ष तक लड़ाई की। कई बार उन्होंने मुग़लसेना को परास्त करके देश की रक्षा की। जहाँगीर ने प्रतापसिंह के भाई सागरसिंह को राज्य-पद पर अभिषिक्त करके चित्तौरगढ़ भेजा। वे अपने भतीजे (अमरसिंह) को देश के लिए युद्ध करते और अपने को मुसलमानों के अधीन हो चित्तौरगढ़ की रक्षा करते देख बहुत लज्जित हुए। वे इस ग्लानि को सहन न करके भतीजे को चित्तौर का क़िला देकर आप जहाँगीर के पास गये। वहाँ जाकर मारे क्रोध और ग्लानि से उन्होंने आत्म-हत्या कर ली।

इतने दिनों के बाद चित्तौर का उद्धार हुआ सही, किन्तु

---

for the historic muse, than the deeds of this brilliant reign amid the many vicissitudes of Marwar. Undaunted heroism, inflexible fortitude—that which 'keeps honour bright, perseverance,—with fidelity such as no nation can boast, where the materials opposed to a soaring ambition, commanding talents, unlimited means, and the fervour of religious zeal: all however insufficient to contend with one unconquerable mind. There is not a pass in the apline Aravali that is not sanctifiedby some deed of Pratap—some brilliant victory, or oftener, made more glorious of defeat. Haldighat is the Thermopylae of Mewar; the field of Deweir, her Marathon."—'*Tod's Annals and Antiquities of Rajasthan.*'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुसलमानों के साथ युद्ध करना अब कठिन सा हो उठा। हर एक लड़ाई में अमरसिंह की सेना का और धन का नाश होने लगा। विजयी हो करके भी वे जो क्षतिग्रस्त होने लगे उस क्षति का पूरा होना दुःसाध्य हो उठा। अमरसिंह ने अपने सामर्थ्य भर कुछ त्रुटि न की, आख़िर लाचार होकर १६१३ ई० में यवन-सम्राट् की अधीनता स्वीकार कर ली।

शाहज़ादा सुलतान .खुर्रम के निकट अमरसिंह ने अधीनता स्वीकार कर ली। फिर अपने पुत्र करुण को सुलतान के साथ अजमेर में जहाँगीर के शिविर में भेज दिया।

सुलतान ख़ुर्रम (पीछे से यही शाहजहाँ नाम रख कर भारतवर्ष के राजसिंहासन पर बैठे) बड़े आदर से करुण को अपने साथ अजमेर ले गये। इतने दिनों में मेवाड़ विजय होने से जहाँगीर बहुत खुश हुए और युवराज करुण को शरणागत देख उनका सारा रञ्ज जाता रहा। उन्होंने सम्मानपूर्वक करुण को अपने सिंहासन की दहिनी ओर बैठने को आसन दिया। अनेक प्रकार की ख़िलत और बहुमूल्य उपहार देकर वे करुण को अपने साथ ले प्रधान बेगम नूरजहाँ के पास गये। नूरजहाँ का नाम विख्यात ही है। वह जैसी सुन्दरी थी वैसी ही बुद्धिमती भी थी। वह अपने रूप-लावण्य और चतुराई से मोहित कर बादशाह को अपनी मुट्ठी में किये रहती थी। जहाँगीर नाम-मात्र के बादशाह थे। बादशाही सलतनत का सारा काम नूरजहाँ करती थी।

नूरजहाँ ने युवराज करुण को बड़े आदर से बैठाया और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनकी बड़ी ख़ातिर की । युवराज को अपनी ओर से ख़िलत हाथी, घोड़े, तलवार, भूषण और जवाहरात आदि अनेक बहुमूल्य पदार्थ देकर उसने अपनी प्रसन्नता प्रकट की । नूरजहाँ और जहाँगीर दोनों ने युवराज का पूरा सम्मान किया, किन्तु इतना ऊँचे दर्जे का सत्कार पाने पर भी प्रतापसिंह के पौत्र का मुँह विकसित न हुआ । प्रातःस्मरणीय महाराना प्रतापसिंह अपने देश के स्वतन्त्र राजा थे; उनके पुत्र और पौत्र इस समय स्वदेश के जागीरदार बने !—यह सोच कर करण के मुँह पर उदासी का चिह्न बना ही रहा और उसकी भौंहें चढ़ी ही रहीं ।

बादशाह ने करण को भली भाँति सम्मानित कर और भाँति भाँति के उपहार देकर बिदा किया । बादशाह जहाँगीर ने स्वयं अपने रोज़नामचे में लिखा है कि उसने करण को कुल बारह लाख रुपये की वस्तुएँ उपहार में दी थीं । इसके अलावे एक सौ दस घोड़े और पाँच हाथी दिये थे । सुलतान ख़ुर्रम ने अपनी ओर से अलग ही उपहार दिया था ।

बादशाह से बिदा होकर करण अपने देश को गये । उनके चित्तविनोदार्थ कई दिनों से जो भाँति भाँति के उत्सव हो रहे थे वे उनके चले जाने पर—दिन ही में—बन्द कर दिये गये । रात में जहाँगीर जब नूरजहाँ के पास आये तब उन्होंने हँस कर कहा—करण ने कभी बादशाह की मजलिस नहीं देखी थी, इसीसे शरमिन्दगी के मारे वह हमेशा सर झुकाये रहता था ।

नाज़ो-नख़रे से भरी हुई नूरजहाँ मीठी हँसी हँस कर भ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तान कर और प्रेममद-छाके नयनों से अपने प्यारे की ओर देखकर बोली,—जी हाँ, हो सकता है, पर मैं कुछ और ही समझती हूँ। कई बरसों की लगातार लड़ाई से मेवाड़ हम लोगों के अधीन हुआ है, किन्तु सिसोदिया चिरकाल से स्वाधीन होने के कारण अब भी अधीनता दिखलाने का ढंग नहीं जानते। स्वाधीनता खोने का दुःख मानो अब भी उनके हृदय में बना है। मालूम होता है, इसी से करण शरमिन्दा होकर आपके दरबार में सर नहीं उठाता था।

नूरजहाँ ने बहुत ठीक कहा। अमरसिंह प्रतापसिंह के बेटे ही तो थे। वे अधीनता का दुःख नहीं सह सके। सुलतान खुर्रम जब उन्हें बादशाह का फ़र्मान देने आये तब अमरसिंह ने लेने से इनकार किया। शाहज़ादा मानसिंह के भानजे थे। मातृकुल उनका राजपूत था। वे राजपूतों का उचित सम्मान करना जानते थे। उन्होंने अमरसिंह से कहला भेजा,—महाराना से हम केवल मित्रता का भाव रखना चाहते हैं, और कुछ नहीं चाहते। महाराना अपनी राजधानी से बाहर आकर सिर्फ़ बादशाह का यह फ़रमान ले लें। हम मेवाड़-प्रदेश से इसी दम समस्त मुसलमान-सेना को हटाये लेते हैं।

पराजित राजा का कोई ऐसा सम्मान नहीं करता। तथापि अमरसिंह, यह सोच कर कि अब हमें बादशाह की रज़ामन्दी से देश-शासन करना होगा, फ़रमान लेने के हेतु शाहज़ादा के पास न गये।

अमरसिंह ने अपने प्रधान प्रधान योद्धाओं को राज-दरबार में बुलाया। चौहान, राठौड़, झाला, पवाँर और सिसोदिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

SPS
891.433 J 46 R
6434
Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जपूत राज-सभा में उपस्थित हुए। तेजसिंह भी वहाँ उपस्थित थे। उनकी अवस्था उस समय पचास वर्ष से कुछ ऊपर हो गई थी, किन्तु शरीर पूर्ववत् बलिष्ठ और तेजस्वी था। उनके पास उनके पुत्र गजपतिसिंह* बैठे थे। ये भी अपने पिता-पितामह के समान बलवान् और युद्ध-कुशल थे।

चोबदार ने आकर निवेदन किया,—"राजधानी के सदर फाटक पर सुलतान खुर्रम उपस्थित हैं, महाराना को फ़रमान देकर वे दिल्ली लौट जायँगे।" दरबार में जितने लोग थे सभी चुपचाप बैठे रहे। महाराना अमरसिंह ने बहुत देर पीछे समस्त राजपूत योद्धाओं के सम्मुख युवराज करुण को राजतिलक देकर कहा—अमरसिंह ने पिता के निकट जो प्रतिज्ञा की थी उसका यथा-साध्य इतने दिन तक पालन किया। अब अधीनता स्वीकार करके हम राज्य करना नहीं चाहते। युवराज आज से राजा हुए। अब यही नीतिपूर्वक प्रजा का पालन करें, इसी में शोभा है। हम अब बूढ़े हुए। हमने आज से वानप्रस्थ आश्रम का अवलम्बन किया।

अमरसिंह उसी दिन (१६१६ई०) से राजधानी उदयपुर को त्याग कर नचौकी नामक स्थान में कुटी बना कर रहने लगे। वानप्रस्थ धारण करने के अनन्तर वे पाँच वर्ष तक और इस संसार के पाहुने रहे। जब तक वे जीवित रहे उन्होंने फिर कभी राजधानी में पाँव नहीं रक्खा और न राज्यसम्बन्धी कोई काम किया।

॥ समाप्त ॥

---

* जो गजपतिसिंह का वृत्तान्त जानना चाहें वे 'माधवी-कङ्कण' पढ़ें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE